

मानवी



अप्रैल — जून 2025
त्रैमासिक साहित्यिक ई पत्रिका

कविता सिंह

अहमदाबाद



ये कौन
आसमान में पछीट रहा कपड़े..

किसने
खुले छोड़ दिये हैं नल..

किसका
जलपात्र भरकर बह रहा है..

ईश्वर !
ये तुम हो..??

ओह !
पूरे अगस्त...

मेरी आत्मा के वस्त्र सूखेंगे नहीं.. ।

कविता





त्रैमासिक ई पत्रिका
वर्ष- 5 ,अंक - 2 (अप्रैल—जून 2025)

प्रधान सम्पादक - कविता सिंह

सम्पादक—राजेश कुमार सिंह

आवरण -चित्र -तेजस सिंह

ई मेल : manvipatrika@gmail.com

Website : <http://www.manvipatrika.co.in/>

संरक्षक

श्रीमती जानकी किशोरी देवी एवं

श्री राम चन्द्र सिंह

पता -कार्यकारी -बी -701 ,स्वाति फ्लोरेस , निकट सोबो सेंटर ,साउथ बोपल ,अहमदाबाद -380058

स्थायी - 274/x ,शक्ति नगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

मोब -9833775798

मानवी पत्रिका में प्रकाशित लेख /काव्य आदि रचनकारों के अपने विचार हैं ,जिनसे प्रकाशक/ संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गोरखपुर रहेगा। रचना की मौलिकता का दायित्व रचनाकार का है पत्रिका से जुड़े सभी पद अवैतनिक हैं।

पत्रिका प्रधान संपादक कविता सिंह जी के स्वामित्व में आन-लाइन प्रकाशित होती है। पत्रिका के वेबसाइट से सभी अंकों का पीडीएफ डाउनलोड किया जा सकता है।

पत्रिका निःशुल्क है , पत्रिका का उद्देश्य हिन्दी साहित्य की सेवा है।

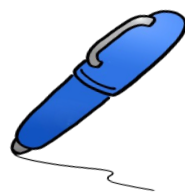
पत्रिका आप सभी मित्रों से रचनात्मक सहयोग के अलावा अर्थ-सहयोग का भी निवेदन करती है, यह स्वैच्छिक है आप पेटिएम नं - 9833775798 पर स्वेच्छा से यथासंभव धनराशि सहयोग के रूप में अंतरित कर सकते हैं।



इस अंक में

कुछ मेरी भी	संपादक	5	लघुकथा		
काव्य धरोहर					
जब वर्षा	केदारनाथ सिंह	7	बदलती परिभाषा	चन्द्रकला जैन	11
उठ किसान	त्रिलोचन	7	अपने घर, साख जीवन का	शेफालिका सिन्हा	22
लेख/संस्मरण/आलेख			विस्थापित होने का दर्द	रमेश कुमार संतोष	25
महुआ डबर- गैर चिरागी	कादंबरी मेहरा	8	रील	राम मूरत 'राही'	38
चिताएँ			हाशिए पर	डॉ. दलजीत कौर	47
सामाजिक क्रांति के अग्रदूत	भूपसिंह भारती	12	छोटी डील	डा. मीना बैस रघुवंशी	56
थे : महामना जोतिबा फुले			काव्य/हाइकु /गजल		
कवि रमाकांत रथ-एक युग का	अनिमादास	14	शीत में सरसों	कविता सिंह	2
अवसान			गज़ल	कैलाश मनहर	18
समझो द्वारे पर है बसन्त	गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'	19	गज़ल	डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री	27
सिमरिया के दिनकर: राष्ट्रकवि	राजेश कुमार सिन्हा	20	एक प्रश्न	वृज राज किशोर 'राहगीर'	32
की वाणी में ग्राम्य जीवन के			फिर आया ऋतुराज प्रिये	अनुराग मिश्र गैर	42
स्वर			अभिलाषा	सतीश कुमार नारनौंद	42
प्रेम और स्त्री मनोविज्ञान: एक	डाक्टर वर्षा महेश गरिमा	26	गज़ल	प्रवीण पारीक 'अंशु'	57
गहरा संबंध			गज़ल	नवीन माथुर पंचोली	58
आधुनिक काल के जगमगाते	दुर्गेश मोहन	31	काव्य	डॉ. संध्या शुक्ल 'मृदुल'	59
साहित्यकार: सूर्यकांत त्रिपाठी			काव्य	रेखा कापसे 'कुमुद'	59
निराला			सानेट	प्रॉ.विनीत मोहन औदित्य	60
हास्य/व्यंग्य			काव्य	अनिल कुमार मिश्र	60
देहाती कहीं के	दिलीप कुमार	23	गज़ल	वृज राज किशोर 'राहगीर'	60
यात्रा वृतांत			काव्य	डॉ. मीरा सिंह 'मीरा'	65
लक्षद्वीप की सुरम्य यात्रा	गोवर्धन यादव	28	पुस्तक समीक्षा		
कहानी			अल्फाज़ का सफ़र :संबंध,	डॉ.ज़ियाउर रहमान जाफ़री	61
छत की बालकनी से	अमित कुमार मल्ल	33	सियासत और समाज से उपजी		
मेरी जमानत कब होगी ?	महेश शर्मा	39	गज़लें		
खेतिहर	नीरजा हेमेन्द्र	43	वैयक्तिक अनुभव का संसार	कनक किशोर	62
दुल्हन बेगम	वाजिद हुसैन सिद्दीक्री	48	एवं सामूहिक हित की पुकार :		
आखिरी दम	श्यामल बिहारी महतो	50	कांटक की 'आईना हूँ '		
मुंहबोली बिटिया	डॉ. सतीश "बब्बा"	54			

कुछ मेरी भी....



साहित्य और बाजार

जाहिर है जब हर तरफ बाजार का ही वर्चस्व है तो साहित्य भी इससे अछूता कैसे रह सकता है, बाजार ने लोगों के बेडरूम और टॉइलेट तक में ताका-झाँकी की है। आपको क्या कहना है, क्या पहनना है, कैसे चलना है, कैसे बोलना है, ये सब अब बाजार तय करने लगा है। बाजार ने तेजी से पैर पसारते हुए न केवल आपकी वस्तुओं को प्रभावित किया है बल्कि आपकी मानसिकता को भी बदल दिया है। लोग अब हर कार्य की उपादेयता पैसे से करने लगे हैं। पैसा ही अब हर कार्य की सफलता मापने का बैरोमीटर बन गया है। साहित्य हमेशा कला, भावनाओं और सम्बेदनाओं का विषय रहा है। पर आज के युग ने उसे भी बाजार में धकेल दिया है। लेखक / कवि साहित्यकार लोकप्रियता के लिए बाजार का सहारा ले रहे हैं। घटनाओं को विवादास्पद बनाया जा रहा है। हाल में ही पटना में नई धारा द्वारा प्रायोजित लेखकों के लिए साहित्यिक निवास कार्यक्रम में बड़े लेखक द्वारा लेखिका के संग छेड़छाड़ मामले ने साहित्य में आई गिरावट को सतह पर ला दिया है, हालांकि इस तरह की यह पहली घटना नहीं है, मेरी समझ से तो यह पूरा आयोजन ही बाजार को आकर्षित करने का घटिया प्रयास और माध्यम प्रतीत होता है। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए साहित्य में लोग सेक्शुअल ऐक्ट का सहारा लेने लगे हैं। अरे भाई अगर छेड़छाड़ हुई है, तो ये बहस से ज्यादा पुलिस में कॉम्प्लेन का मुद्दा है। पोलीस में FIR होनी चाहिए। अपराधी को जेल के अंदर होना चाहिए। अपराधी को न्यायोचित सजा मिलनी चाहिए। माफीनामा इसका समाधान कैसे हो सकता है। सिर्फ माफीनामा मांगना ही इस पूरी घटना को आयोजन में तब्दील कर देता है। एक लड़की की अस्मृत को लेकर सोशल मीडिया पर तमाम बहस कुछ की पक्ष में कुछ की विपक्ष में जारी है। सोशल मीडिया पर ज्ञानी लोगों की बहस कुछ दिन चलती रहेगी, फिर सब कुछ भुला दिया जाएगा।

कभी कभी लगता है कि जो इस घटना में शामिल थे, वो हमसे आपसे ज्यादा ज्ञानवान हैं, उन्होंने अपना काम किया और आगे बढ़ लिए, और हम लोग सोशल मीडिया पर पक्ष और विपक्ष में बहस करके उनकी मदद ही कर रहे हैं। अब सच्चाई जो भी हो, मैं तो इतना ही कहूँगा कि ईश्वर इस तरह की घटना से सस्ती लोकप्रियता पाने वालों को और सोशल मीडिया पर तथाकथित ज्ञानचंदों को ईश्वर सदबुद्धि दें।

भारतीय लेखिका, वकील और एक्टिविस्ट बानू मुश्ताक को लघु कथा संकलन 'हार्ट लैंप' के लिए अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिलने पर बहुत बहुत बधाई। मूलरूप से यह किताब कन्नड भाषा में लिखी गई है। कन्नड भाषा में लिखी गई यह पहली किताब है, जिसे यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल हुआ है। इससे पहले साल 2022 में गीतांजलि श्री की पुस्तक 'टूम्ब ऑफ़ सैंड' को ये पुरस्कार मिला था। बीबीसी इंटरव्यू में बानू मुश्ताक बताती है, उन्होंने भी वो सब दुश्चारियाँ पाबंदियाँ झेली हैं, जो एक भारतीय, एक मुस्लिम और एक महिला की पहचान के तहत सामने आते हैं।

इधर फिर से मराठी बनाम हिन्दी या ये कहें क्षेत्रीय / स्थानीय भाषा बनाम हिन्दी भाषा का मुद्दा गरमाने लगा है। मुंबई के एक लोकल ट्रेन में एक मराठी महिला कह रही है-“हमारे मुंबई में रहना है तो मराठी बोलो नहीं तो निकलो” “महाराष्ट्र में मराठी बनाम अन्य भाषा एक संवेदनशील एवं राजनैतिक मुद्दा है। राजनैतिक पार्टियाँ इस मुद्दे को बार बार उठाकर माहौल को संजीदा बनाती रहती हैं। आज के समय में जब क्रॉस बॉर्डर ट्रेड हो रहा है, देशों की सीमाएँ सांस्कृतिक, व्यापारिक उन्नति और विकास के लिए मैने नहीं रखती हैं, वैसे समय में भाषाओं का विवाद संकीर्ण मानसिकता से ज्यादा कुछ नहीं है। यह भाषा के तबे पर राजनैतिक रोटी सेंकने का असफल प्रयास है। सरकार को इसे संज्ञान में लेते हुए राष्ट्रीय भाषा और क्षेत्रीय भाषा को लेकर उसकी ग्राह्यता एवं स्वीकार्यता को लेकर ठोस नीति बनाने की आवश्यकता है। संसद में इस पर बहस होनी चाहिए, हर बार भाषा के नाम पर बिहार और यूपी वालों को मारना पीटना अभद्रता करना कहाँ तक जायज है। इस बात को समझने की जरूरत है कि भाषा सिर्फ विचारों, भावों आदि के सम्प्रेषण का माध्यम है, और अगर विकसित भारत का सपना पूरा करना है तो इस संकीर्ण क्षेत्रीयता से ऊपर सोचना पड़ेगा। जहाँ सर देश आगे बढ़ने की बातें कर रहा है वही इस तरह की घटनाएँ, विचार मन को ठेस पहुंचाती हैं और विकसित भारत की धारणा पर

प्रश्नचिन्ह लगाती है।

सलमान रुश्दी की विवादित पुस्तक 'द सैटेनिक वर्सेज' फिर से चर्चा में है। चर्चा में इसलिए है कि दिल्ली के एक बुकस्टोर 'बाहरीसंस बुकसेलर्स' बुकस्टोर ने अपने एक्स हैंडल पर लिखा, "सलमान रुश्दी का चर्चित उपन्यास 'द सैटेनिक वर्सेज' अब बाहरीसंस बुकसेलर्स पर उपलब्ध है!" बाहरीसंस बुकसेलर्स बुकस्टोर ने सलमान रुश्दी को टैग करते हुए लिखा, "भाषा है हिम्मत: एक विचार को सोचने, उसे कहने, और कहकर उसे सच बनाने की ताकत."

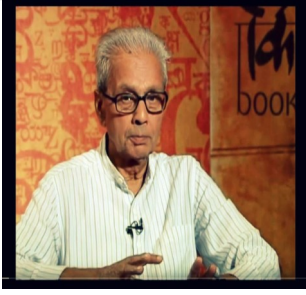
यह पुस्तक सितंबर 1988 में प्रकाशित हुई थी। दुनियाभर के मुसलमानों ने इसे ईशनिंदा मानते हुए इसके खिलाफ व्यापक प्रदर्शन किए। तमाम देशों ने इस पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया। भारत में भी उस वक्त की राजीव गांधी सरकार ने उपन्यास के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया। 1989 में जब ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह ख़मेनई ने रुश्दी की हत्या का आह्वान किया था तब दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्लाह बुखारी ने भी उनका समर्थन किया था और रुश्दी की हत्या का आह्वान कर दिया था।

झारखंड की आदिवासी कवयित्री पार्वती तिकी को साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार- 2025 (युवा-पुरस्कार) मिलने पे बहुत बहुत बधाई। यह पुरस्कार उन्हें हिंदी कविता श्रेणी में उनके काव्य संग्रह 'फिर उगना' के लिए दिया गया है। यह लगभग 67 कविताओं का संग्रह है। जिनके विषय हैं आदिवासी संस्कृति, वन, पानी, पहाड़, बाघ, पक्षी, प्राकृतिक तत्व आदि।

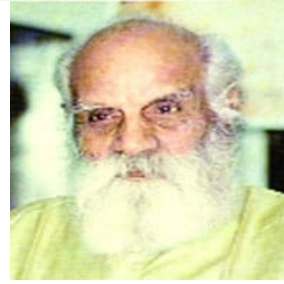
गत माह पड़ने वाले त्योहारों यथा रथयात्रा, मुहर्रम एवं बकरीद की सभी को बधाई। प्रस्तुत अंक निकालने में हुई देरी के लिए क्षमा का अभिलाषी हूँ।

आपका
शुभेच्छ

21 जून 2025



काव्य धरोहर



केदारनाथ सिंह

जब वर्षा शुरू होती है
कबूतर उड़ना बंद कर देते हैं

गली कुछ दूर तक भागती हुई जाती है
और फिर लौट आती है

मवेशी भूल जाते हैं चरने की दिशा
और सिर्फ रक्षा करते हैं उस धीमी गुनगुनाहट की

जो पत्तियों से गिरती है
सिप् सिप् सिप् सिप्...

जब वर्षा शुरू होती है
एक बहुत पुरानी-सी खनिज गंध

सार्वजनिक भवनों से निकलती है
और सारे शहर पर छा जाती है

जब वर्षा शुरू होती है
तब कहीं कुछ नहीं होता

सिवा वर्षा के
आदमी और पेड़

जहाँ पर खड़े थे वहीं पर खड़े रहते हैं
सिर्फ पृथ्वी घूम जाती है उस आशय की ओर
जिधर पानी के गिरने की क्रिया का रुख होता है।

त्रिलोचन

उठ किसान ओ, उठ किसान ओ,
बादल घिर आए हैं

तेरे हरे-भरे सावन के
साथी ये आए हैं

आसमान भर गया देख तो
इधर देख तो, उधर देख तो

नाच रहे हैं उमड़-धुमड़ कर
काले बादल तनिक देख तो

तेरे प्राणों में भरने को
नए राग लाए हैं

यह संदेशा लेकर आई
सरस मधुर, शीतल पुरवाई

तेरे लिए, अकेले तेरे
लिए, कहाँ से चल कर आई

फिर वे परदेसी पाहुन, सुन,
तेरे घर आए हैं

उड़ने वाले काले जलधर
नाच-नाच कर गरज-गरज कर

ओढ़ फुहारों की सित चादर
देख उतरते हैं धरती पर

छिपे खेत में, आँखमिचौनी
सी करते आए हैं

हरा खेत जब लहराएगा
हरी पताका फहराएगा

छिपा हुआ बादल तब उसमें
रूप बदल कर मुसकाएगा

तेरे सपनों के ये मीठे
गीत आज छाए हैं

महुआ डबर- गैर चिरागी चिताएँ



कादंबरी मेहरा

प्रवासी साहित्यकार, विवाहोपरांत लंदन में निवास, मूलतः लखनऊ से है। लंदन में मुख्य धारा में लगभग 30 वर्षों तक अध्यापन, 12 पुस्तकें प्रकाशित जिनमें दो १. चाय की विश्वयात्रा और २. भारत के मूक प्रवासी ऐतिहासिक महत्व की हैं।

प्रस्तुत आलेख कादंबरी जी के तीसरे ऐतिहासिक / सांस्कृतिक आलेख संग्रह का हिस्सा होगी।

ईमेल : kadamehra@googlemail.com

नहीं यह कोई अर्थहीन शब्द नहीं हैं। यह एक स्थान विशेष का नाम है जो भारत के इतिहास का साक्षी है। परंतु जिसका साक्ष्य नहीं छोड़ा गया।

कहते हैं जलियां वाला बाग में जब मासूम नागरिकों का पूर्ण संहार हुआ तो यह खबर पूरी तरह दबा दी गयी और देश के कर्णधारों तक पहुँचाने में छह महीने लग गए। मगर 'महुआ डबर' के नरसंहार की खबर किसी किसी को शायद ही पता हो, वह भी पिछले तीस वर्षों से ---- दुर्घटना के पूरे डेढ़ सौ साल के बाद।

पाप छुपता नहीं है। कहीं न कहीं कोई निर्दोष आत्मा भटकती रहती है अपनी कहानी सुनाने के लिए।

श्री मुहम्मद लतीफ़ अंसारी मुंबई में रहनेवाले एक कपड़े के व्यापारी हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिला के एक गाँव बहादुरपुर में सं १९४५ में हुआ था। इनके पिता का नाम मुहम्मद अली अंसारी था और इनकी माँ बशीरुन्निसा वहीं उनके अपने गाँव बहादुरपुर की लड़की थीं। मुहम्मद अली रोजी की तलाश में रंगून चले गए मगर कुछ वर्षों के बाद बम्बई आ गए और एक ढाबा खोल लिया। बशीरुन्निसा भी अपने पुत्र मुहम्मद लतीफ़ को लेकर वहीं आ गयीं। दसवीं तक शिक्षा लेने बाद मुहम्मद लतीफ़ ने दरजी का काम सीखा और अपना खुद का कारोबार शुरू कर लिया। १९ वर्ष की अवस्था में उनकी शादी माँ बाप ने अपने ही गाँव बहादुरपुर की एक लड़की से तय कर दी। अतः वह घाघरा के किनारे बसे हुए गाँव बहादुरपुर गए। रास्ते में वह एक सुनसान स्थान से गुजरे जहाँ एक जली हुई मस्जिद के खण्डर अभी भी विद्यमान थे। लतीफ़ के चाचा मुहम्मद रज़्ज़ाक ने बताया की यहाँ एक जुलाहों का गाँव हुआ करता था जिसे अंग्रेजों ने समूल जला कर खाक में मिला दिया। लतीफ़ के मन में यह कहानी एक फांस बन कर बैठ गयी। उसको यह तो पता था की उसके पुरखे भी जुलाहे थे और बंगाल से आये थे। मुहम्मद अब्दुल लतीफ़ इस जगह के इतिहास को जानने के लिए उत्सुक हो गए।

करीब तीस वर्ष और बीत गए। लतीफ़ ने अपने दूसरे पुत्र के लिए बहादुरपुर से ही लड़की लाने का निश्चय किया। साथ ही उसके मन में हमेशा एक बेचैन करनेवाला अहसास घुमड़ता रहता था उस टूटी हुई मस्जिद और उजड़े हुए गाँव को लेकर। वह केवल दसवीं कक्षा तक पढ़े थे और इतिहास के विषय में बहुत कम जानते थे। उन्होंने अनेक दिल हिला देने वाली कहानियाँ अपने बाप और चाचा से सुनी थीं परन्तु इनका कोई साक्ष्य नहीं था। यह केवल किंवदंतियाँ थीं जो एक मुंह से दूसरे तक जाते जाते बदल जाती थीं।

पता चला कि यहां महुआ डबर नाम का एक गाँव था जिसको सं १८५७ के ग़दर में जला डाला गया था। और उसके सारे निशान मिटा डाले थे। उसका सरकारी दस्तावेज़ों से नाम और पंजीकरण संख्या भी मिटाकर वहां से करीब ५० मील दूर एक छोटे से कसबे को महुआ डबर नाम से पंजीकृत कर दिया था।

लतीफ़ ने इस कथा की पूरी खोज की और अपने पूर्वजों की असली कहानी को उजागर किया जो भारत के इतिहास का एक अत्यंत दारुण अध्याय है। मोहम्मद लतीफ़ बस्ती डिस्ट्रिक्ट के जिलाधीश आर एन त्रिपाठी से जाकर मुलाकात की। त्रिपाठी जी ने बहुत सहृदयता दिखाई और इस विषय पर खोज करने के लिये लखनऊ विश्वविद्यालय के इतिहासकारों की एक कार्यकारिणी स्थापित की। इन लोगों ने १३ वर्ष के शोध के बाद आखिरकार सं १८२३ का एक मानचित्र उत्तरप्रदेश का निकाला, जिसमें महुआ डबर की सही सही स्थिति चिह्नित थी। सं १८५७ के बाद अंग्रेजों द्वारा बनाये गए नक्शों में महुआ डबर को महज़ एक खेत बताया गया था।

सं २०११ में श्री जगदम्बिका पाल, जो लोकसभा के सदस्य थे, के नेतृत्व में इस स्थान को राष्ट्रीय पहचान दी गयी और इस पर एक चिन्ह पट लगाया गया जिसपर राष्ट्र ध्वज पहरा कर महुआ डबर के अमर स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया गया। अंग्रेजों ने उनको बागी और विद्रोही बताकर फांसी पर चढ़ा दिया था। उनके शहर को, जिसकी जनसँख्या ५००० थी, पहले बुरी तरह लूटा और बर्बाद किया फिर चारों तरफ से घेरकर जला डाला था। कहते हैं तीन हफ्ते तक यह आग जलती रही थी और कोई भी बचकर भाग नहीं पाया था। बाद में अंग्रेजों ने इस समूचे इलाके को " ग़ैर चिरागी " घोषित कर दिया यानि वहां कोई रिहाइशी घर नहीं बन सकेगा न ही कोई मृतकों के नाम का दिया जलाएगा। इस घेराव से पहले ही दो चार लोग भाग निकले थे जिनमें मुहम्मद लतीफ़ के पड़दादा भी थे। और जैसा कि अनेकों बार हुआ है कोई भटकी हुई आत्मा अन्याय की कहानी कहने के लिए ज़िंदा हो उठती है। उनको इस कहानी की सच्चाई उजागर करने में पूरे १४ वर्ष लगे।

तो क्या थी यह सच्चाई जो डेढ़ सौ सालों तक अज्ञान के अंधेरों में सोई रही ?

बात अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड की है। यूरोप के जांबाज़ों ने गरीबी और बीमारी से तंग आकर विद्रोह कर दिया। जो अपार धन उपनिवेशों से आ रहा था वह अंग्रेज अब अपने देश को नहीं भेजते थे। वहीं अन्य देशों में नए नए नगर अपने नाम से बनाकर स्वयं राजा बने बैठे थे। इंग्लैंड का पैसा इंग्लैंड के युवाओं को नहीं लग रहा था। उनमें असंतोष था जो औद्योगिक क्रांति के रूप में फूटा। अंग्रेज अन्य देशों की उपज, और उद्योगों पर हर सही ग़लत तरीके से अपना एकाधिकार कायम कर लेते थे।

भारत का केवल एक राजा नहीं था। अनेक समृद्ध राज्य थे जो एक दूसरे से नदियों, जंगलों आदि से कटे हुए थे। बाद के मुगल शासक कमजोर और ऐय्याश थे। अतः अंग्रेजों के लिए भारत की आर्थिक और सांस्कृतिक सम्पदा को नष्ट करना बहुत आसान था।

शक्कर, चाय, नील, कपास, औषधियाँ, पुरानी मज़बूत टीक और सागवान की लकड़ी एवं सुगन्धित वनस्पतियों और धातुओं पर इन लोगों ने बड़ी मात्रा में कब्जा कर लिया था। जनता के प्रयोग से अधिक उत्पादित शक्कर शराब बनाने के काम आ रही थी। इसको वह भारत में ही बेचना चाहते थे, अतः व्यापार भी अपने हाथ में कर लिया था। शक्कर की खंडसारें बंद कर दी थीं। और शराब की मिलें लगा दी थीं।

इसी तरह कपास की उपज, यह सारी की सारी खरीद कर इंग्लैंड की मिलों में भेज देते थे। हमारे धन से यह यूरोप में मशीनें बना रहे थे। कारखाने लगा रहे थे, ताकि उनके अपने देश में सबको रोजगार मिले। सूत कातने की एक नई मशीन बनाई जो एक हज़ार घिरनियाँ व रीले एक साथ चला सकती थी। इस मशीन के आ जाने से सूती कपड़े की भरमार हो गयी। अंग्रेजों को यह कपड़ा भारत में बेचना था अतः उन्होंने जुलाहों को तंग करना शुरू किया। वह लोग निरीह शांतिप्रिय लोग थे। बाज़ार में सस्ता माल आ जाने से उनकी रोजी पर बुरा असर पड़ने लगा फिर भी वह लोग सर झुका कर सहते रहे। मध्य एशिया के गरम देशों में अभी भी उनके महीन मुलायम कपड़े की मांग थी। अंग्रेजों ने नृशंसता से उनके गाँव और घर उजाड़ दिए। बुनकरों के हाथ और अंगूठे काट दिए। अतः वह लोग जान बचा कर भागे। पूर्वी बंगाल में अफ़ग़ान जाति के मुसलमान रहते थे। यह लोग मेहनती और ईमानदार थे। प्लासी की लड़ाई के बाद बंगाल का मुगल शासक अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बन गया था। वह जुलाहों को अंग्रेजों की बेहद लोभी, चूसक नीतियों से बचा नहीं सका। जब उनपर ईस्ट इण्डिया कंपनी के कारिंदों ने अमानुषिक अत्याचार किये तो वह लोग जान बचाकर अवध और अन्य प्रदेशों की तरफ भागे

बीस परिवारों का एक काफिला सन १८३० के लगभग अवध के नवाब की शरण में आया। नवाब ने उनको घाघरा नदी के किनारे एक बेहद छोटे से गाँव में बसा दिया। यह तराई का क्षेत्र था और यहां चावल की खेती होती थी। इन परिवारों में कटे हुए हाथों वाले कई लोग थे। मगर अपनी मेहनत से उन्होंने जल्दी ही इसको एक समृद्ध कस्बा बना दिया जिसमें ५००० की आबादी थी। शीघ्र ही यह एक औद्योगिक बस्ती में बदल गया। यह जगह महुआ डबर के नाम से प्रसिद्ध हुई। कारण यहां एक तलैया के चारों ओर महुआ के पेड़ थे। तलैया को स्थानीय भाषा में डबर कहते हैं।

सन १८५७ में भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम छिड़ गया। मेरठ की छावनी से शुरू हुआ तो ब्रिटिश सेना में काम करनेवाले सिपाहियों ने अंदर ही अंदर आज़ादी की मशाल पूरे उत्तर भारत में जला दी। जून महीने की आठ तारीख को फैजाबाद में भारतीय सेना ने विद्रोह कर दिया। उधर से अवध की सेना भी उनसे आ मिली। उन्होंने अंग्रेज अफसरों को पकड़कर जेल में डाल दिया। वह निहत्थे थे, इसलिए बहुत रोये गिड़गिड़ाए। अतः सिपाहियों ने उनको अपनी निगरानी में चार नावें देकर पानी के रास्ते पटना के पास दानापुर की छावनी में जाने को कहा। बाईस अफसर दानापुर के लिए रवाना हुए। अयोध्या के पास पहुंचकर यह लोग दो हिस्सों में बँट गए दो नावें वहीं पर रुक गई और दो आगे बढ़ गई। मगर बेगमगंज के पास इनको गाँव वालों ने पकड़ लिया। फैजाबाद का कमिश्नर, कर्नल गोल्डने, और मेजर मैथ्यूस मारे गए। बाकी अपनी जान बचाकर भागे मगर उनकी नावें छिछले में अटक गई। फिर भी वह भागते रहे। गांववालों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। जंग में कुछ जान बचाने के लिए नदी में कूद पड़े मगर डूब गए। चार अफसर एक गाँव में जा पहुँचे जहाँ उनको खाना दाना मिला यहीं उनके तीन अन्य साथी भी मिले। गांववालों ने अपने संरक्षकों के संग इनको नावें दीं और कैप्टनगंज की तरफ भेज दिया। यह सात अफसर महुआ डबर पहुँच गए। दो चार गांववालों ने उनको बस्ती की तरफ जाने से रोका क्योंकि वहाँ क्रांतिकारी पहुँच चुके थे। अतः खाना आदि खाने के बाद उनको खच्चरों पर बैठाकर गायघाट की ओर भगा दिया। यहाँ से वह नाव लेकर दानापुर जा सकते थे मगर महुआ डबर के लोग अपनी त्रासदी भूले नहीं थे। शहर के बाहर आते ही, मनोरमा नदी के किनारे, उनपर नगरवासियों ने हमला कर दिया। सात में से छः मारे गए। केवल सार्जेंट बुशर नामक व्यक्ति बच कर निकल गया। हमलावरों का नेता जाफर अली था जिसके पूर्वज मुर्शिदाबाद से आये थे। जफ़र अली भाग निकला और कभी पकड़ा नहीं गया।

अंग्रेजों के लिए यह एक अनोखी घटना थी। १८५७ की क्रांति सैनिक विद्रोह था, जिसमें राजाओं ने भी समर्थन किया और युद्ध हुआ। मगर इस घटना में अंग्रेजों के जानी दुश्मन गाँव वाले थे, अतः यह जन विद्रोह था। अंग्रेज समझ गए थे की यह जनक्रांति थी, जो एक सैलाब की तरह होती है। इस घटना ने पूरे उत्तर भारत में यह सन्देश भेज दिया था कि बिना गोले बारूद के, केवल लाठी डंडे और तलवार से अंग्रेजों को नाकाम किया जा सकता है। अंग्रेजों पर आस पास के ज़मींदारों ने भी शिकंजा कसना शुरू कर दिया। उनके द्वारा बंदी बनाये गए निरीह किसानों को जेलों से मुक्त कर दिया। बनारस से गोरखपुर तक अनेक तहसीलों में ब्रिटिश सेना के सिपाहियों ने बगावत कर रखी थी। इस संहार ने अंग्रेजों की साख मिटटी में मिला दी थी। वह लोग डरे बैठे थे और

और गोरखपुर के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के घर में छुपे बैठे थे।

इसी जगह से १५ किलोमीटर दूर बर्डपुर में एक अंग्रेज ज़मींदार को इंग्लैंड से शक्कर से शराब बनाने की मिल लगाने के लिए भेजा गया था। इसका नाम विलियम पेपे था। मिल तो चली चलाई नहीं मगर उसने एक विधवा ज़मींदारिन की नौकरी कर ली। वह नील की खेती करने लगा जिसको काला सोना कहा जाता था। शक्कर पूरे विश्व में बनाई जा रही थी अतः उसका दाम बहुत कम रह गया था। अतः लाभान्श भी कम था। नील का व्यापार अधिक कमाई दे रहा था विश्व में और अंग्रेजों ने इस पर भी अपना एकाधिकार कर लिया था। विलियम पेपे कुख्यात नृशंस ज़मींदार था और उसके पास घुड़सवारों का एक दस्ता था। फैजाबाद के सुपरिंटेंडेंट ने उसको रातों रात बस्ती जिले का डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बना दिया और उसे एक पूरी फ़ौज घुड़सवारों की दे दी महुआ डबर को सबक सिखाने के लिए। उसकी घुड़सवारों की फ़ौज ने नगर को चारों तरफ से घेर लिया। पहले लूटपाट की फिर आग लगा दी। तारीख थी ३ जुलाई १८५७। महुआ डबर हमेशा के लिए गारत हो गया। तीन हफ्ते तक नगर जलता रहा। धुआँ और चीखें मीलों दूर तक सुनाई देती रहीं मगर अंग्रेजों की नाकेबंदी से डरे अन्य गाँवों के नागरिक बचाने न आ सके। ग़दर के दिनों में जिन ज़मींदारों ने अंग्रेजों की खिलाफत की थी उनको भी मौत के घाट उतार दिया गया। कई लोगों को पेड़ों से फांसी देकर लटका दिया गया और वहीं टंगा रहने दिया ताकि अन्य लोग आँखें दिखाने की जुर्रत न करें।

कहने को तो यह नर संहार महुआ डबर को सबक सिखाने के लिए किया गया था मगर असलियत में यह अंग्रेजों की चाल थी भारत के व्यापार को नष्ट करने की। मुर्शिदाबाद से पंगु और प्रताड़ित जुलाहे यहाँ इस तराई के क्षेत्र में, जहाँ दलदल था और मच्छरों के कारण भयंकर मलेरिया था, जैसे तैसे शरण पा गए थे और उन्होंने इस स्थान को गोरखपुर इलाके का सबसे उन्नत नगर बना दिया था। तीन दशकों में ही यह कपड़ा बुनाई, रंगाई और छपाई का केंद्र बन गया था। धूर्त और लालची अंग्रेज इनसे जले भुने बैठे थे। उनकी नज़र इस ज़मीन पर भी थी जो बढ़िया चावल उगलती थी। इसलिए मौका मिलते ही उन्होंने इसे नेस्तनाबूद कर दिया। अब वह इंग्लैंड की मिलों का कपड़ा बेच सकते थे। महुआ डबर की राख पर हल चलवा दिए और भूमि को समतल करवा दिया। उस जगह एक चिन्ह पट लगवा दिया जिसपर लिखा था " " " गैर चिरागी " . इसका तात्पर्य यह था कि यहाँ कोई आवास या मज़ार या मस्जिद नहीं बनाई जा सकती। इस जगह पर केवल खेती की जा सकती थी जिससे अंग्रेजों को लगान की आमदनी होती।

इस जघन्य कृत्य के लिए विलियम पेपे को बर्डपुर के चारों तरफ ५० वर्ग मील तक की ज़मीन का मालिक

बना दिया गया और यह बर्डपुर एस्टेट कहलाने लगा। इसका मकान अभी तक मौजूद है।

सं १८५८ में अंग्रेजों ने पांच व्यक्तियों को इसी काण्ड के तहत १८ फरवरी को फांसी दे दी। इनके नाम थे गुलज़ार खान, निहाल खान, घीसा खान, और बदलू खान महुआ डबर से, और भैरोंपुर से गुलाम खान। चौकीदार रूदा खान का भी नाम है जिसने अंग्रेजों को बहकाकर फंसाया था बागियों के जाल में। शायद उसका यह इरादा नहीं था मगर चूँकि गांव वालों ने उनको मार डाला, उसको अपराधी मानकर फांसी दे दी।

अफ़सोस यह है कि इनमे से किसी का भी नाम २०१९ की डिक्शनरी ऑफ़ मार्टियर्स ऑफ़ इंडिया में नहीं दर्ज है।

मज़हर आज़ाद नामक बस्ती जिले के एक लेखक कहते हैं कि इस स्थान पर जाते ही एक अजीब किस्म का बेचैन करने वाला मौत का अहसास हवा में महसूस होता है। ऐसा लगता है कि हज़ारों दबी घुटी चीखें कानों में फुसफुसा रही हों। बाद में अपनी काली करतूत पर पर्दा डालने के लिए अंग्रेजों ने असली महुआ डबर से १५ मील दूर मनोरमा नदी के किनारे एक और छोटे से डबर को महुआ डबर का नाम देकर पंजीकृत कर दिया। मगर १८२३ का पुराना नक्शा असली स्थान की स्थिति सिद्ध करने के लिए काफी था।

लखनऊ विश्वविद्यालय की पुरातत्व विभाग की एक टीम ने इस स्थान की खुदाई करने का निर्णय लिया, परन्तु खोज बीन के बाद इस प्रस्ताव को बंद कर दिया। तीन चार सुरंगें अलग अलग जगहों पर खोदी गईं और उनमें घुसकर छान बीन की गयी तो जले हुए बर्तन भांडे, काठ किवाड़, जली हुई मानव अस्थियां आदि निकलीं जिससे इस हत्याकांड की पुष्टि हुई। मानव संसाधन मंत्रालय के आदेश पर इस स्थान को ऐतिहासिक महत्व का घोषित करके वहां एक नाम पट्ट लगवा दिया गया है।

श्री मुहम्मद अब्दुल लतीफ़ अंसारी जी के १४ वर्षों के अथक प्रयास के कारण भारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय उजागर हो सका और एक खुशहाल उद्यमी समाज अपनी पहचान वापिस प्राप्त कर सका। श्री अंसारी को राष्ट्रपति अबुल कलाम जी द्वारा सम्मानित भी किया गया है।



लघुकथा



चंद्रकला जैन

बदलती परिभाषा

सास-बहू, दोनों एक ही धर्मस्थान पर जाती थी। बहू सारे धार्मिक अनुष्ठानों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती। लोग उसकी धार्मिक प्रवृत्ति-अनुष्ठानों के प्रति निष्ठा देखकर गदगद थे। पुण्य अर्जन में लगी बहू सारे व्रत-उपवास विधि-विधान से करती, भक्ति-भजन आदि, और भी बहुत कुछ! छः महीने से विधवा सास बिस्तर पर आ गई थी। बाथरूम में फिसली, कूल्हें का फ्रेक्चर हुआ, प्लास्टर चढ़ा, हिलना-डुलना तक बंद। सारे नित्यकर्म बिस्तर पर, नहलाना-धुलाना- खाना खिलाना-मल-मूत्र, सभी दूसरी बहू कर रही थी। वह सास की सेवा पूरे मन से करती। उसके गली-मुहल्ले वाले तो यही जानते थे, सास की सेवा करने वाली वह बहू इकलौती थी।

व्रत-उपवास-अनुष्ठान-व्याख्यान में जिस बहू के प्राण बसते थे वह बीमार सास को कभी देखने भी न आई। इंसानों के प्रति उसमें दया-माया कम ही थी। सास से उसकी कभी पटी न थी सो वह शुरू से ही पति-बच्चों के साथ दूसरी कॉलोनी में रहती थी।

दूसरी बहू ने धार्मिक स्थल की तरफ कभी मुंह भी न किया था, न कभी व्रत-उपवास, न प्रवचनों में कभी सास के साथ नज़र आई थी। सो धर्मस्थल के लोग तो व्रत-उपवास-अनुष्ठान करनेवाली एकमात्र बहू को ही जानते थे। पहली बहू धर्म-ध्यान में बाहवाही लूटती रही, दूसरी बहू सास की तन मन से सेवा कर इंसानियत का धर्म निभाती रही।

सास की मृत्यु पर दोनों बहूएँ साथ दिखी तो धर्म-स्थल और गली-मुहल्ले के लोगों को पता चला, वास्तव में उनकी एक नहीं दो बहूएँ हैं। आजकल गली-मुहल्ले और धर्मस्थल के लोग धर्म की परिभाषा नये सिरे से गढ़ने की कोशिश कर रहे हैं!



सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे : महामना जोतिबा फुले

महामना जोतिबा फुले भारत के महान हस्ताक्षरों में से एक हैं। ये एक महान समाज सुधारक, कवि, लेखक, विचारक, समाज सेवी, क्रान्तिकारी दार्शनिक और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। सरल शब्दों में कहें तो ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

जन्म, प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

जोतीराव गोविंदराव फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 में ब्रिटिश भारत की बॉम्बे प्रेसीडेंसी के खानवाड़ी, पुणे में हुआ था, जो कि वर्तमान में पश्चिमी महाराष्ट्र में है। इनकी मां का नाम चिमनाबाई और इनके पिता का नाम गोविंदराव था। इनके जन्म के कुछ समय बाद ही इनकी मां का देहांत हो गया था, इसलिए इनके पालन पोषण के लिए सगुणाबाई नामक एक आया को रखा गया। इनका परिवार कई पीढ़ी पहले सतारा से यहां पुणे आकर बसा था। पुणे में इनके परिवार ने फूलों से गजरा व माला इत्यादि बनाने का काम शुरू किया। फूलों का काम करने के कारण ही ये 'फुले' के नाम से जाने गए। बालक जोतीराव ने शुरू में मराठी भाषा में शिक्षा प्राप्त की। परन्तु बाद में जाति भेद के कारण बीच में ही इनकी पढ़ाई छूट गयी। बाद में 21 वर्ष की अवस्था में इन्होंने अंग्रेजी भाषा में मात्र 7 वीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की।

वैवाहिक जीवन

तेरह वर्षीय जोतीराव का विवाह सन 1840 में मात्र नौ वर्षीय सावित्रीबाई फुले से हुआ, जो बाद में भारत की प्रथम महिला शिक्षिका के रूप में जानी गई। भारत में स्त्री शिक्षा और दलितों को शिक्षा का अधिकार दिलाने के अपने उद्देश्य में दोनों पति-पत्नी ने विषम

परिस्थितियों का सामना करते हुए एक साथ मिलकर कार्य किया।

स्कूल की स्थापना

भाई सभका खोलगे, जोतीबा शिक्षा द्वारा।
नारी सूदर को दिया, पढ़णे का अधिकार।।
पढ़णे का अधिकार, पहलम पहले दिलाया।
गुलामगिरी किताब, लिखकै समाज जगाया।।
सत्यसोधक समाज, साचली राह दिखाई।
करती शत-शत नमन, फुले ने दुनिया भाई।।



महामना जोतिबा फुले ने अपने अध्ययन और अनुभव से ज्ञान हुआ कि आज जो शूद्रों और अछूतों के साथ जो भेदभाव और अन्याय हो रहा है वो केवल और केवल अशिक्षा के कारण हुआ है। शूद्रों अछूतों और नारियों को सदियों से शिक्षा से हीन करके इन्हें दीन दरिद्र बनाया गया। महामना जोतिबा फुले की ये पंक्तियां यहां प्रस्तुत हैं

"विद्या बिना मति गयी,
मति बिना नीति गयी,
नीति बिना गति गयी,
गति बिना वित्त गया,
वित्त बिना शूद गये,
इतने अनर्थ,
एक अविद्या ने किये।"

अतः जोतिबा फुले ने शिक्षा के क्षेत्र में कुछ करने के उद्देश्य से सबसे पहले अपनी पत्नी को पढ़ाया और सन् 1848 ई० में एक स्कूल खोला, जिसकी प्रधान शिक्षिका अपनी पत्नी को बनाया। भारत में सभी के लिए शिक्षा और मुख्य तौर पर स्त्री शिक्षा और उनकी दशा सुधारने के क्षेत्र में यह पहला कदम था। उनके इस कार्य में कुछ उच्च वर्ग के

पितृसत्तात्मक विचारधारावादियों ने उनके कार्य में बाधा डालने की कोशिश की। जब सावित्री बाई फुले पढ़ाने के लिए जाती थी तब ये लोग उनपर कीचड़, गोबर भेंकते थे और उनपर पत्थर भी मारते थे। सावित्रीबाई फुले ने इनका विरोध डटकर किया और अपने साथ अपने बैग में एक साड़ी और रखती थी, ताकि उसे बदलकर बच्चियों को पढ़ा सके। सनातनी लोगों के जबर्दस्त विरोध के बावजूद भी जोतिबा फुले जब अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए नहीं रुके तो इन सनातनियों द्वारा उनके पिता पर दबाव डालकर इन्हें पत्नी सहित घर से निकलवा दिया। इससे कुछ समय के लिए उनके कार्य व जीवन में बाधा तो जरूर आयी। परन्तु शीघ्र ही वे फिर अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर हुए और उन्होंने शिक्षा की जोत जलाने के लिए देश में कई स्कूलों की स्थापना की।

दीप जळाया ज्ञान का, करणे खूब उजास।
पढकै सभ आगै बढो, याही राही खास।।
याही राही खास, आस सभ करदे पूरी।
अनपढता का रोग, मिटाणा घणा जरूरी।।
पढाण सभ नर नार, स्कूल न्यारा खुलवाया।
फुले जोतिबा खूब, ज्ञान का दीप जळाया।।

सामाजिक कार्य

इन्होंने दलितों व महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। ये समाज में आपसी भेदभाव और छुवाछूत को समाप्त करके समानता लाना चाहते थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्होंने 24 सितंबर 1873 ई० को महाराष्ट्र में "सत्यशोधक समाज" की स्थापना की। शिक्षा उन्नति का अहम सोपान है। इसलिए इन्होंने समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा प्रदान किये जाने की पैरवी की। फुले भारतीय समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे। इन्होंने समाज के जाति आधारित विभाजन का सदैव विरोध किया। सत्य शोधक समाज ने भी शिक्षा के महत्व पर जोर दिया और लोगों को ब्राह्मण पुजारियों के बिना ही शादियाँ आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया। फुले ने स्पष्ट किया कि सत्यशोधक समाज में शामिल होने के लिए सबका स्वागत है, चाहे वह किसी भी सामाजिक वर्ग का हो। फुले का मुख्य उद्देश्य उन लोगों को एकजुट करना था, जो जाति प्रथा के वैचारिक विरोधी थे या जाति प्रथा के कारण जिल्लत की जिंदगी जीने को मजबूर थे। फुले द्वारा बाल-विवाह का भी पुरजोर विरोध किया गया तथा वे विधवा पुनर्विवाह के प्रबल समर्थक थे।

महामना जोतिबा फुले का साहित्य

महामना जोतिबा फुले बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ये उच्च कोटि के कवि, लेखक और विचारक थे। अपने विचारों को प्रचारित करने के लिए फुले ने किताबें, निबंध, कविताएँ

और नाटक लिखे। उनका सबसे प्रसिद्ध काम 1873 में प्रकाशित गुलामगिरी (गुलामी) पुस्तक है। इस पुस्तक में महामना जोतिबा फुले ने भारत की जाति व्यवस्था पर जबरदस्त हमला किया है, इस पुस्तक में फुले निचली जातियों के सदस्यों की स्थिति की तुलना संयुक्त राज्य अमेरिका में गुलाम लोगों की स्थिति से करते हैं। इनके द्वारा लिखी गयी कुछ अन्य प्रमुख पुस्तकें निम्नलिखित हैं : क्षत्रपति शिवाजी, अछूतों की कैफियत, किसान का कोड़ा, तृतीय रत्न, राजा भोसला का पखड़ा इत्यादि।

फुले ने किसानों की दयनीय दशा, उनकी अनसुलझी समस्याओं की पहेली को बखूबी से अपनी पुस्तक किसान का कोड़ा (1886) में दर्शाया है। ये पुस्तक उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई थी। फुले की यह पुस्तक छोटे किसानों की दयनीय दशा का कच्चा चिट्ठा उजागर करती है और उनकी दुरदशा को सुधारने के लिए अमल में लाए जाने वाले उपयोगों की महागाथा है।

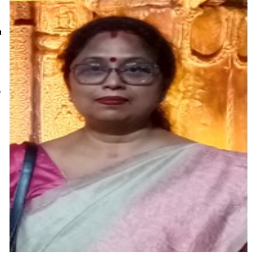
महात्मा की उपाधि

महामना जोतिबा फुले द्वारा सन 1873 ई० में सत्य शोधक समाज की स्थापना के बाद इनके सामाजिक और शैक्षणिक कार्यों की सराहना पूरे भारत में होने लगी। इनके अनूठे अंदाज ने सनातनियों में खलबली मचाने लगी और शूद्रों में जाग्रति आने लगी। इनकी समाजसेवा को देखते हुए मुंबई की एक विशाल सभा में 11 मई 1888 ई० को विठ्ठलराव कृष्णाजी वंडेकर जी ने इन्हें "महात्मा" की उपाधि से सम्मानित किया।

मृत्यु

महामना जोतिबा फुले के काम और लेखन ने भारत में जाति सुधार के लिए बाद में होने वाले आंदोलनों को सदैव प्रेरित किया। डॉ भीमराव रामजी अंबेडकर भी उनके कार्यों से इतने प्रभावित हुए कि आज महामना जोतिबा फुले को उनका राजनैतिक गुरु माना जाता है। भारत में जाति व्यवस्था के भेदभावपूर्ण प्रभावों को खत्म करने के लिए चल रहे प्रयास आज उनकी विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनकी मृत्यु 28 नवंबर 1890 ई० को 63 वर्ष की अवस्था में पुणे (महाराष्ट्र) में हो गयी।

न्यारे क्रांती दूत थे, फुले ज्योतिबा नामा।
भेद मिटाने आपसी, शिक्षित करी अवाम।
शिक्षित करी अवाम, पाठशालाएं खोली।
बिन शिक्षा हम सूद, हुये ये फूले बोली।
पढो सभी नर नार, रहो ना बने बिचारे।
फुले दे गये सीख, हो गये वारे न्यारे।



कवि रमाकांत रथ-एक युग का अवसान

रात में तुम्हें
नहीं करूँगा स्पर्श
कदाचित् स्पर्श करने के पश्चात्
तुम जल.. मैं पवन
घुल जाऊँगा उसमें
कदाचित् जन्म जन्मांतर
तुमको पाने का
कर्मफल का
हो जाएगा अंत
कदाचित्
मेरी चेतना के सीमांत पर
तुम्हारा कोई रूप रह जाएगा..

ये शब्द, यह शब्द विन्यास, ये पंक्तियाँ.. यह आवेग.. व भावों का प्राचुर्य है कवि रमाकांत रथ का। जिनका जन्म ओडिशा की प्राचीन नगरी कटक में 13 दिसम्बर 1934 को हुआ था। उन्होंने रावेन्शा विश्वविद्यालय (उस समय महाविद्यालय था) से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर किया। 1957 में वे भारतीय प्रशासनिक सेवा में नियुक्त हुए एवं 1992 में मुख्य सचिव के रूप में कार्य करते हुए सेवानिवृत्त हुए। इतनी महत्वपूर्ण पदवी पर रहते हुए कई दुविधाओं से संघर्ष करते हुए भी कविता से .. कभी दूर नहीं हुए एवं उनकी अनन्य कृति ' श्री राधा ' 1992 में सरस्वती सम्मान से सम्मानित भी हुई। उससे पूर्व उनकी अन्यतम सुंदर कृति ' सप्तम् ऋतु ' 1978 में केंद्र साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हुई थी। 1984 में काव्य संकलन 'सचित्र अंधार' हेतु उन्हें शारला पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा 2006 में उन्हें पद्म भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। केवल इतना ही नहीं 2018 में उन्हें अतिबड़ी जगन्नाथ दास सम्मान से सम्मानित किया गया एवं वह 1993 से 1998 पर्यंत केंद्र साहित्य अकादमी में उपसभापति के रूप में नियुक्त रहे एवं उन्होंने 1998 से 2003 पर्यंत केंद्रीय साहित्य अकादमी में सभापति के रूप में भी दायित्व का निर्वाह किया। उनका प्रथम काव्य संकलन 'केते दिन र' 1962 में प्रकाशित हुआ

था। इस संकलन ने उस समय की काव्यधारा को एक नव्य प्रवाह में.. एक नूतन चिंतन के स्रोत में अकस्मात् परिवर्तित कर दिया। कवि रमाकांत ने ओडिशा काव्यनारी को भावावेग के कारागार से मुक्तकर बौद्धिक तथा अति बौद्धिक चेतना के ऐश्वर्य से समृद्ध किया। एक सचेतन तथा संवेदनशील व्यक्ति, प्रकृति एवं सृष्टि की प्रत्येक दुर्भेद्य एवं अहेतुक परिस्थिति में कैसे पीड़ित होता है.. संतापित होता है.. उस भाव का.. उस अवस्था का प्रतिफलन उनकी कविताओं में दृष्टिगोचर होता है।

कवि रमाकांत रथ टीएस एलियट एवं एज्रा पाउंड जैसे कवियों से अधिक प्रभावित थे एवं अपनी रचनाओं में अनेक रूप कल्प का प्रयोग भी करते थे। रहस्यवाद तथा जीवन-मृत्यु की प्रहेलिका के अन्वेषी कवि रमाकांत की आत्मा एकांत-निवासी थी।

कभी कभी होता प्रतीत
मैं हूँ आकाश सा प्रशस्त
तथापि हूँ शून्य
एवं देखता हूँ पृथ्वी सी
स्तीर्ण तुम्हारी भुजाएँ
जहाँ हूँ करता मैं अवतरण
होता है तुम्हारा ही आलिंगन

उपर्युक्तपंक्तियाँ.. प्रथम काव्य संकलन ' केते दिन र'.. से उद्धृत हैं। वह काव्यमुखर थे एवं कहते थे कि एक कवि समग्र जीवन में एक ही कविता लिखता रहता है। उनकी लेखनी अंतरात्मा की ध्वनि से प्रतिध्वनित होती है.. चंचल नदी सी हृदय गहवर से निस्सृत होकर काव्य प्रेमियों ..पाठकों के मर्म को स्पर्श करते हुए आजीवन रह जाती है एक जीवंत स्मृति बनकर। कवि ने जीवन की अपरिमित व्यथाओं को यंत्रणाओं को, संवेदनशील हृदय के अस्पृश्य भाग में अनुभूत किया। ऐसे ही उन्होंने अपने जीवन की समस्याओं पर विचार विक्षेपण एवं संकटों का समाधान भी अपने तीक्ष्ण युक्तिपूर्ण बौद्धिक स्तर से ही किया है। उनकी कविताओं में हृदय का भावावेग एवं बौद्धिक विचार श्रृंखला का एक मधुर समन्वय प्रगट होता

होता है। उनकी प्रत्येक कविता के स्वर में जितना गांभीर्य व संयम है उतनी ही सुकोमलता, सुमधुरता तथा स्निग्धता भी है। कविताओं का पाठ करते समय ऐसा प्रतीत होता है जैसे हृदय पद्म सहस्रदल में उन्मुक्त होकर प्रस्फुटित होता है ... जैसे मन का कपाट भी उन्मुक्त हो जाता है, उनकी कविताएँ पाठक के मनभूमि पर असंख्य आवेग व आलोड़न की सृष्टि करती हैं।

अन्य सभी सुबह से
आज की सुबह
क्यों होती प्रतीत
भिन्न - पृथक्
धूप में है इतनी उन्मत्तता
पवन है अन्यमनस्क
नहीं है कुछ भी पूर्ववत्
जैसे कोई देशांतर प्रेमी
रहता है यहीं कहीं
किसी छद्म रूप में...

कवि रमाकांत की कविताओं में जीवन के अनेक मौलिक रहस्य के संबंध में जिज्ञासा, अनुसन्धित्सा, अनुभूति तथा उपलब्धियों का स्वर स्वरित होता है। अपितु, सृष्टि एवं इसके सृष्टा, इसकी नियति, इसका विधान एवं इसकी परिणति के विरुद्ध एक विद्रोही आत्मा की कटु भर्त्सना एवं प्रतिवाद उनकी कविताओं में दृष्ट होता है। यदि उनकी लेखनी मानवीय जीवन के अनुराग, अभीप्सा, विरक्ति, विपन्नता, अंतर्द्वन्द्व एवं अनुप्रेरणा अभिव्यक्त करती है अन्येक दिशामें सामाजिक अंकुश, असंगति, अधिकारवाद, बद्धता में रहते हुए व्यक्ति के आत्मपीड़न की ज्वाला एवं उसकी अनुभूति की उच्चाटता को भी अभिव्यक्त करती है। उनकी कविताएँ कालजयी हैं क्योंकि प्रत्येक कालखंड के पाठकों के मन को उसी प्रथम नूतनत्व से ही स्पर्श करती हैं उनके भाव अनुरूप।

जैसे हमें यह ज्ञात है कि इस प्रकृति का सौंदर्य, माधुर्य का रहस्य, उनकी तूलिका से प्रवाहित अनंत लालिमा, मधुर मूर्च्छना, हरित पर्णों पर लिखित स्वर्णिम रश्मियाँ तथा नक्षत्रमय नभ पर विकीर्ण रजत रंग, सबकुछ कविता ही है... ईश्वर की रहस्यमयी कविता...। यदि कविता में रहस्यात्मकता एवं सांकेतिकता नहीं है तो वह कविता अलंकार रहित, श्रृंगार रहित विद्रूप असंपूर्ण नारी के समान है। उनकी कविता 'इस नदी तट पर' की कुछ पंक्तियाँ,

इस नदी पर
कहीं एक गीत
सो रहा है,
इस उपत्यका के तमस में
सूर्य का हो रहा रक्तस्त्राव
भग्न तरिणी के भग्नावशेष
हो जाते हैं एकत्रित

तुम मेरे आलिंगन में
एक दीपक कर प्रज्वलित
स्मृति के सभी संकीर्ण पथ को
करती आलोचित....

पद्मभूषण रमाकांत रथ की कविताओं में दिगंत व्याप्त आध्यात्मिकता एवं मानवीय संवेदनाएँ दृष्ट होती हैं। प्राचीन, अर्वाचीन, अत्याधुनिक कविताओं में कवि रमाकांत की लेखनी की भूमिका चिरस्थायी प्रेरणा है। उनकी कविताओं में सामाजिक क्षोभ भी परिलक्षित होता है। उनकी कविता लालटेन (लंठन) एक बहुचर्चित तथा मननशील कविता है। इसमें कवि, व्यक्ति के हृदय में एक अव्यक्त निभृत कोण से संचरित होते हैं। इस कविता में कवि चित्रकल्प के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की यांत्रिक दिनचर्या की काम, क्रोध, निराशा, ज्वलन, क्षोभ, विद्रोह आदि को चुम्बकीय स्पर्श देकर दर्शाया है। कविता साहित्य के समालोचक पतित पावन गिरि, कवि रमाकांत की कविता में आर्त, दुष्ट, विचारहीन मनुष्य के स्वर संबंध में कहते हैं कि हमारी सामाजिक पृष्ठभूमि पर एक व्यक्ति उसकी दिनचर्या में जो जीवन निर्वाह करता है उसी प्रकार उसकी नैतिकता, सांसारिक ज्ञान एवं उसके जीवन का मूल्यबोध प्रतिभासित होता है। समाज व राष्ट्र की जन कल्याण नीति के माध्यम से ही एक वृहद तात्पर्यपूर्ण जीवन उदभासित होता है, इसी भाव विचार को अपनी प्रतीकधर्मी व सांकेतिक अर्थपूर्ण शब्दों से निर्मित कर इस कविता में इंगित किया है।

'लंठन' कविता का हिंदी अनुवाद (लालटेन) मेरे प्रथम अनूदित सॉनेट संकलन 'प्रतीची से प्राची पर्यंत' में लिपिबद्ध है।

लालटेन (सॉनेट)

मिट्टी का तेल, कुछ कीट, अग्निशिखा, धुएँ का आकार
ये समस्त होते हैं एक धात्विक परिवेष्टन में एकत्रित
इस आवरणहीन धात्विक पात्र में अग्नि-समुद्र के ज्वार
वीभत्स अंधकार में ऊर्ध्व लौघ कर होते हैं प्रज्वलित।

अग्नि है जलती, लौह-पात्र की परिधि में रहती अनुव्रत
कौतुकागार के व्याघ्र सम क्रूर अग्नि होती प्रतीत शांत सी
कदाचित् वह अज्ञात कि कैसे हुआ यह लालटेन उत्तम
कदाचित् है वह अपरिचित इस कृष्ण-लौह-पात्र से भी।

तुम वही हो जो वर्षा की तंद्रा को सदा रख पलकों में
व नेत्र-गोलकों के संचलन हेतु हो करती कठिन श्रम
व गहन-केश में एक चम्पक पुष्प गूँथ लिया है तुमने
क्या तुम कभी देख पाती हो मेरे जलते अस्तित्व का मर्म ?

क्या तुम कर पाओगी अनुमान में तीव्र कष्ट हूँ सह रहा ?
आधी धोती -इस्तरी किए हुए आधे कुरते में हूँ रह रहा ?

कवि रमाकांत रथ ने श्वास के आरोह अवरोह में सदैव जीवन की उन स्थितियों को सहन किया जिसमें एक साधारण मानव अपनी चिंताशक्ति से पराजित हो जाता है। उनके कार्यकाल में एकबार उनके वसभवन पर मिथ्या तथ्य के कारण छापा मारा गया..। यह उनको सह्य नहीं हुआ। उसी क्षण उनके मन में यह विचार आया कि यदि वह सत्य पथ पर हैं तो एकदिन वह निर्दोष प्रमाणित होंगे एवं ऐसा ही हुआ, एक /दो वर्ष में वह सरकार द्वारा निर्दोष प्रमाणित भी हुए।

उस समय की उनकी एक कविता 'केजाणि' (नहीं है ज्ञात) की कुछ पंक्तियों में यह ज्ञात होता है कि वे कितने विचारशील थे एवं मृत्यु के प्रति उनके भाव में निर्लसता थी एवं स्वयं पर प्रगाढ़ विश्वास था-

आत्महत्या करने हेतु
अनेक बार मैं आया हूँ,
किंतु प्रतिवार मैं सशरीर
लौट जाता हूँ,
क्योंकि यह निश्चित
नहीं कर पाता
कि मैं अब मर जाऊँ
अथवा कुछ दिन पश्चात्?
कब मरना उचित होगा —
दिन में अथवा अर्धरात्रि में?
क्यों ऐसे किया
एक पत्र में कारण लिख दूँ
अथवा और कोई
व्यर्थ कार्य में
हस्तक्षेप न करूँ...?.

उद्धृत पंक्तियाँ उस कविता की हैं... जिसमें कवि एक साधारण व्यक्ति के मनोभाव की छवि, नकारात्मक स्थिति में किस प्रकार होगी यह दर्शाया है।

'लालटेन', 'नव गुंजार', 'अरुंधती', 'बाघ शिकार', 'बूढ़ा लोक', व 'धर्मपद र आत्महत्या' इत्यादि कविताओं में विविध प्रतीकों एवं चित्रकल्प के माध्यम से कवि रमाकांत रथ ने आधुनिक मानव की जीवनानुभूतियों को व्यंजनात्मक लेखनी से रचित किया है.. जो उत्कलीय कला, संस्कृति एवं परंपराओं का मानवीय मूल्यांकन तो करती ही है.. साथ ही तत्कालीन सरकारी कार्य पद्धति व निष्प्रभ शासन व्यवस्था का भी साहित्यिक व्यंग्य के माध्यम से चित्रण करती है।

उन्होंने अपनी काव्य पुस्तक 'श्री पलातक' के मुखबंध में यह लिखा है कि 'यदि अतीत में विचरण करने का लक्ष्य एक विडंबना है.. तो भविष्य का अभिलषित लक्ष्य कितना वास्तविक है! अभी तक अप्राप्ति में कुछ प्राप्त करने की कामना के अतिरिक्त किंवा कुछ व्यक्तियों की परिकल्पना के अतिरिक्त.. इसकी और क्या भित्ति हो सकती है ? वही परिकल्पना किसी की साधना-प्रसूत हो सकती है... किसी

की अनुभूतिसिद्ध भी हो सकती है किंतु तुम्हारे भविष्य का लक्ष्य हो सकता है यह मानने में कितनी यथार्थता है! उससे अधिक वास्तविक है तुम्हारी स्वयं की अनुभूतियों की अवस्था । काल प्रवाह के नियमानुसार, अतीत में पुनः अवस्थापित होना यदि असंभव है.. तो भविष्य के अंतिम चरण पर आकर तुम्हारे अस्तित्व का होना क्यों माना जाएगा? यदि तुम्हारा कहीं पहुँचना है नहीं तथापि तुम्हारे एक लक्ष्य पोषित करने से निवृत्त नहीं हो सकते तो, अतीत में अनुभूत एक संतुष्टि एवं कुछ बोधगम्य सम्भावनाओं में सम्पूर्ण अवस्था को सतृष्ण नयनों में देखते रहने में क्या विडंबना थी ?' कवि वास्तव में यथार्थवादी थे।

कविता लिखना जैसे उनके भाग्य में ही लिखित था। कविताएँ स्वयं उनके हृदय व आत्मा को स्पर्श करती हुई शब्दों में रूपांतरित हो जाती थीं। ओड़िआ कविताओं को सर्वभारतीय स्तर पर उन्होंने एक स्वतंत्र परिचय प्रदान किया था। वह कहते थे कि 'हमारी मातृभाषा गुणवत्ता के स्तर पर अत्यंत उच्चकोटि की है, अन्य भाषा अथवा अन्य विदेशी भाषा की तुलना में'। विदेशों में भी कवि रमाकांत रथ अत्यंत लोकप्रिय थे। उन्हें अतुलनीय श्रद्धा एवं सम्मान भी प्राप्त हुआ है। वह कहते थे कि यदि मानव हृदय कोमल एवं संवेदनशील न होगा तो वह कभी कवि नहीं बन पाएगा। उनकी कविताएँ आश्चर्यचकित करती, निहित अर्थ के अलंकार से अलंकृत हैं।

विद्यार्थी जीवन में उनकी रचित कविताएँ जितनी लोकप्रिय थीं एवं ओड़िशा की विभिन्न सुप्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं, उतनी ही उनके कार्यकाल में रचित कविताएँ मानवीय जीवन की दैनिक व साधारण स्थितियों की वास्तविकता को परिभाषित करते हुए समकालीन पत्र पत्रिकाओं का शोभावर्धन करती थी।

अनेक कोठरी, नव गुंजर, संदिग्ध मृगया आदि काव्य संकलन में कवि रमाकांत की अमृतमय आत्मा मानव के न केवल दुःख एवं दुःख जनित अहेतुक परिस्थितियों का चित्रण किया है, उस समय की सांसारिक तथा मध्य वर्गिक व्यक्ति के जीवन में आते संघर्षों का वर्णन अद्भुत चित्रकल्प एवं प्रतीकों के माध्यम से वर्णित होते भी दृष्ट होते हैं।

कवि कहते थे 'मेरे शब्द संभार इतना समृद्ध नहीं है, तथापि पाठकों के हृदय को स्पर्श करना मेरी अवांछित इच्छा है.. प्रयास है। मेरे कथ्य में छल अथवा व्यंजना नहीं है।' उनका एक विशेष गुण था कि प्रशंसा की अपेक्षा रखे बिना कर्तव्य पथ पर निरंतर अग्रसर होना।

वह कविता लिखते समय मुक्ति ढूंढते थे। हृदय की ज्वलन को निर्वापित करने पर्यंत कविता की यंत्रणा को सहन करते थे। अपने प्रशासनिक सेवा कार्यकाल में ओड़िशा के विभिन्न आदवासी क्षेत्रों में उनका स्थानांतरण हुआ.. राजनेताओं के संस्पर्श में भी रहे किंतु कोई भी असत्य, जटिल स्थितियाँ अथवा प्रतिकूल अवस्था उनकी कविताओं के स्रोत को नियंत्रित नहीं कर पाई।

16 मार्च 2025 को जब यह सूचना मिली कि कवि रमाकांत रथ स्वर्गाभिमुख यात्रा में है, तब उनकी ओड़िशा

समेत देश, विदेश.. चतुर्दिशाओं को उद्वेलित करने वाली
1992 में सरस्वती सम्मान से सम्मानित महाकाव्य
श्रीराधा की एक कविता स्मृति पटल पर स्वतः आ गई।
इस कविता का अनुवाद करते समय ऐसा अनुभूत हुआ जैसे
किसी अनंत शून्यता में रक्त प्रवाह हो रहा हो, जैसे
अंतरिक्ष पर्यंत एक अदृश्य किंतु एक दीर्घ पथ लंबित है
जिसका कोई अंत नहीं, जैसे कोई अपने विस्तृत भुजाओं में
भर लेने के लिए प्रतीक्षा तो कर रहा है परंतु, एक महादीर्घ
दूरत्व है... अवर्णनीय शून्यता है।

कविता (12)

केवल हम दोनों ही थे एक नाव पर
मुझे केवल इतना स्मरण है
कि उन्होंने मुझे बुलाया था
स्मितहास से.. कोमल स्पर्श से..
नाव पर पाँव रखते ही
वह नाव को बड़ा ले गए..।
वह नाव कहाँ जा रही थी,
मुझे नहीं था ज्ञात,
कदाचित् वह,
जहाँ आकाश का होता अंत
अथवा वहाँ जहाँ प्रतिक्षण
नव्य रूप लेती हुई
आशाओं का अंतरीप
हो रहा था दृश्यमान।
मैं थी संपूर्ण अवचेतना में।
क्रमशः दृष्ट होते नदीतट, वन, जनवसति
समग्र दृश्य हो रहे थे अदृश्य
अंत में केवल दृष्ट होते थे
उनके भिन्न-भिन्न वर्ण।
अब सबकुछ है अदृश्य,
नदी व नदी में बहती नाव भी
आकाश भी हुआ अदृश्य,
सूर्य, चंद्रमा अथवा नक्षत्र
थे या नहीं, निश्चित नहीं था।
केवल वह होते थे दृश्यमान
चतुर्दिश केवल उनका ही रूप
उनकी सत्ता,
मेरा बारम्बार जन्म एवं
मेरी बारम्बार मृत्यु
कहाँ कैसे अदृष्ट हो गए।
कई बार मना करने से भी
उन्होंने स्पर्श किया मेरे
आत्मविस्मृत यौवन को,
अकस्मात्, समस्त संभ्रम
समाप्त हो गए,
दूर कर दिए मैंने
मुझे आच्छादित करते
समस्त अनुयायी अभीप्साओं को।
क्षणिक में, मैं थी वहाँ

जहाँ था गहन अंधकार,
जहाँ नहीं होता नाम,
न समय, समस्त आकृतियों की
पूर्वापर निश्चिह्नता
व्याप्त हो रही थी
दिग-दिगंत पर्यंत।
मैं वहाँ आ गई थी
अनेक युगों की यात्रा करती हुई,
जहाँ कोई आकार नहीं था,
थी केवल चेतना,
जैसे एक समुद्र
जिसका न कोई तट होता
जो होता है अतल।
एक के पश्चात् एक नक्षत्रमंडल
ज्वार से ऊर्ध्व हो रहे थे उत्थित
स्थावर-जंगम
हो रहे थे निश्चिह्न
उस तरल प्रकाश में।
मैं भी स्वयं कईबार
एक ज्वार सी हुई हूँगी उत्थित
एवं कईबार हुई हूँगी
अंश-अंश में विभाजित
अब कईबार किसी
लुप्त नदी तट पर
गीत गा रही हूँगी।
कितनी जलवायु में
कितनी पोशाकों में
हुआ होगा मेरा आगमन
व प्रत्यागमन
एवं प्रत्येक बार
निस्तब्ध हो गई होगी
दिगंत विस्तृत मेरी
सुच्यग्र की पृथ्वी।
सबकुछ हो रहा था स्मरण
मैं आगमन-प्रत्यागमन से
हो अत्यंत क्लान्त
उनके वक्ष पर सो गई
कौन पिता, कौन पति
सबकुछ हुआ विस्मृत
उनके संग नौविहार में।
जो भी मैं कह रही हूँ
क्या यह समस्त शब्द
हैं प्रतिध्वनि?
किंवा पक्षियों के कलरव
पवन का शु-शु शब्द
प्रतिध्वनि मेरे उच्चारण में?
नहीं थे वह पूर्ववत्
अजस्र आकृतियों में
एक आकृति सा,

किसको करती प्रश्न में
 कि मैं जीवित हूँ अथवा
 मेरी मृत्यु हो गई है ?
 नौका-दुर्घटना में
 अथवा किसी अज्ञात व्याधि में?
 कुछ समय पश्चात्
 नाव थी तट पर।
 मैं नाव से उतर आई।
 प्रत्यावर्तन के समय
 क्यों हो रहा था यह अनुभूत
 कि मेरी देह निष्प्राण हो चुकी है,
 ऐसा हो रहा था प्रतीत कि
 जैसे अनेक युगों के बंधन से
 मेरे पाँव बंध गए हैं
 जहाँ भी जाओ, वही
 अपरिष्कार अपरिवर्तित
 नदी घाट पर नित्य होगा
 मेरा आगमन।
 पुनः आएगी रात्रि,
 प्रत्यागमन के पथ पर
 निष्प्रभ स्वप्नों के मृत शरीर से
 टकरा जाऊँगी,
 कितने समय पर्यंत सुनूँगी
 नदी तट पर कोई
 विदाई दे रहा होगा।

इस अद्भुत काव्य शैली में साधारण पाठक को चिरंतन आनंद की प्राप्ति होती है। आध्यात्मिक स्तर पर यह चिंतन राधा का अस्तित्व कृष्ण के अस्तित्व से वास्तविक रूप से कितना जड़ित है.. एकात्म है.. यह प्रतिपादित करता है। किंतु कवि रमाकांत अपने शब्दों को ध्वनि एवं अव्यक्त भाव से मुक्त नहीं कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं... क्योंकि कवि कहते हैं कि जब राधा असाधारण होने जा रही थीं, जब अत्यंत सुंदर व अनन्य होने की स्थिति में स्वयं को अर्थपूर्ण कर रहीं थीं, तभी मेरा चिंतन उसी स्तर से उसी क्षण लौट आ रहा था।

कवि कैसे यह अपेक्षा रखता है कि उसकी कविता उसकी अनुपस्थिति में जीवंत रहेगी। यह सौभाग्य उसके पूर्व कितने कवियों को प्राप्त हुआ होगा? उनकी लेखनी में गुणवत्ता होते हुए भी वे अभी विस्मृत हैं अथवा विस्मृतप्राय हैं। अतएव इसका भाग्य कैसे पृथक् हो पाएगा? कवि रमाकांत कहते थे कि 21/22 वर्ष की आयु में मेरी लिखी हुई कविताएँ आज की मेरी कविताओं से कितनी भिन्न हैं? यदि मेरे जीवंत अवस्था में यह घटित हो रहा है.. मेरी अनुपस्थिति में मेरी कविताएँ मेरी हैं कहने हेतु कौन होगा?

कवि रमाकांत रथ समाकालीन होते हुए भी कालातीत थे, उनके सृजन सभी पीढ़ी के पाठकों को न ही केवल आकर्षित किया है.. काव्य-चेतना को एक अद्भुत स्तर दिया है। उनकी लेखनी युगांतरकारी है। उनकी लेखनी युगांतरकारी है।

संदर्भ - 1- कवि त्रिनाथ सिंह की काव्यानुवृत्ति 'निश्वास र कारुकार्य' 2-कवयित्री तथा अनुवादक मोनालिसा जेना - 'रमाकांत रथ-"काव्य- व्यक्तित्व र विश्लेषण"

गज़ल

कैलाश मनहर

मनोहरपुर(जयपुर-राज.)

(एक)

रात रात भर जाग जाग कर किस की राहें तकता है मन
 किस बारे में सोच सोच कर कभी नहीं यह थकता है मन

खुद पर तो काबू भी कर लूँ औरों को समझाऊँ क्या मैं
 दर्द झेल सकता है इससे बढ़ कर क्या कर सकता है मन

जिस गिलास में पी थी हमने वो तो गिर कर टूट गया
 टूटे शीशों की किरचों-सा अक्सर रोज़ झनकता है मन

कूज़ागर ने देह गढ़ी पर मन का तो कुछ किया नहीं है
 दुनियावी व्यवहार के आँवे में हर पल ही पकता है मन

जिनको अपना सब कुछ माना वे भी जब आरोपित करते
 ठोकर-सी लगती है मन पर दुख से टूट दरकता है मन

चाह यही है भूलूँ सब कुछ लेकिन कितना मुश्किल है ये
 आती हैं यादें अतीत की जिनमें भीग सिसकता है मन

रोज़ शाम को छत पर जा कर डूबा सूरज देखा करता
 पर्वत के उस पार न जाने क्या है जहाँ चमकता है मन

(दो)

दे सड़क को गाड़ियाँ पगडण्डियों को पाँव दै
 शहर वालों को शहर दे मुझको मेरा गाँव दे

दे अमीरों को तू चाहे ए.सी. कूलर कितने भी
 हाँ मगर मुफ़्लिस को भी पीपल की ठंडी छाँव दे

महलों और बंगलों को दे दे संगमरमर चाहे तू
 हम गरीबों को तो इक दूजे के दिल में ठाँव दे

झूठ औ" चालाकियाँ कैसी भी दे शैतान को
 हर तरफ़ बजता हुआ इन्सानियत का नाँव दे

बेईमानी सलतनत को चाहे जितनी दे मगर
 ऐ मेरे मौला हमें ईमान का हर दाँव दे



समझो द्वारे पर है बसन्त

गुन ना हिरानो गुन गाहक हिरानो है। इस भावना के साथ मित्रो! मेरी इस रचना के तुकान्त न देखते हुए इसके लय विधान को देखें यह आठ सोलह व बत्तीस मात्राओं के अनुशासन में मत्त सवैया के प्रवाह में छन्दबद्ध किन्तु एक अतुकान्त रचना है। केवल एक बार पढ़ जाँ। कविता ऐसे भी होती है। आनन्द लें व आशीष दें।

मद्धिम कुहरे की छटा चीर पूरब से आते रश्मिरथी उनके स्वागत में भर उड़ान आकाश भेदते कलरव से खग वंश बेलि के उच्चारण जब अर्थ बदलने लगे और बहुरंग तितलियाँ चटक-मटक आ फूल-फूल पर मँडराएँ जब मौन तोड़ कोयलें गीत अमराई में गा उठें और मधुकर के गुंजित राग उठें पड़कुलिया गमकाए ढोलक जब झाँझ बजाएँ मैनाएँ बज उठें मँजीरों सी फसलें लग उठे तबलची सा बैठा कर उठे गुटुर गूँ हर कपोत मोरनी मोर का नाच देख इतराने लगे बगीचे में महुआ मदमाता हुआ कहे टेसू का लाल सुर्ख चेहरा पी रहा धरा की हरियाली सर्वथा नवीना कली-कली सुषमा बिखेरती हो कदली पियराई सरसों फूल बिछा खेतों में अँगड़ाई लेती विटपों से लिपटी लतिकाएँ आलिंगन करतीं लगतीं हों, चुम्बन पर चुम्बन जड़तीं हों। समझो द्वारे पर है बसन्त।।

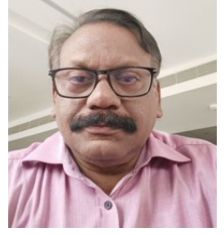
जब सघन वनों के बीच-बीच गायों के गोबर से लीपे आश्रम के आँगन-आँगन में घी सनी बनी हवि समिधा से हो उठे हवन में सन्तों की आहुतियों से उठ रहा धुआँ जब मन्द-मन्द ले उड़े पवन बिखराता जाए दिग्दिगन्त उल्लासभरी तरुणाई पर छा उठे जोश नव यौवन का खुशबू बिखेरती मलिकाएँ मुस्काती आतीं लगतीं हों, जब रंग-बिरंगे फूलों की मदमाती झूमा-झटकी में मचलीं हों कलियाँ खिलने को खिलखिला उठे सौन्दर्य स्वयं हो उठे मनोहारी पीपल हर दृष्टि सुहानी सृष्टि देख जागे विवेक हर लेख लेख कर उठे समीक्षा सौरभ की धरती माता के गौरव की पतझड़ से उजड़े वन-वन में समिधाएँ आने लगतीं हों शुचिताएँ छाने लगतीं हों, अमराई की शाखाओं सी बहियाँ बौराई लगतीं हों, नदियाँ कृशकायी लगतीं हों, समझो द्वारे पर है बसन्त।।

कह उठे गगन हा रसा! रसा! हर वसन लगे जब कसा कसा हो दिशा दिशा की एक दशा तन पर मादकता भरा नशा वाणी अवाक् रह जाती हो बिन कहे अदा कह जाती हो संकेत मुखर हो जाते हों अरमान शिखर हो जाते हों हर ओर-छोर तक पोर-पोर बासन्ती रँग में बोर-बोर

सौन्दर्यलोक की वही दृष्टि रचने को आतुर नई सृष्टि गाते हों किन्नर-किन्नरियाँ हर तरह अनूठी अलसातीं आनन्द लुटातीं इठलातीं सम्मोहित करतीं बल्लरियाँ, कल्पनातीत तरुणाई में लटका ललनाएँ झल्लरियाँ जब दबा-दबा कर ओठों से सकुचाई सीं बौराई सीं मदिराई सीं भरमाई सीं घर में आई सीं लगती हों, गलियाँ गदराई लगतीं हों रक्तिमाहरित कोपलें उमग विटपों पर कौतूहल करतीं कुछ मस्तातीं कुछ सुस्तातीं उल्लास जगातीं बलखातीं सकुचातीं आईं लगतीं हों, समझो द्वारे पर है बसन्त।।

गुनगुनी धूप शीतल समीर मन मुदित किन्तु आधा अधीर सुखदाई कुछ-कुछ दुखदाई पीताभ पल्लवों की लड़ियाँ धरती पर गिरतीं झूम-झूम लावण्यमयी मिष्टास प्रबल होती हो कड़वी पर हलचल आकर्षण और विकर्षण की बेलाएँ सजतीं लगतीं हों, खारीं लहराई लगतीं हों आलाप टिटहरी का सुनकर गा उठे पपीही पिया पिया विरहिनि के मन में उठे हूक हो उठे कलेजा टूक-टूक गाती हो कोयल कूक-कूक चातक जाता हो चूक-चूक विधवा-सधवा की छिड़े जंग उड़ चले कहीं चढ़ उठे रंग चिकनी चिकनी हर देह एक बदलाव लिए जब मटक-मटक चटकीले मटके सी फूली फूलों की डाली से बोले रंगीन मिजाजी मंजरियाँ मरुथल में जैसे जल परियाँ ओढ़े बासन्ती चूनरियाँ मदमाती आती कर्तरियाँ बिन ब्याहीं युवती सुन्दरियाँ सामाजिक भय से डरीं-डरीं प्रेमी से जाकर दूर खड़ीं उन्मन अलसाई लगतीं हों हारीं हरजाई लगतीं हों नतमुख शरमाई लगतीं हों, समझो द्वारे पर है बसन्त।।

जब हो निरभ्र आकाश और तारों से जड़ी हुई चूनर ओढ़े बैठी हो नत रजनी टकटकी लगा कर कामदग्ध कर उठे प्रतीक्षा शशि वर की आते निहारने लगे तभी सौतिया डाह से भरी हुई चाँदनी कहे तू निकल! निकल! दोनों-दोनों को कुपित दृष्टि से घूर उठें हो विकल-विकल पसरे सन्नाटे बोल उठें लज्जा मर्यादा छोड़-छाड़ कामातुर लगने लगे जीव ऋतुपति के रंगमहल से जब टक्कर लेने की होड़ करे सूखड़ी झोपड़ी खड़ी-पड़ी डायन की सुन्दरता रति को दे उठे चुनौती बार-बार मदगन्ध सुहानी डोल उठे बहकी बयार रस घोल उठे हो उठे मधुरतम हर आलम नर बोल उठे सजनी रजनी! रजनी बोले बालम! बालम! हौले हौले शरमाती हो जब प्रीति परस्पर गाती हो उद्दाम काम उन्मत्त प्रेम दुर्दम्य ललक वासना भरी चहुँओर दिखाई देती हो मस्ती सी छाई लगती हो बस्ती बौराई लगती हो जब ग़ज़ल रुबाई लगती हो समझो द्वारे पर है बसन्त।।



सिमरिया के दिनकर: राष्ट्रकवि की वाणी में ग्राम्य जीवन के स्वर

(पुण्यतिथि पर विशेष)

रामधारी सिंह 'दिनकर', भारतीय साहित्य के आकाश में एक ऐसा नक्षत्र हैं जिनकी आभा ने न केवल एक युग को आलोकित किया बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी। उनकी कविताएँ, ओज और राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण होने के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति के रमणीय चित्रों से भी ओतप्रोत हैं। इन विविध रंगों और भावों की पृष्ठभूमि में कहीं न कहीं उनके जन्मस्थान, बिहार के बेगूसराय जिले के एक छोटे से गाँव, सिमरिया की मिट्टी की सुगंध रची बसी है। सिमरिया, केवल एक छोटा सा गांव नहीं, बल्कि दिनकर के मानस पटल पर अंकित एक जीवंत स्मृति है। उनके बचपन की गलियाँ, खेतों की हरियाली, नदियों का कलकल, और वहाँ के सरल, मेहनती लोगों का जीवन उनकी कविताओं में अनगिनत रूपों में प्रतिध्वनित होता है। दिनकर की प्रारंभिक कविताएँ, विशेषकर 'रेणुका' और 'हुंकार' जैसी कृतियाँ, भले ही राष्ट्रीय आंदोलनों और सामाजिक चेतना के तीव्र स्वर लिए हुए हों, लेकिन उनमें भी कहीं न कहीं ग्राम्य जीवन की सहजता और प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग छिपा हुआ मिलता है। खेतों में काम करते किसान, बहती हुई नदियाँ, बदलते मौसम और लोक जीवन के विभिन्न रंग उनकी कल्पना को उर्वर बनाते रहे।

दिनकर का जन्म एक कृषक परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्होंने गाँव की साधारण जीवनशैली को करीब से देखा था। खेतों में पिता के साथ काम करना, पशुओं की देखभाल करना, और गाँव के मेलों और त्योहारों में शामिल होना – ये अनुभव उनके संवेदनशील मन पर गहरी छाप छोड़ गए। प्रकृति के साथ उनका सीधा और अंतरंग संबंध था। सूर्योदय और सूर्यास्त के बदलते रंग, वर्षा ऋतु की उमंग, और शरद की शांत सुंदरता – ये सभी उनकी कविताओं में जीवंत चित्र बनकर उभरे। 'रेणुका' की पंक्तियों में प्रकृति का जो भव्य और मोहक वर्णन मिलता है, वह निश्चय ही सिमरिया के आसपास के

परिवेश से प्रेरित है।

दिनकर की कविताओं में ग्राम्य जीवन केवल एक पृष्ठभूमि के रूप में ही नहीं आता, बल्कि यह उनके चिंतन और दर्शन का एक अभिन्न अंग बन जाता है। उन्होंने गाँव के लोगों के संघर्ष, उनकी सादगी, उनके अटूट हौसले और मिट्टी से उनके गहरे जुड़ाव को अपनी कविताओं में मुखरता से व्यक्त किया है। 'कुरुक्षेत्र' जैसे महाकाव्य में भी, जहाँ युद्ध और दर्शन के गंभीर प्रश्न उठाए गए हैं, अप्रत्यक्ष रूप से ग्राम्य जीवन के मूल्यों और संघर्षों की छाया दिखाई देती है। युद्ध की विभीषिका और मानवीय त्रासदी के बीच, दिनकर कहीं न कहीं उस शांति और स्थिरता की आकांक्षा करते हैं जो उन्हें अपने गाँव की मिट्टी में मिलती थी।

उनकी प्रसिद्ध कविता 'दिल्ली' में भी, जहाँ वे शहरी जीवन की भागदौड़ और कृत्रिमता पर कटाक्ष करते हैं, कहीं न कहीं उनके मन में गाँव की सहजता और प्रामाणिकता की स्मृति बसी हुई है। वे उस जीवन को याद करते हैं जहाँ संबंध सीधे और सच्चे होते थे, जहाँ प्रकृति का चक्र जीवन का स्वाभाविक रिदम निर्धारित करता था, और जहाँ मानवीय श्रम का सीधा संबंध उत्पादन और अस्तित्व से होता था।

'परशुराम की प्रतीक्षा' में राष्ट्रीय गौरव और शौर्य का उद्घोष है, लेकिन इस ओजपूर्ण वाणी में भी कहीं न कहीं उस मिट्टी की दृढ़ता और सहनशीलता का स्वर है जिसने दिनकर को जन्म दिया था। परशुराम का तेजस्वी व्यक्तित्व और उनका अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, शायद दिनकर को अपने गाँव के उन मेहनती और स्वाभिमानि लोगों से प्रेरित करता है जो विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानते थे।

दिनकर की कविताओं में नदियों का विशेष महत्व है। सिमरिया गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है, और इस नदी का उनके जीवन और उनकी कविता पर गहरा प्रभाव रहा होगा। नदियों का बहता हुआ जल, उनकी



गतिशीलता, उनका जीवनदायिनी स्वरूप – ये सभी दिनकर की कविताओं में प्रगति, निरंतरता और जीवन के प्रवाह के प्रतीक के रूप में आते हैं। 'उर्वशी' में प्रेम और सौंदर्य के चित्रण में भी प्रकृति के विभिन्न उपादानों का प्रयोग किया गया है, और इन उपादानों में कहीं न कहीं उस ग्रामीण परिवेश की नैसर्गिक सुंदरता का प्रभाव अवश्य दिखाई देता है जिसे दिनकर ने अपने बचपन में अनुभव किया था।

ग्राम्य जीवन की सादगी और ईमानदारी दिनकर की कविताओं में एक आदर्श के रूप में भी प्रस्तुत होती है। शहरी जीवन की जटिलताओं, दिखावे और भ्रष्टाचार के विपरीत, वे गाँव के सरल और सच्चे जीवन को अधिक महत्व देते हैं। उनकी कविताओं में ऐसे चरित्रों का चित्रण मिलता है जो अपनी मेहनत और ईमानदारी के बल पर जीवन में आगे बढ़ते हैं, और ये चरित्र कहीं न कहीं सिमरिया के उन साधारण लोगों से प्रेरित हो सकते हैं जिन्हें दिनकर ने बचपन से देखा था। दिनकर की भाषा में भी ग्राम्य जीवन की सहजता और प्रवाह मिलता है। उनकी कविताएँ जटिल और दुरूह शब्दों से भरी हुई नहीं होतीं, बल्कि उनमें एक सीधी और सरल अभिव्यक्ति होती है जो सीधे हृदय तक पहुँचती है। यह सहजता शायद उनके ग्रामीण परिवेश में पली-बढ़ी भाषा और लोक-शैली के प्रभाव के कारण है। उनकी कविताओं में लोकगीतों की लय और मुहावरों का प्रयोग भी इस बात का प्रमाण है कि उनकी जड़ों में ग्राम्य जीवन की गहरी पैठ थी।

यह कहना गलत नहीं होगा कि सिमरिया केवल दिनकर का जन्मस्थान ही नहीं, बल्कि उनकी काव्य चेतना का उद्गम स्थल भी था। वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य, सामाजिक जीवन और मानवीय संबंधों ने उनकी कल्पना को उड़ान दी और उन्हें एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान किया जो उनकी कविताओं को विशिष्टता प्रदान करता है। भले ही बाद में उनका कार्यक्षेत्र व्यापक हुआ और उन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भी अपनी लेखनी चलाई, लेकिन उनकी कविताओं की मूल भावना में कहीं न कहीं उस गाँव की मिट्टी की सुगंध हमेशा बनी रही।

दिनकर की कविताओं में किसान और कृषि जीवन का चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'कुरुक्षेत्र' में वे लिखते हैं:

> जो खेत हलकते अपनी ही, उनमें उपजाते अन्न,
> वे ही कृषक कहलाते, भारत माता के सच्चे रत्न।

इन पंक्तियों में किसानों के श्रम और उनके महत्व को जिस प्रकार रेखांकित किया गया है, वह दिनकर के ग्राम्य जीवन के गहरे अनुभव का ही परिणाम है। वे किसानों को 'भारत माता के सच्चे रत्न' कहते हैं, जो उनके प्रति उनके गहरे सम्मान और सहानुभूति को दर्शाता है। उन्होंने किसानों के जीवन की कठिनाइयों, उनकी मेहनत और उनके धैर्य को अपनी कविताओं में कई बार चित्रित किया है।

'रश्मिरथी' में कर्ण के चरित्र के माध्यम से भी दिनकर ने सामाजिक असमानता और वर्गभेद के मुद्दों को उठाया है, और कहीं न कहीं यह संवेदनशीलता उन्हें अपने गाँव के सामाजिक परिवेश से ही मिली होगी जहाँ उन्होंने विभिन्न वर्गों के लोगों के जीवन को करीब से देखा होगा।

दिनकर की कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण भी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। वे नदियों, पहाड़ों, वृक्षों और ऋतुओं को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं, मानो वे मनुष्य की भावनाओं और अनुभवों को साझा करते हों। यह प्रवृत्ति भी उनके बचपन के उस घनिष्ठ संबंध का परिणाम हो सकती है जो उनका प्रकृति के साथ था। सिमरिया के आसपास की हरी-भरी धरती और प्राकृतिक सुंदरता ने उनकी कल्पना को इस प्रकार ढाला कि वे निर्जीव वस्तुओं में भी जीवन और भावनाएँ देख पाते थे।

उनकी कविता 'हिमालय' में हिमालय का भव्य और शक्तिशाली चित्रण है, लेकिन इस चित्रण में भी कहीं न कहीं उस दृढ़ता और अविचल भाव की अनुगूँज है जो शायद उन्हें अपने गाँव की मिट्टी और वहाँ के लोगों के संघर्षपूर्ण जीवन से मिली थी। हिमालय की अटल स्थिरता और उसकी अडिगता, दिनकर को जीवन की चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देती है, और यह प्रेरणा कहीं न कहीं उनके ग्रामीण जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई है। यह भी महत्वपूर्ण है कि दिनकर ने अपनी कविताओं में लोक संस्कृति और लोक परंपराओं को भी स्थान दिया है। गाँव के मेले, त्योहार, लोकगीत और लोक कथाएँ – ये सभी उनकी कविताओं में किसी न किसी रूप में झलकते हैं। यह उनकी अपनी जड़ों से जुड़े रहने और अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति उनके गहरे सम्मान का प्रतीक है।

दिनकर की बाद की कविताओं में, जैसे 'संस्कृति के चार अध्याय', उनका दृष्टिकोण अधिक व्यापक और दार्शनिक हो जाता है, लेकिन इन कृतियों में भी भारतीय संस्कृति की जो गहरी समझ दिखाई देती है, उसकी नींव कहीं न कहीं उनके बचपन के अनुभवों और सिमरिया के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में ही पड़ी होगी। सिमरिया के प्रति दिनकर का स्नेह और उनकी स्मृतियाँ उनकी कविताओं में प्रत्यक्ष रूप से भले ही कम व्यक्त हुई हों, लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से उनका प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है। उस गाँव की मिट्टी, वहाँ के लोग, वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य – ये सभी उनकी काव्य चेतना के मूल तत्व हैं। जिस प्रकार एक वृक्ष अपनी जड़ों से पोषण प्राप्त करता है, उसी प्रकार दिनकर की कविताएँ भी सिमरिया की धरती से रस ग्रहण करती रहीं।

यह भी उल्लेखनीय है कि दिनकर ने कभी भी अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि को भुलाया नहीं। वे हमेशा अपनी जड़ों से जुड़े रहे और उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से

ग्रामीण जीवन के महत्व और उसकी सुंदरता को उजागर किया। उनका यह जुड़ाव न केवल उनकी व्यक्तिगत पहचान का हिस्सा था, बल्कि उनकी साहित्यिक पहचान का भी एक महत्वपूर्ण पहलू था।

दिनकर की कविताएँ हमें यह भी सिखाती हैं कि महानता किसी विशेष स्थान या परिवेश की मोहताज नहीं होती। एक साधारण से गाँव में जन्म लेकर भी एक व्यक्ति अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकता है और अपनी वाणी से पूरे देश को प्रेरित कर सकता है। सिमरिया, इसलिए न केवल दिनकर का जन्मस्थान है, बल्कि यह उस संभावना का प्रतीक भी है जो भारत के हर गाँव में छिपी हुई है। सिमरिया, उनका गाँव, उनकी काव्य यात्रा का प्रारंभिक बिंदु और एक स्थायी प्रेरणा स्रोत रहा। उनकी कविताओं में प्रकृति का चित्रण, किसानों के प्रति सहानुभूति, लोक संस्कृति का समावेश और जीवन की सादगी का आदर्श – ये सभी तत्व उस मिट्टी की देन हैं जिसमें दिनकर ने अपना बचपन बिताया था। उनकी कविताएँ न केवल राष्ट्रीय चेतना और ओज का संचार करती हैं, बल्कि हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहने और साधारण जीवन के मूल्यों को समझने की भी प्रेरणा देती हैं। सिमरिया के दिनकर, वास्तव में अपनी धरती की महक को अपनी वाणी में भरकर पूरे राष्ट्र के कवि बन गए तथा उनकी कविताएँ आज भी हमें उस ग्राम्य जीवन की याद दिलाती हैं जो भारत की आत्मा है।

लघुकथा

शेफालिका सिन्हा

रांची, झारखंड।

अपने घर

इकलौती संतान संजना अपनी मां के अस्पताल में एडमिट होने की खबर सुनते ही पति को छुट्टी न मिलने के कारण अकेली चली आई। यहां आने पर पता चला कि मां को घर में अकेले रहना बहुत भारी पड़ गया। बेहोश होकर जमीन पर दो घंटे पड़ी रह गई, नौकरानी के आने के बाद बगल में लोगों को पता चला और अस्पताल में एडमिट हुई।

वह बच तो गई, पर उसका शरीर सुन्न हो गया है। बांया तरफ का अंग बिल्कुल काम नहीं कर रहा, लकवा मार गया है। वह बिस्तर पर आ गई है। पिता के न रहने पर कितनी बार कहा था मां को साथ रहने को, पर वह अपने गांव, खेत खलिहान को छोड़ बेटी के घर रहना नहीं चाहती थी।

संजना ससुराल में सास-ससुर के साथ रहती है, शायद इसलिए उन्हें ठीक लगे, न लगे, यह सोच वह भी मां पर बहुत जोर नहीं डालती थी।

लेकिन अब वह मां को दूसरों के भरोसे नहीं छोड़ सकती, अब उसे किसी से सोचने और पूछने का समय नहीं है। उसने निर्णय ले लिया है। मां के लिए वह बेटी ही नहीं बेटा भी है। उसने गाड़ी बुक कर लिया है, पति को फोन कर दिया है मां को लेकर अपने घर आ रही है।

सीख जीवन का

कृष्णा जी नब्बे वर्ष से ऊपर की हो गई हैं, चेहरे पर झुर्रियों की चमक है। शरीर कमजोर जरूर हो गया है, पर मन तो उनका वैसे ही मजबूत है जो साठ वर्ष पहले हुआ करता था। जब भी उन्हें मौका मिलता है, वे गर्व से बताना नहीं भूलतीं कि अकेले ही बाजार के चक्कर लगा आती थी, वह भी खरीदने के लिए नहीं। वहां वे डिजाइन देखकर आती और उसी डिजाइन का बेटी का फ्रॉक सिलतीं। उनके पास कर्मठता की, काम की और उनके हौसलों की अनगिनत कहानियां हैं। पर अब घर- बाहर किसे फुर्सत है कि उनकी बातें सुनें।

बेटियां अपने-अपने घर में हैं। यहां घर में बेटा- बहू, पोते पोती साथ में रहते हैं। सभी अपने-अपने काम में व्यस्त, कोई उनकी बातें सुनें या अपनी नौकरी चाकरी करे? आज के समय में उन्हें समय से नाश्ता- खाना, दवा- दारू और उनकी देखभाल हो जाती है, यही बहुत बड़ी बात है।

पर, उन्होंने अपने मन को लगाने का एक तरीका ढूंढ लिया है। उनके हाथों में हमेशा सलाई और ऊन रहता है। उनको देखने में भले थोड़ी परेशानी है, पर हाथ उस पर चलता रहता है। उनका दिमाग तरह-तरह के स्वेटर, बैग, टेडी बियर बनाने में लगा रहता है। उनके शुभचिंतक उनको कहते हैं, अब आप आराम कीजिए।

घर वाले कहते हैं,

‘इसी के कारण आपकी तबीयत खराब हो जाती है, ऊन के रेशे से सांस लेने में परेशानी होती है।’

वे कुछ कहती नहीं, मुस्कुरा कर रह जाती हैं और

लोगों को अपने हाथ की बुनी हुई एक चीज पकड़ा देती हैं। सबको काम में लगे रहने की एक सीख दे जाती हैं और अपने जज़्बे को बरकरार रखती हैं।



देहाती कहीं के

दिल्ली, मेरे ख्वाबों और मेरी आरजुओं का शहर। दिल्ली, जो कभी 'दिलवालों की दिल्ली' के नाम से मशहूर हुआ करती थी। वही दिल्ली अब ओपेन गैस चैम्बर के नाम से भी जानी जाती है। दिल्ली, जो सुल्तानों की लूट से लेकर शायरों का महबूब शहर हुआ करता था। जिस दिल्ली के बारे में उस्ताद शायर साहब ठंडी आह भरकर कहा करते थे "कौन जाए जौक, दिल्ली की गलियां छोड़कर"। उसी दिल्ली में तन-मन की बदहाली के बाद मुझ जैसे कलमकार को डॉक्टर का हुक्म हुआ कि "हवा पानी बदलो। दिल्ली से कम से कम सौ किलोमीटर दूर चले जाओ। तो शायद बच जाओ और सौ साल तक जियोगे। नहीं प्रदूषण के पंजे में आ गए तो खांस - खांस कर ज़िंदगी की खुशहाली पर झाड़ू लग जायेगी। दिल्ली की हवा अब जानलेवा गैस बन चुकी है और पानी में इतनी गंदगी व्याप्त हो गई है कि नयनाभिराम कमल खिलने के बजाय बजबजाती हुई जलकुंभी ही अटी पड़ी रहती है। सो बेहतरी इसी में है कि कुछ वक्त के लिए पहाड़ या गांव चले जाओ"।

डॉक्टर की तजबीज "पहाड़ या गांव" वाली बात मेरे दिमाग में कुलबुलाने लगी। दिल्ली के आसपास की जो पहाड़ वाली जगहें थीं वहाँ के ठहरने का किराया पहाड़गंज के होटलों से भी महंगा था। और रहा सवाल गाँव का तो ? दिल्ली के जिस इलाके में अपना जीवन गुजार रहा था वह गाँव ही कहलाता था। ऐसा इलाका जहाँ बिल्डिंग्स और महंगाई आसमानी थी फिर भी नाम था गाँव।

यानी उत्तराखंड के महंगे पहाड़ और यश चोपड़ा की फिल्मों वाला पंजाब का गाँव, दोनों ही मेरी पहुंच से बाहर थे। सो मैंने अपने ही पुश्तैनी गाँव की राह ली जो कि यूपी के अवध की तराई में था। यूपी का वही गाँव जिसमें मैं पैदा तो हुआ था पर कभी रहा नहीं था। और जिससे मुझे एक अनजानी चिढ़ थी दिल्ली में रहते हुए भी। उन्हीं गाँव वालों के घर जा रहा था जो दिल्ली में अपनत्व के कारण यँ ही अकारण हमसे मिलने चले आते थे। पर उन्हें देखकर मैं जल-भुन जाया करता था और उनके रहन-सहन तथा पहनावे को देखकर कहता था "देहाती कहीं के"।

अचानक दिल्ली से गाँव जाने के लिए रेल आरक्षण मिलना मुश्किल था।

दिल्ली के नकली गाँव से अपने असली गाँव जाने के लिए मैंने अपना सामान पैक किया दिल्ली को हसरत भरी निगाह से देखकर एक मारुफ शायर का शेर पढ़ा-

"कुछ तो तेरे मौसम ही मुझे रास कम आये,
और कुछ मेरी मिट्टी में बगावत भी बहुत थी"।

दिल्ली के रेलवे स्टेशन से ट्रेन में सीट न मिलने की वजह आनंद विहार से यूपी रोडवेज की बस पकड़ी और फिर बस अड्डे से बस के बाहर आते ही "वेलकम टू यूपी"। रात भर के सफर के बाद सुबह-सुबह ही मैं अपने गाँव पहुँच गया। वही गाँव जिसका रेशा-रेशा खुरच कर अपने वजूद से मैं काफी पहले ही उतार चुका था। उतारना क्या? वास्तव में दिल्ली में पले-बढ़े होने के कारण गंवई रंग और देहातीपन मैंने खुद में कभी आने ही नहीं दिया था। मुझे तो दिल्ली के अपने उस इलाके से भी चिढ़ हो जाती थी जब साइनबोर्ड पर इलाके के नाम के आगे गाँव लगता था। मैं मन ही मन बुदबुदाता "हे भगवान, ये दिल्ली जो कॉलोनी और पुरी के उपनामों से भरी हुई थी। वहाँ पर मेरे हिस्से में गाँव का ही निवास आना था"। जिस गाँव शब्द से ही मुझे इतनी चिढ़ थी आज मैं उसी गाँव की पनाह में था। गाँव, गंवईपन, ग्रामीण और देहातीपन से मुझे एक खास किस्म की खीझ रहा करती थी।

वैसे अब दिल्ली से भी खासी बेजारी थी। सो गाँव में मन लगने के आसार थे मगर गाँव के अपने रंग-रंग भी थे।

गाँव पहुँचा तो कुल-खानदान के लोगों ने आत्मसात कर लिया। वही गाँव जो मेरे लिए शर्म था मगर गाँव के अपने कुनबे के लोगों के लिये अब मैं गर्व था। गाँव में मुझे मिले रामजस काका जो मेरे ही समवय थे मगर रिश्ते में काका लगते थे। वह पैदा तो मुंबई में हुए थे और शुरू के कुछ वर्षों तक मुंबई के कान्वेंट स्कूल में पढ़े थे मगर बाद में समय का चक्र ऐसा घूमा कि उनके जीवन के अगले तीन दशक गाँव में ही बीते और अब गाँव में ही रम गए थे। पहले ग्राम प्रधान हुआ करते थे मगर फिलवक्त सात वोटों से प्रधानी हार गए थे। वह जान गए कि मैं अचानक गाँव आया हूँ तो जरूर सब कुछ सामान्य नहीं है। वह रहते

तो गांव में थे मगर उनके अंदर का शहर उनके जेहन और जीवन से निकल नहीं पाया था। मेरे स्वास्थ्य की समस्या के बारे में जानकर उन्होंने मुझे तसल्ली दी कि शुद्ध हवा, पानी, भोजन का प्रबंध तो वह कर देंगे मगर गांव की पॉलिटिक्स और परसेप्शन में अगर मेंडलझा तो मैं शहरों के रास्तों से ज्यादा कन्फ्यूज हो जाऊंगा। गांव का अपना रंग-ढंग और चलन होता है। आज के गांव न तो यश चोपड़ा की फिल्मों की तरह सुंदर और हरे-भरे हैं और न ही मैथली शरण गुप्त के “अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है” की तर्ज पर सहज-सरल रह गए हैं। गांव में खूटा और नाली के विवाद के मुकदमे ढोते-ढोते दो पीढ़ियां गश्त हो जाती हैं। गांव में सब कुछ सहज-सरल नहीं होता यहाँ की बौद्धिक जुगाली “लुटियंस जोन” के स्तर की होती है। जिस तरह वहाँ एक ट्रिंक पर सरकार बनाने या गिराने के दावे किए जाते हैं वैसे ही गाँव में जो बंदा कभी जनपद मुख्यालय से बाहर नहीं गया हो वह देश के किसी भी सेलेब्रिटी और वीआईपी से अपनी अंतरंगता के किस्से सुना सकता है। मैंने उनकी बातों को सजगता से सुना और गांठ बांध ली कि किसी भी घटना या वक्तव्य पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देनी है। न ही अच्छी और न ही बुरी बस तटस्थ रहना है। अलसुबह मुझे रामजस काका अपनेसाथ घुमाने निकले। उन्होंने कहा “गाँव में कोई मेरा नाम नहीं लेता। बहुत सारे लोग मुझे रामजस के शार्ट फार्म में आरजे बुलाते हैं। कुछ लोग प्रधान जी भी कहते हैं। आओ तुम्हें गाँव के कुछ रंग-ढंग और परसेप्शन बताता हूँ”। मैंने हैरानी से उनकी तरफ देखा तो उन्होंने मुस्कराते हुए कहा -

“गांव में अगर तुम्हारे जैसे महानगर से आया हुआ आदमी महीने भर से ऊपर ठहर जाए तो गांव वाले यही समझेंगे कि इस आदमी की नौकरी चली गई है। भले ही तुम्हारे खर्चों में उन्हें कोई कटौती नजर न आये मगर वह तुम्हें बेरोजगार ही समझेंगे”। अपने को लेकर मैं कुछ जवाब दे पाता इससे पहले उन्होंने आगे कहा -

“और अगर रोज सुबह दौड़ने निकल जाओ तो गांव के लोग मान जाएंगे कि इस बंदे को शुगर हो गया है। यहाँ सुबह की दौड़ को फिटनेस से नहीं बल्कि शुगर से जोड़ा जाता है”।

अब तो मुझे भी उनकी गंवई बातों में दिलचस्पी आने लगी। मुझे मुस्कराते हुए देखकर उन्होंने उत्साह से आगे कहा -

“अगर कम उम्र में ही ठीक-ठाक कमा कर और लौट कर गांव में पर्याप्त खर्चा करने वाले इंसान के बारे में आधा गाँव मान लेता है कि शहर में जरूर यह आदमी दो नंबर का काम करता होगा। और अगर उस इंसान ने जल्दी शादी कर ली तो गांव में यह आम धारणा बन जाती है कि उस शख्स का बाहर कुछ इंटरकास्ट चक्कर चल रहा होगा इसीलिए घर वाले फटाफट शादी कर दिए”।

यह बात भी मुझे काफी मजेदार लगी।

रामजस काका ने मुस्करा कर कहा “अगर लड़के की नौकरी लगी है और लड़का किसी वजह से शादी में देर कर रहा है तो लोगों का मेन आक्षेप यह रहेगा कि या तो लड़के के घरमें बरम है या तो लड़का मांगलिक है। लोग बागकिसी गृहदोष या हैसियत से ज्यादा दहेज मांगने की बातें बनाने लगते हैं”।

मुझे उनकी बातों में काफी लुत्फ आया।

रामजस काका ने उनकी बातों से मुझे मिले लुत्फ को भांपकर आगे कहा -

“और अगर कोई शादी बिना दहेज का कर लिये तो ज्यादातर गांव में कहेंगे कि लड़की प्रेगनेंट थी पहले से ही इज़्जत बचाने के चक्कर में लव मैरिज को अरेंज मैरिज में कन्वर्ट कर दिये लोग”।

रामजस काका की इस बात से मुझे काफी मजा आया। गांव की पहली सुबह में ही सतत मुस्कान मेरे अधरों पर खेलने लगी थी।

रामजस काका ने कहा

“गांव के युवकों के बारे में दो चार मजेदार बातें और सुनो जिनसे वो दो-चार होते हैं”।

पहला अगर कोई युवक खेत के तरफ झाँकने नहीं जाता तो गांव में लोग कहते हैं कि अभी बाप का पैसा है तभी उधर खेत-वेत झाँकने नहीं जाता। दूसरे कुछ बरस बाद जब गांव वालों के तानों से आजिज होकर वही लड़का खेती-किसानी में रुचि लेने लगता है तब लोग कहते हैं कि देखा धीरे-धीरे चर्बी उतरने लगा है”।

यह विरोधाभास सुनकर मेरी हंसी छूट गई।

रामजस काका ने भी हंसते हुए कहा -

“ज्यादा हंसो मत। तुम जैसे शहर से गांव लौटे लोगों के बारे में भी आमतौर गाँव के लोग क्या समझते हैं? यह भी सुनो ध्यान से। अगर महानगर से मोटे होकर गांव आये तो गांव में यह आम राय होती है कि जरूर यह बंदा शहर में बीयर पीता होगा। और कहीं बंदा दुबला होकर गांव आये तो मान लेते हैं जरूर बंदा शहर में गांजा-चिलम पीता रहा होगा तभी उसे टीबी हो गया है और अब अपनी सेहत सुधारने गांव आया है।

मुझे अपनी दुबली-पतली सेहत का ख्याल आया तो थोड़ा अजीब भी लगा कि गाँव में लोग मुझे चिलमची या टीबी का मरीज समझेंगे।

रामजस काका ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा “और सुनो, अगर बाल बढ़ा के गांव लौटो तो गांव में काफी सारे लोगों को लगता है यह बंदा किसी ड्रामा कंपनी में नचनिया का काम करता है। हालांकि अपनी दरवाजे पर होने वाली नौटंकी नाच को भी गांव वाले आर्केस्ट्रा कहते हैं और वहीं दूसरा कोई किसी बड़े आर्केस्ट्रा में भी काम करे तो उसे नचनिया पुकारेंगे। कुल मिलाकर गाँव में बहुत मनोरंजन है। यहां कोई डिप्रेशन में नहीं आता और ये बातकहियां ही मनोचिकित्सक का काम करके मन की पीड़ा सोख लेती हैं”। तब तक किसी ने उधर से कहा “गुड मॉर्निंग आरजे”।

हू इस दिस कूल ड्यूड विथ यू “ यह कहते हुए उन्होंने मेरी तरफ हैंडशेक के लिए हाथ बढ़ाया।

“पाँय लागी मास्टर जी, यह घर का ही लड़का है कूल ड्यूड नहीं। आपके प्रिय शिष्य रामकिशोर का बेटा राम प्रकाश है। दिल्ली से हवा-पानी बदलने गांव आया है” कहते हुए रामजस काका ने मुझे उनके पैर छूने का इशारा किया। मैं उनके पैरों पर झुकने लगा तो उन्होंने मुझे बीच में रोकते हुए मेरा हाथ पकड़ लिया और हंसते हुए कहा। “हाथ मिलाओ यंग मैन। आई एम वेरी माँडर्न। पर तुम ठहरे देहाती कहीं के”। उनकी बात सुनकर हम तीनों खिलखिलाकर हंसने लगे।

लघुकथा

रमेश कुमार संतोष

विस्थापित होने का दर्द

कभी भी समाचार न देखने वाली माँ टी. वी. पर शोर सुन कर रुक गई। लग रहे धार्मिक नारो ने उसे विचलित कर दिया। वाचक भी तेज आवाज में हिन्दू .. मुसलमान... और जलते घरों के दृश्य दिखा करविस्थापित हो गये लोगों को ...कैम्प में जा रहे लोगों के दृश्य के साथ.....माँ बाप से बिछड़ गये रोते हुए बच्चे..के दृश्य के साथ .तेज आवाज में समाचार वाचन कर रहा था। माँ की चीख निकल गई। जल्दी से टी. वी. को बन्द कर दिया गया। जल्दी से पानी लाया गया। माँ अभी भी हकला रही थी। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। फोन करके घर के पास ही क्लीनिक से डाक्टर को बुला लिया गया बल्डप्रेसर देखा गया। दिल की धड़कन अभी भी तेज थी। “हुआ क्या था....?”

“कुछ भी नहीं... बस समाचार में दंगे की चीखें... और धार्मिक नारो की आवाज के पश्चात... यह सब हो गया हमने तो टी.वी. बन्द कर दिया था। “घटना क्रम को जान कर दिमागी रैस्ट की दवाई दी गई। हाथ पांव की मालिश की गई। धीरे धीरे सब सामान्य होने लगा। परन्तु माँ की आखों में से लगातार आंसूओ की धारा बह रही थी।

“क्या हो गया बजुर्गो...?” “माँ ने डाक्टर की तरफ देखते हुए कहा-“कुछ नहीं बच्चा... बस पुरानी याद आ गई ” “क्या बंटवारा याद आ गया..?”

“हाँ बच्चा... वह भी भयानक दिन थे..। एक अन्धेरी रात में हम भी मुहल्ले के लोगों के साथ एक समूह में हिन्दोस्तान की तरफ अपना सब कुछ छोड़ कर आ रहे थे। सारी रात छिपते छिपाते पैदल ही चल रहे थे हम सब छोटे थे। मेरी माँ ने मिट्टी हाथ में लेकर मेरे बालो और चेहरे पर मल दी ताकि मैं सुन्दर न लगूँ।

मैं कोई दस साल की थी और मेरे छोटे दो भाई थे। थक गए थे पर फिर भी चल रहे थे। हमें बताया जा रहा था कि बस थोड़ा सा ओर...। प्रभात होने वाली लगती थी। एकाएक एक शोर सुनाई दिया... सब भाग कर इधर उधर झाड़ियों में छिप गये। सांस रोके... बिना आवाज के... मैं और मेरे

दोनों भाई बापू के साथ एक गढ़े में झुक कर बैठ गए। सब लोग बिछड़ गए थे। हमारी माँ भी हम से बिछड़ गई थी। आवाजों का शोर दूर होता गया। हमें वहाँ बैठा कर बापू झाड़ियों से निकल कर हालात का जायजा लेने के लिए मुख्य रास्ते पर गए... परन्तु उनकी चीख से हम डर गए। सब ने एक दूसरे के मुख को हाथों से बन्द कर दिया। हम सिसक भी नहीं सके। बस दम रोके डरे हुए बैठे रहे। अभी रोशनी हुई नहीं थी। तभी झाड़ियों में हलचल सी हुई। देखा हमारा पड़ोसी अपने बच्चों के साथ आ रहा था। हम में थोड़ा सा हिम्मत आ गई....। हमारी बात को सुन कर वह हमें भी अपने साथ ले गये। दूर से हमने अपने बापू के कटे हुए ...खून से लथपथ शरीर को देख कर रोने लगे। परन्तु हमारे पड़ोसी ने हमारी बांह को पकड़ कर जबरदस्ती से वहाँ से हटा कर धसीटते हुए हमें हिन्दोस्तान ले आये। वहाँ कैम्प में माँ मिल गई थी जख्मी हालत में... परन्तु बापू फिर कभी नहीं मिला कभी नहीं... और आज टी.वी. पर फिर से वैसा ही दृश्य देख कर मैं व्याकुल हो गई। क्या अब भी वह सब कुछ हो रहा है.... अब तो हम आजाद अपने देश में रह रहे हैं....”

किसी के पास कोई उत्तर नहीं था।

“बजुर्गो यह सब राजनीतिक खेल है ”

“तब तो कहते थे अग्रेज सब कुछ करवा गये। लाखों लोगों को बेघर कर दिया... लाखों लोग मरवा दिये गये...। और अब...तो अपना देश है... सब आपने लोग है...? अपनी सरकार है...”

“बजुर्गो अब भी वोट और गद्दी के लिए लोगों के भीतर धार्मिक कट्टरता, जात- पात और नफरत फैलाई जा रही है। मुट्ठी भर लोग... ही है जो यह सब करवाते हैं। गरीब मजबूर लोगों को आगे करके आप सुरक्षा के बीच बैठ कर बस भाषण ही देते हैं।

“आप चिंता न करो सब ठीक हो जायेगा ” अब स्थिति सामान्य होने लगी थी। डाक्टर साहब ने जाने से पहले हमें ऐसे समाचार से माँ को दूर ही रखने के लिए सलाह दी। माँ के साथ हुये उस हादसे से हम भी सहम गए थे।



प्रेम और स्त्री मनोविज्ञान: एक गहरा संबंध

भारतीय समाज में प्रेम पर चर्चा एक वर्जित विषय है। दरसल सामाजिक जीवन में प्रेम को केवल स्त्री और पुरुष के बीच के आंतरिक संबंध के रूप में प्रदर्शित किया जाता है और जो दिखाया जाता है वही सब मानने की मज़बूरी भी हो जाती है।

दरसल लिंग से परे प्रेम प्रत्येक मनुष्य के जीवन का आंतरिक तत्व है मनुष्य का जीवन प्रेम के बगैर अधूरा है यह बात मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रमाणित है।

परंतु प्रेम का स्वरूप और आवश्यकताएं हर उम्र और रिश्ते की अलग अलग हैं।

कहते हैं कि स्त्री प्रेम का सागर है, स्त्री का विराट व्यक्तित्व प्रेम के विभिन्न रूपों का समावेश है। जिस प्रकार एक प्रश्न के उत्तर देने का तरीका हर व्यक्ति का भिन्न होता है उसी प्रकार प्रेम के प्रति स्त्री और पुरुष दोनों का मनोविज्ञान एक नहीं हो सकता।

स्त्री के परिपेक्ष्य में कहूं तो प्रेम एक जटिल और बहुस्तरीय भावना है जो स्त्री के मनोविज्ञान को गहराई से प्रभावित करती है। स्त्री का मनोविज्ञान प्रेम को कैसे समझता है और प्रेम के प्रति उसका दृष्टिकोण क्या है, यह एक रोचक और गहरा विषय है।

प्रेम की परिभाषा:

स्त्री की दृष्टि से प्रेम को समझने के लिए हमें स्त्री के मनोविज्ञान को समझना होगा। मनोविज्ञानी कार्ल जंग के अनुसार, स्त्री का मनोविज्ञान प्रेम को एक गहरा और भावनात्मक अनुभव के रूप में देखता है। वह प्रेम को एक ऐसा अनुभव मानती है जो उसके जीवन को गहराई और संपूर्ण अर्थ प्रदान करता है।

चूंकि हम प्रेम को स्त्री के मनोविज्ञान के संदर्भ में देख रहे हैं इसलिए हर स्त्री के जीवन में प्रेम की परिभाषा एक सी नहीं पाई गई है।

मनोवैज्ञानिकों के निरंतर शोध द्वारा स्त्री के संदर्भ में प्रेम की विभिन्न परिभाषाएं सुझाई गई हैं

प्रेम की परिभाषा: स्त्री की दृष्टि से

प्रेम एक जटिल और बहुस्तरीय भावना है जो विभिन्न तरीकों से व्यक्त की जा सकती है। मनोवैज्ञानिकों ने प्रेम की विभिन्न परिभाषाएं सुझाई हैं जो स्त्री की दृष्टि से महत्वपूर्ण

विभिन्न परिभाषाएं सुझाई हैं जो स्त्री की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। यहाँ कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिकों की प्रेम की परिभाषाएं हैं जो स्त्री के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं:

कैरेन हॉर्नी :

कैरेन हॉर्नी एक जर्मन-अमेरिकी मनोविश्लेषक थीं जिन्होंने प्रेम की परिभाषा में स्त्री की दृष्टि को शामिल किया। उनके अनुसार, प्रेम एक ऐसी भावना है जो स्त्री को अपने जीवन में सुरक्षा और समर्थन की आवश्यकता को पूरा करने में मदद करती है। वहीं नैन्सी चोडरो

(अमेरिकी समाजशास्त्री और मनोविश्लेषक)

कहती हैं कि प्रेम एक ऐसी भावना है जो स्त्री को अपने रिश्तों में गहराई और निकटता की आवश्यकता को पूरा करने में मदद करती है।

कुछ मनोवैज्ञानिक साफ़ तौर पर कहते हैं कि स्त्री अपने जीवन में सुरक्षा और देखभाल जैसे तत्वों का समावेश करने के लिए प्रेम का सहारा लेती है।

प्रसिद्ध अमेरिकी मानवविज्ञानी और मनोवैज्ञानिक हेलेन फिशर के अनुसार, प्रेम एक ऐसी भावना है जो स्त्री को अपने जीवन में रोमांस, आकर्षण और लगाव की आवश्यकता को पूरा करने में मदद करती है।

इन परिभाषाओं को पढ़ने के बाद हमें लगता है कि स्त्री के लिए प्रेम केवल दैहिक आयोजन नहीं अपितु जीवन जीने का माध्यम है।

स्त्री के लिए प्रेम एक उपवन है और वो उसकी माली।

प्रेम के चरण: प्रेम कोई पानी या शरबत का गिलास नहीं की पी लिया और पा लिया। यथार्थ में प्रेम एक यात्रा है जो तीन चरणों में विभाजित होती है।

प्रेम के विभिन्न चरणों में स्त्री का मनोविज्ञान कैसे बदलता है? वह अपने प्रेमी के साथ कैसे आगे बढ़ती है? इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, हमें प्रेम के विभिन्न चरणों को समझना होगा। मनोविज्ञानी रॉबर्ट स्टर्नबर्ग के अनुसार, प्रेम के तीन मुख्य चरण हैं: भावनात्मक जुड़ाव, प्रतिबद्धता, और अंतरंगता जिन्हें

हेलेन फिशर आकर्षण, रोमांस, और लगाव से परिभाषित करती हैं

स्त्री का मनोविज्ञान प्रेम के प्रत्येक चरण में बदलता है, आइए इन चरणों में स्त्री के स्वभाव को समझने का प्रयास करें:

1. आकर्षण चरण : प्रेम का प्रथम चरण जहां आकर्षण की भावना प्रबल होती है। इस चरण में, स्त्री का स्वभाव अधिक उत्साही और जिज्ञासु होता है। वह अपने पुरुष साथी के बारे में अधिक जानने की कोशिश करती है और उनके साथ समय बिताने के लिए उत्सुक रहती है।

2. रोमांस चरण : प्रेम के द्वितीय चरण में स्त्री कोमलता का केंद्र होती है उसके मन में प्यार की भावना होती है। इस चरण में, स्त्री का स्वभाव अधिक भावनात्मक और संवेदनशील होता है। वह अपने पुरुष साथी के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ने की कोशिश करती है और उनके साथ अपने विचारों और भावनाओं को साझा करती है।

3. लगाव चरण: प्रेम का यह चरण स्त्री के प्रेम की पराकाष्ठा दर्शाता है। वह अपने साथी के साथ एक गहरा लगाव महसूस करती है और उसके मन में एक मजबूत बंधन होता है। इस चरण में, स्त्री का स्वभाव अधिक स्थिर और सुरक्षित होता है। वह अपने साथी के साथ एक दीर्घकालिक रिश्ते की कल्पना करती है और उसके साथ अपने जीवन के तमाम सुख दुख बांटने के लिए तैयार रहती है।

प्रेम का हर चरण स्त्री और पुरुष के बीच के रिश्ते को एक नए आयाम से जोड़ता है।

प्रेम की चुनौतियां

जहां प्रेम के विभिन्न चरण हैं वहीं प्रेम को जीती स्त्री को कई कहीं-अनकहीं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उसके जीवन को प्रभावित कर सकती हैं।

मनोवैज्ञानिकों की राय के अनुसार प्रेम में स्त्री को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे :

1. भावनात्मक दबाव: प्रेम में पुरुष की अपेक्षा स्त्री अत्यधिक भावनात्मक दबाव महसूस करती है, वो हमेशा अपने साथी को खुश रखने के प्रयास के कारण तनाव में रहती है।

नैन्सी चोडरो ने कहा है कि स्त्री के रिश्तों में अक्सर भावनात्मक काम का बोझ होता है, जिससे उसे अपने भावनात्मक स्वास्थ्य पर ध्यान देने में कठिनाई हो सकती है।

2. सामाजिक अपेक्षाएँ: प्रेम के फलस्वरूप स्त्री से कई पारंपरिक भूमिकाओं को निभाने की अपेक्षा रखी जाते है जिसके कारण कई स्त्रियां अपनी व्यक्तिगत पहचान नहीं बना पाती।

3. असुरक्षा की भावना और आत्मविश्वास . की कमी के चलते कई स्त्रियां प्रेम कर समझौते को ही नियति मान लेती हैं। वे अपने साथी से खुलकर बात नहीं कर पाती और कई बार अत्यधिक मानसिक तनाव का भी सामा करती हैं। कैरेन हॉर्नी ने कहा है कि स्त्री अक्सर अपने रिश्तों में असुरक्षित महसूस करती है और अपने पार्टनर की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए दबाव महसूस करती है।

कहानियां: भारतीय साहित्य में कई कहानियां ऐसी हैं जिन्हें सुनकर प्रेम के प्रति स्त्री के मनोविज्ञान को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। स्त्री पुरुष के बीच प्रेम के बीज बोती प्रमुख कहानियों के किरदार लेला - मजनू और हीर - रांझा अब भी हमारे इस समाज में मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, रोमियो और जूलियट की कहानी प्रेम के प्रति स्त्री के दृष्टिकोण को दर्शाती है। जूलियट का प्रेम रोमियो के लिए एक गहरा और भावनात्मक अनुभव था जिसने उसके जीवन को गहराई और अर्थ प्रदान किया।

निष्कर्ष: सच कहूं तो प्रेम की शाब्दिक व्याख्या करना बहुत मुश्किल है खासकर किसी स्त्री के प्रेम को परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि प्रेम स्त्री का मूल स्वभाव है।

यदि स्त्री पुष्प है तो प्रेम उसकी सुगंध!

प्रेम और स्त्री सदा एक दूसरे के परिचायक रहें हैं क्योंकि मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि दुनियां सांसों से नहीं अपितु प्रेम में पगे हुए रिश्तों से चलती है। जीवन में प्रेम का महत्व दर्शाते हुए किसी ने कहा है...

सदा दिवाली संत की बारह मास बसंत

प्रेम रंग जिन पर चढ़ा उनके रंग अनंत

तो आज के बाद प्रेम करने से पहले समझिए अपने साथी को ,भरोसा दीजिए उसे आजीवन प्यार और सुरक्षा का ताकि प्रेम का ये मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हर रिश्ते पर कामयाबी की मोहर लगा दे।

ग़ज़ल

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

नालंदा, बिहार

वो इक वक़्त था सूरज से मेरा नाता था
मैं छुपके चांद से मिलने फ़लक पे आता था

फिर ये हुआ कि ताल्लुक भी उनसे रह न सका
वो बेवफा था मेरे ग़म पे मुस्कुराता था

कभी रही नहीं ख्वाहिश भी उसको मिलने की
वो रोज़ कोई बहाने नया बनाता था

कभी भी उसने जो मुझसे जफ़ायें कीं तो फिर
ये सच है बाग़ का इक फूल टूट जाता था

किसे ख़बर थी वही चीज़ लूट लेगा मेरी
वो सारी रात हमें नींद से जगाता था



गोवर्धन यादव

103, कावेरी नगर, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 490001

यात्रा वृत्तांत

लक्षद्वीप की सुरम्य यात्रा

भारत के दक्षिण-पश्चिम किनारे से लगभग 400 किमी.की दूरी पर अवस्थित है एक अद्भुत द्वीप, जिसे लक्षद्वीप के नाम से जाना जाता है। यही एकमात्र ऐसा द्वीप है जिस पर जाने के लिए पर्यटक को भारत सरकार से इजाजत लेनी पड़ती है। पूरा आइलैंड करीब 32 किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है।

यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य, प्रदूषणमुक्त वातावरण, चारों ओर से घिरा शांत समुद्र और इसका पारदर्शी-तल पर्यटक को अपने सौंदर्य से मंत्रमुग्ध कर देता है। समुद्र के नीले पानी के भीतर तैरती असंख्य रंग-बिरंगी मछलियाँ, द्वीप पर आच्छादित नारियल और पाम के हरे-भरे वृक्ष, चांदी-सी चमकती, मुलायम रेत एक अनोखा दृश्य उपस्थित होता है। इस द्वीप-समूह में कुल मिलाकर 36 द्वीप हैं, जिसमें से केवल तीन द्वीप कलपेनी, अगाती और अमीनी द्वीप पर ही जाने की इजाजत मिलती है। इजाजत कोच्ची स्थित कार्यालय से ली जा सकती है। पर्यटक को अपने स्थानीय पुलिस स्टेशन से इस आशय का प्रमाण-पत्र लेना होता है कि वह अपराधी-किस्म का नहीं है। यदि आप इस सुन्दरतम द्वीप की यात्रा



करना चाहते हैं तो मई से लेकर सितम्बर का समय उचित होगा। शेष समय यहाँ तीखी धूप पड़ती है। अगाती द्वीप की कुल मिलाकर आबादी करीब सात हजार है। ये कभी हिन्दू धर्मावलंबी थे, चौदहवीं सदी में इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

लक्षद्वीप भारत का एकमात्र मूँगा द्वीप है। इन द्वीपों की श्रृंखला मूँहा एटोल है। एटोल मूँगे के द्वारा बनाया गई ऐसी रचना है जो समुद्र की सतह पर पानी और हवा मिलने पर बनती है। सिर्फ़ इन्हीं परिस्थितियों में मूँगा जीवित रह सकता है।

आज यह द्वीप पर्यटन की दृष्टि से तेजी से विकास कर रहा है। पर्यटक यहाँ आकर जहाँ प्रकृति के नैसर्गिक वातावरण को निहारकर मंत्रमुग्ध हो उठता है, वहीं वह वाटर स्पोर्ट्स

यानी स्कूबा डायविंग, कायाकिंग, नौकायन, ग्लास-बोट, वाटर स्कीइंग का जमकर लुत्फ़ उठा सकता है। मलयालम, जेसेरी भाषा यहाँ के निवासियों की आम-भाषा है। अगाती और बंगारम द्वीप बहुत ही खूबसूरत द्वीप है। यहाँ बोट हमेशा तैयार मिलती है। नौकायन ही यहाँ का यातायात का मुख्य माध्यम है।

कावारत्ती आइलैंड कवरत्ती यहाँ की प्रशासनिक राजधानी है। यह सबसे अधिक विकसित भी है

साथ ही सैलनियों के लिए एक बहुत ही लोकप्रिय स्थल है। यह आइलैंड पूरी तरह हरियाली, नीले पानी और बालू से घिरा हुआ है, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। पूरे द्वीप में 52 मस्जिद हैं, सबसे खूबसूरत मस्जिद है उज्ज मस्जिद। इस द्वीप में एक्वेरियम भी है जिसमें सुंदर मछलियों की प्रजातियाँ हैं। यहाँ काँच की तली वाली नौका में बैठकर आप समुद्री दुनिया का नजारा ले सकते हैं। मिनिक्कॉय आइलैंड यह आइलैंड कवरत्ती से 200 किमी दूर दक्षिण में है। मालदीव के करीब होने के कारण यहाँ भिन्न संस्कृति के दर्शन होते हैं। मिनिक्कॉय

नृत्य परंपरा के मामले में बेहद समृद्ध है। विशेष अवसर पर यहाँ लावा नृत्य किया जाता है। यहाँ खासकर तूना मछली का शिकार और नौका की सैर आनंददायी है। अँग्रेजों के द्वारा 1885 में बनवाया गया प्रकाश स्तंभ देखने लायक है, पर्यटक यहाँ ऊपर तक जा सकते हैं। बंगारम आइलैंड यह आइलैंड बेहद ही शांत है यहां की अपार शांति पर्यटकों को खासा पसंद आती है। साथ ही यहां नारियल के वृक्ष सघन मात्रा में हैं। कालपेनी आइलैंड यहाँ तीन द्वीप हैं जिनमें आबादी नहीं है। कदमठ आइलैंड एक जैसी गहराई और दूर अनंत तक जाते किनारे कदमठ को स्वर्ग बनाते हैं। यही एकमात्र द्वीप है जिसके पूर्वी और पश्चिमी दोनों ओर लैगून हैं। यहाँ वाटर स्पोर्ट्स की बेहतरीन सुविधाएँ हैं।

लक्षद्वीप जाने से पूर्व हमने कुछ जानकारीयाँ इंटरनेट से प्राप्त की थी. ज्ञात हुआ कि इस द्वीप पर पहुँचने के दो ही साधन हैं. या तो आपको सफ़र पानी के जहाज से जाना होता है या फिर हवाई जहाज से. इस प्रमाण-पत्र के आ पर आपको अपनी उपस्थिति दर्ज करवानी होती है. बाद में यह भी ज्ञात हुआ कि पानी के जहाज अभी नहीं चल रहे हैं और वे रिपेयरिंग के लिए कुछ समय तक के लिए रोक दिए गए हैं. हमारे पास एक ही विकल्प बचा था कि हम हवाई यात्रा करते हुए वहाँ पहुँचे. पर्यटक को द्वीप में चार दिन से ऊपर रुकने नहीं दिया जाता है. साथ ही यह भी ज्ञात हुआ कि कोच्ची से सप्ताह में केवल एक दिन ही हवाई जहाज यहाँ के लिए उड़ान भरता है. यह भी पता चला कि लौटते समय हवाई जहाज कोच्ची की जगह कोझिकोड के लिए उड़ान भरेगा. ऐसी विकट परिस्थिति में हमने नागपुर के “टूर्स एन्ड ट्रेवल” का सहारा लिया और हमने अपने हिसाब से कार्यक्रम निर्धारित किए. इस यात्रा में हमें सिर्फ अगत्ति, बंगारम और तलापैनी द्वीप पर ही जाने की इजाजत मिल पायी थी.

हमारे साथ इस यात्रा में अन्य प्रदेशों से श्री अनन्त रालेगांवकर जी, एन.श्रीरामन, श्रीमती पुषा ‘श्रीरामन, सुश्री वीणा महाडिकर जी, सुश्री शालिनी डोणे जी, श्री साकेत केलकरजी, श्री सर्वोत्तम केलकरजी, सुश्री शर्मिन कौटो (Sharmeen Couto), सुश्री स्मिता श्रीवास्तवजी, सुश्री चित्रा परांजपे जी एवं दीपक गोखले जी भी शामिल थे. ये सभी अलग-अलग रुट से कोच्ची पहुँचे थे.

17/19-01-2020 (सुवर्ण जयंति एक्स. रात्रि 11.30)

17 तारीख की शाम को हम छिन्दवाड़ा से नागपुर के लिए रवाना हुए. सुवर्ण जयंती एक्स.नागपुर रात्रि साढ़े ग्यारह बजे पहुँचती है. लगातार दो दिन की यात्रा के पश्चात हम दिनांक 19 जनवरी की सुबह छः-साढ़े छः बजे के करीब कोच्ची पहुँचे. शहर की प्रख्यात श्री-स्टार होटेल सारा (SARA) में हमें रुकवाया गया. चूंकि हमारे पास आज का दिन ही शेष था, अगली सुबह हमें शीघ्रता से तैयार होकर कोच्ची एअर-पोर्ट पहुँचना था. अगत्ति के लिए फ्लाईट सुबह साढ़े नौ बजे की थी. अतः हमने इस अल्पावधि में कोच्ची शहर के कुछ प्रसिद्ध स्थलों को देखने का मानस बनाया.

इस अल्पावधि में हमने फ़ोक क्लोर म्यूजियम (FOLK CLORE MUSIUM), सेंट फ़्रांसिस जेवियर चर्च (SAINT FRANCIS ZAVIER), साइनेगोग जिब्ज मन्दिर (यहूदियों का प्रार्थना स्थल) -SYNEGOG JEWS TEMPLE- तथा डच पैलेस (DUTCH PAL-ACE) देखा और दोपहर को हमने “फ़ोर्ट व्हीन” होटेल में सुस्वादु भोजन का आनन्द लिया.

ज्ञात हो कि पुर्तगाली नाविक वास्को डी गामा 8 जुलाई 1497 में भारत की खोज में निकला था. 20 मई 1498 को वह केरल तट के कोझिकोड जिले के कालीकट

in Malabar Coast (present day Kerala state of India), on 20 May 1498. पहुँचा था. 1502 में वह पुनः दूसरी बार भारत आया था. लंबी बिमारी के बाद उसका निधन सन 1524 में हुआ. उसके मृत शरीर को कोच्ची के संत फ़्रांसिस चर्च में दफ़नाया गया था. सन 1539 में पुर्तगाल के इस हीरो के शरीर के अवशेषों को निकालकर पुर्तगाल के विडिगुअरा (VIDIGUEIRA) में दफ़नाया गया.

20-22 जनवरी--अगत्ति.द्वीप

बीस जनवरी की सुबह आठ बजे हमने होटेल सारा छोड़ दिया और सीधे एअरपोर्ट पहुँचे. सुबह साढ़े नौ बजे की इंडियन एअरलाईन की फ्लाईट अगत्ति के लिए थी. कोच्ची (कोचीन) से अगत्ति तक की उड़ान में महज एक घंटा तीस मिनट लगते हैं. उड़ते हुए हवाई जहाज अगत्ति द्वीप इस तरह दिखाई देता है.



(वायुयान से कुछ इस तरह दिखता है अगत्ति द्वीप)

हवाई अड्डे से कुछ ही दूरी पर सैलानियों के लिए हट्स बने हुए हैं. मीलों दूर-दूर तक फैली, चांदी-सी चमचमाती मखमली रेत के मध्य ये हट्स बने हुए हैं. इस मखमली रेत पर चलना एक अलग ही तरीके का अहसास दिलाता है. जगह-जगह ऊगे नारीयल के असंख्य पेड़ और पास ही लहलहाता-समुद्र आपको किसी दिव्य लोक में ले जाने के लिए पर्याप्त है. इतना अलौकिक दृश्य जिसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता. दूर-दूर तक फैली नीले पानी की चादर, क्षितिज पर रंग बिखेरता सूरज, सफ़ेद झककास रेत और रंग-बिरंगी मछलियाँ अगत्ति की असली पहचान हैं. यदि संयोग से उस दिन पूर्णिमा हो तो इस द्वीप के सुन्दरता को देखकर आप मंत्रमुग्ध होउठेंगे.





तलापैनी द्वीप

यहाँ तीन द्वीप हैं जिनमें आबादी नहीं है। इनके चारों ओर लैगून की सुंदरता देखने लायक है। कूमेल एक खाड़ी है जहाँ पर्यटन की पूरी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ से पित्ती और थिलक्कम नाम के दो द्वीपों को देखा जा सकता है। इस द्वीप का पानी इतना साफ है कि, आप इस पानी में अंदर तैरने वाले जीवों को आसानी से देख सकते हैं। साथ ही यहाँ आप तैर सकते हैं, रीफ पर चल सकते हैं, नौका में बैठकर घूम सकते हैं और कई वाटर स्पोर्ट्स का आनंद ले सकते हैं।



बंगारम आइलैण्ड

अन्य द्वीपों से यह सबसे खूबसूरत द्वीप है। यह बेहद ही शांत द्वीप है। इसकी शांति पर्यटकों को अच्छी खासी पसंद आती है। यहाँ नारियल के सघन वृक्ष आपका मन मोह लेते हैं। डालफिन, कछुए, मेंढक और रंग-बिरंगी मछलियाँ यहाँ देखी जा सकती हैं। मन मोह लेने वाले इस द्वीप पर हमने बहुत सारा समय आनन्द में बिताया और इसी के किनारे एक विशालकाय टैंट के नीचे बैठकर हम सब पर्यटकों ने सुस्वादु भोजन का आनन्द लिया। और अगति द्वीप द्वीप के लिए रवाना हो गए। चूंकि हमारे लिए 22 जनवरी की रात हमारे लिए अन्तिम रात्रि थी, अगली सुबह हमें वापिस लौट जाना था। इस अन्तिम पड़ाव पर हम सब शांत समुद्र के किनारे बैठकर शेर-शायरी और सुन्दर गीतों और कविताओं का आनन्द उठाते रहे।



(Photo Group-All members)



सूर्यास्त के समय का मनभावन दृष्य

लक्षद्वीप से लौटकर आए हुए हमें अभी ज्यादा समय नहीं बिता है। दस दिन के इस रोमांचक सफ़र की मधुर-स्मृतियाँ आज भी चमत्कृत करती हैं। चमत्कृत करते हैं वे अद्भुत क्षण, जब हम पूरब से सूरज को निकलता देख रोमांचित होते थे तो वहीं उसे अस्ताचल में जाता देख, इस आशा के साथ लौट पड़ते थे कि अगली सुबह फिर सूरज एक नया उजाला, एक नया संदेश लेकर फिर नीलगगन में अवतरित होगा। खिलखिलाता-दहाड़ता समुद्र और समुद्र के बीच कमल सा खिला द्वीप, जिसकी चांदी-सी चममचाती मुलायम रेत पर विचरण करना और नारियल के पेड़ के पेड़ से बंधे झूले में जी भरके झूलना। रह-रह कर याद आते हैं वे क्षण जब हम सब मिलकर द्वीप पर फैली असीम शांति के बीच सहभोज का आनन्द उठाते हैं। याद आते हैं वे क्षण जब हम नौका विहार करते हुए समुद्र के तल में फैली शैवाल के सघन बुनावटों को देखकर रोमांचित होते थे।



आधुनिक काल के जगमगाते साहित्यकारः सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

साहित्य जगत के आधुनिक काल के जगमगाते साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने साहित्य की महती सेवा कर इसे गौरवान्वित किया है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 21 फरवरी 1899 को महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में हुआ था। उनका वसंत पंचमी के अवसर पर जन्मदिन मनाने का श्री गणेश 1930 में हुआ। उनके पिता पंडित राम सहाय तिवारी महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। निराला की शिक्षा उच्च विद्यालय तक हुई। उन्होंने बाद में हिंदी, संस्कृत एवं बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया। जब वे 3 वर्ष की अवस्था में थे माता का तथा 20 वर्ष की अवस्था में पिता का देहावसान हो गया। इस प्रकार अपने बच्चों के अतिरिक्त संयुक्त परिवार का बोझ उन पर आ पड़ा। उनका संपूर्ण जीवन आर्थिक संघर्ष में गुजरा। निराला के जीवन की विशेषता यह है कि वे संघर्ष से नहीं घबराये, उसका डटकर मुकाबला किया। हिंदी कविता



के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा के साथ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का भी नाम प्रमुख स्तंभ में माने जाते हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने सर्वप्रथम नौकरी महिषादल राज्य में 1918 से 1922 तक की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन तथा अनुवाद कार्य की ओर पूर्णतः तन-मन से जुट गए। निराला ने 1922 से 1923 के दौरान कोलकाता से प्रकाशित समन्वय का संपादन कार्य किया। ये अगस्त 1923 से मतवाला के संपादक मंडल में कार्य किए। ये 1935 से 1940 तक का समय लखनऊ में बिताए। तत्पश्चात् निराला 1942 से जिंदगी की आखिरी सांस तक इलाहाबाद में रहकर स्वतंत्र लेखन एवं अनुवाद कार्य किया। उनकी प्रथम कविता जन्मभूमि प्रभा नामक मासिक पत्र में जून 1920 में प्रकाशित हुई थी। उनके द्वारा लिखा प्रथम कविता संग्रह 1923 में अनामिका नाम से और प्रथम

निबंध बंग भाषा का उच्चारण मासिक पत्रिका सरस्वती में 1920 में प्रकाशित हुआ।

अपने समकालीन कवियों में निराला जी ने अपनी कविता में यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिंदी में मुक्त छंद के प्रवर्तक माने जाते हैं। निराला जी ने स्वयं 1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह परिमल की भूमिका में लिखा है - "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है।"

निराला जी ने कविता, कहानी उपन्यास, बाल साहित्य, निबंध, अनुवाद, आलोचना आदि क्षेत्रों में लेखनी चलाई, लेकिन पाठकवर्ग इन्हें विशेष रूप से ख्याति कवि के रूप में दिए। उनकी रचनाओं में अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुरकुरमुत्ता, लिली, सखी, अप्सरा, अलका, प्रबंध पद्म, रामायण की अंतर्कथाएं, भक्त प्रह्लाद, महाराणा प्रताप, दुर्गेश नंदिनी, निराला रचनावली (8 खंडों में) आदि प्रसिद्ध हैं। निराला जी इस योगदान के लिए सदैव स्मरण किए जाएंगे। निराला

जी की काव्य शैली की विशेषता हैं, वे हैं - चित्रण, कौशल। उनके चित्रों में भावबोध के अतिरिक्त उनके चिंतन भी समाहित रहते हैं। उनकी बहुत सी कविताओं में दार्शनिक गहराई परिलक्षित होती है। इन पर अध्यात्मवाद एवं रहस्यवाद जैसी जीवन-विमुख प्रवृत्तियों का भी प्रभाव पड़ा है। वे विषय को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में सफल पाए गए हैं। उनकी लेखनी में विशेष तरह के साहस तथा सहजता के दर्शन देखने को मिलते हैं। यह साहस एवं सजगता ही अलग गुण होने के कारण निराला को आधुनिक युग के कवियों में विशिष्ट स्थान प्राप्त कराया है। इन्होंने अपनी काव्य भाषा में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग अधिकांशतः किया है, जहां एक ओर संस्कृत की तत्सम शब्दों से यह दुरूह है, वहीं मुहावरे का सुंदर प्रयोग भाषा को प्रभावशाली बना देता है। डॉक्टर द्वारिका प्रसाद सक्सेना के शब्दों में - "कवि निराला आधुनिक हिंदी भाषा के डिक्टेटर हैं, क्योंकि अपने भावों एवं विचारों के अनुकूल

अभिव्यक्ति में सब सफल दिखाई देती है।"

निराला की कविता भिक्षुक काफी प्रसिद्धि पाई थी। यह कविता उन्हें अमर बना दिया। इनकी रचित गीत वरदे वीणा वादिनी वर दे की ये पंक्तियां पाठकों पर छा गई थीं _

नवगति, नव लय, ताल छंद नव
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृंद को,
नव पर नव स्वर दे।
वर दे वीणा वादिनी वर दे !

इनके द्वारा लिखित कविता भारतीय वंदना की पंक्तियां हैं _

तरु _ तण वन _ लता वसन
अंचल में वचित सुमन
गंगा ज्योतिर्जल _ कण
धवल _ धार हार लगे!

निराला द्वारा लिखित कविता ध्वनि की यह पंक्तियां पाठकों को आत्म विभोर करती हैं _

हरे _ हरे ये पात,
डालियां, कलियां, कोमल गात।
मैं ही अपना स्वप्न _ मृदुल _ कर
फेरूंगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का स्वर्गवास 15 अक्टूबर 1961 को इलाहाबाद में हो गया। ये संघर्षशील एवं प्रतिभाशाली साहित्यकार सदा _ सदा के लिए हमलोगों से बिछड़ गए, लेकिन उनकी कृति की कीर्ति हमेशा लहराते रहेगी। इन पर चरितार्थ होता है।

किसी शायर ने ठीक ही कहा था _

"यू तो दुनिया के समंदर में, काफी खलां मकां होता नहीं।
लाखों मोती है मगर, इस आब का मोती मिलता नहीं।"

**भारतीय पुरुष जीवन में नारी का
जितना ऋणी है, उतना कृतज्ञ नहीं हो
सका। अन्य क्षेत्रों के समान साहित्य में
भी उसको स्वभावगत संकीर्णता का
परिचय मिलता रहा है।**

महादेवी वर्मा

बृज राज किशोर 'राहगीर'

मेरठ (उ.प्र.)



एक प्रश्न

लड़कियाँ

अब छुई-मुई नहीं रहीं।
वे पढ़ती-लिखती हैं,
काबिल बनती हैं।
वे नौकरी करती हैं,
वे व्यापार करती हैं,
वे करती हैं
मुश्किल से मुश्किल काम।

लड़कियाँ

अब अबला नहीं रहीं,
वे सबल हैं, सशक्त हैं।
वे लड़ती हैं
परिवार से,
समाज से,
दुनिया-जहान से
और बनाती हैं
अपने लिए रास्ते।

पर एक प्रश्न

मुझे भीतर तक झकझोरता है,
बार-बार, लगातार।
यही सशक्त लड़कियाँ
क्यों कमजोर पड़ जाती हैं
एक दुष्ट बलात्कारी के सामने?
वे क्यों नहीं फोड़ डालती उसका सर?
क्यों नहीं नोच डालती उसका चेहरा
अपने तीखे नाखूनों से?
क्यों नहीं उसकी आँखों में घुसा देती
अपनी उंगलियाँ?
उस विपदा काल में
क्यों उनका साहस दे जाता है जवाब?
क्यों, आखिर क्यों?



छत की बालकनी से

"मैंने फिर से पंखे की तरफ देखा।"

आशी ने कैमरे की रिकॉर्डिंग बंद करते हुए खिड़की से झांक कर देखा, बारिश अब भी नहीं थमी थी। नीचे सड़क पर झाग की तरह उड़ती सफेद कारें थीं, लोगों के पास भागने की हड़बड़ी थी। लेकिन उसके पास वक्त था। ढेर सारा वक्त। और वो लड़का, जो अभी-अभी उसके सामने से बिना कुछ कहे बाथरूम में घुसा था — ऋत्विक। एक पेंटर, जो ब्रश से नहीं, अपनी खामोशी से कैनवस रंगता था।

उनकी लिफ-इन रिलेशनशिप को चार साल हो चुके थे। ना शादी की बात, ना बच्चों की चिंता। उन्होंने कभी यह तय नहीं किया कि सुबह किसे उठना है या रात को दूध कौन लाएगा। जिंदगी एक तरह की 'अनडिफाइन्ड फ्रेंडशिप' थी, जो किसी पब्लिक टैग से परे थी। और शायद इसी में उनकी आज़ादी थी।

"आशी! मेरे ब्रश कहाँ हैं?"

बाथरूम से भीगी आवाज़ आई।

"तुम्हारे ब्रश हमेशा वहीं होते हैं जहाँ तुम्हारी उम्मीदें नहीं होती।"

उसने मुस्कराकर जवाब दिया, लेकिन फिर खुद ही उठकर अलमारी में से वो नीला मग निकाला जिसमें ऋत्विक अकसर अपनी पेंटब्रश रखता था।

ऋत्विक जब पहली बार उससे मिला था, तब वो सिर्फ एक ब्लॉगर थी — कॉलेज की कहानियाँ, ब्रेकअप जर्नी, बॉडी पॉज़िटिविटी, और फिर 'मेट्रो स्टेशन के पास फ्री कडल' जैसे वीडियोज़ पोस्ट करती थी। लोग उसे समझते नहीं थे, और वो चाहती भी नहीं थी कि कोई समझे।

"ये दुनिया समझने के लायक नहीं, ये देखने के लायक है। जैसे कैनवस।"

— ऋत्विक का पहला वाक्य था, जब उसने आशी को एक पार्टी में पहली बार देखा था।

उनकी मुलाकात एक एन जी ओ पार्टी में हुई थी — 'आवाज़' नाम का एक छोटा ग्रुप, जो स्लम बच्चों को आर्ट और डिजिटल लर्निंग सिखाता था। वहाँ दोनों को पब्लिसिटी से कम और सच्चे काम से ज्यादा लगाव था।

"हम दूसरों के लिए अच्छा करते हैं क्योंकि हमें खुद से दूर भागना होता है,"

ऋत्विक ने एक बार कहा था, जब उन्होंने रात को छत पर बैठकर 'क्राईसीस ऑफ थर्टी समथिंग' टॉपिक पर बात की

थी।

"मैं खुद से दूर नहीं भाग रही, मैं खुद को एक्सपोज़ कर रही हूँ,"

आशी ने जवाब दिया था।

उनके बीच बहसें अक्सर होती थीं। लेकिन झगड़े नहीं। दोनों एक-दूसरे की राय से असहमत हो सकते थे, लेकिन नफ़रत का कोई कॉन्ट्रैक्ट नहीं था उनके बीच।

एक बार ऋत्विक तीन दिन के लिए कहीं चला गया था। बिना बताये। आशी ने कॉल किया, नहीं उठाया। मैसेज किया, कोई रिप्लाई नहीं।

तीसरे दिन, रात को 2:11 पर दरवाज़ा खुला।

"मैं मंडी गया था। रंग खरीदने। मोबाइल घर पर ही रह गया।"

उसने जैसे कुछ नहीं हुआ, वैसे ही कहा।

"और मैं यहाँ तुम्हारे बिना गुमशुदा हो गई थी,"

आशी का जवाब गुस्से में नहीं, टूटे हुए विश्वास की तरह आया था।

ऋत्विक कुछ नहीं बोला, बस उसके पास बैठ गया। और दोनों बिना कुछ कहे चाय पीते रहे।

"कुछ रिश्ते प्रेम के विस्तार नहीं, मौन के विस्तार से बनते हैं। जहाँ हर शब्द गैरज़रूरी होता है, और हर मौन पूरी किताब होता है।"

उनका फ्लैट — एक छोटा सा वन बी एच के था, जिसका हॉल कभी पार्टी जोन बनता था तो कभी क्लास रूम। ऋत्विक दीवारों पर स्केच बनाता, आशी ब्लॉग के लिए शूट करती। उनका बिस्तर कभी-कभी रात भर फर्श पर पड़ा रहता, क्योंकि कुछ रातें बिना अलार्म बीतती थीं — शराब, स्मोक, सेक्स और उसके बाद गहरी नींद।

"क्या हम रिस्पॉन्सिबल नहीं हैं?"

एक बार आशी ने पूछा था जब किसी ने उनके यूट्यूब पर कमेंट किया:

"लिफ-इन और पार्टी के नाम पर समाज को क्या दिखा रहे हो?"

"हम उतने ही रिस्पॉन्सिबल हैं जितना कोई शर्ट पहनकर ऑफिस जाने वाला आदमी, जो वीकेंड में बीवी को धोखा देता है।"

ऋत्विक की यह बात आशी के अगले वीडियो का टाइटल बन गई "Hypocrisy in Responsibility: A Sunday Rant."

आशी का एक वीडियो वायरल हो गया — एक लड़की जो अपने पापा के खिलाफ जाकर लिव-इन में रह रही थी, लेकिन हर महीने, उसके पापा की पेंशन से उसके घर राशन आता था। वीडियो में आशी ने वो लड़की नहीं, अपनी माँ को शामिल किया — एक शांत, बुजुर्ग महिला, जो व्हाट्सऐप पर सिर्फ गुड मॉर्निंग फॉरवर्ड करती थीं और जानती थीं कि उनकी बेटी किसके साथ रहती है।

"माँ, तुम्हें दिक्कत नहीं?"

"दिक्कत तब होती है जब तुम अपने सपनों से समझौता करती हो। लड़के से नहीं।"

वो वीडियो सिर्फ वायरल नहीं हुआ, एक आंदोलन बन गया। लोगों ने कमेंट्स में लिखा — "तुमने हमारे डर को आवाज़ दी है।"

लेकिन उस रात आशी बहुत रोई। क्योंकि माँ की आँखों में एक न दिखने वाला खालीपन था।

ऋत्विक ने सिर्फ उसका हाथ पकड़ा। और कहा,

"कभी-कभी माँ का मौन, पिता की चुप्पी से ज़्यादा बोझ बनता है।"

2

उनकी दुनिया में दो चीज़ें स्थायी थीं—रात और रंग। सुबहें सिर्फ उन लोगों के लिए होती थीं जो जीवन को अलार्म से जीते थे। आशी और ऋत्विक के लिए सुबहें अक्सर दोपहर बनकर आती थीं। वो अक्सर कहते थे,

"सच तो ये है कि दुनिया हमें दिन में देखती है, पर हम रात में जीते हैं।"

उस रात भी कुछ ऐसा ही था। दिल्ली के हौज़ खास विलेज की एक छत पर, जहाँ पार्टी चल रही थी। आशी ने लाल बॉडीकॉन ड्रेस पहनी थी, और कैमरे के लिए नहीं, सिर्फ अपनी आँखों के लिए मेकअप किया था। ऋत्विक हमेशा की तरह बेज शर्ट में, कम बोलता हुआ।

"तुम यहाँ क्यों आए हो?"

एक लड़की ने ऋत्विक से पूछा, जिसे वो कॉलेज के दिनों से जानता था — सिया।

"पार्टी का निमंत्रण था, और मैं इन्कार नहीं कर पाया।"

उसने जवाब दिया, पर उसकी आँखें आशी को ढूँढ रही थीं।

"तुम बदले नहीं हो ऋत्विक... अब भी भीड़ में अकेले हो।"

सिया ने कहा।

और ऋत्विक ने मुस्कुराकर कहा,

"भीड़ में अकेले रहना, सबसे सच्चा अकेलापन होता है।"

आशी दूसरी ओर बार के पास थी। एक हाथ में वाइन, दूसरे में अपना फोन — उसकी इंस्टा स्टोरीज़ उसी समय लाइव जा रही थीं।

"गेस व्हाट गाइज, इस पार्टी में आज डेली के हिडेन रिबेल पेंटर भी आया है... मि. ऋत्विक खुदा।"

उसने कैमरे को ज़ूम किया। ऋत्विक ने दूर से ही देखा और सिर झटका दिया। उसे ये सब पसंद नहीं था — लाइमलाइट, लाइक्स, लाइव स्टोरीज़। लेकिन वो जानता था, आशी वही थी जिसे उसने चाहा था — बिना डर के,

बिना पर्दे का सिया ने आशी को नमस्ते कहा।

"तुम्हारे वीडियो बहुत दमदार होते हैं। समाज के दोहरेपन को बहुत अच्छे से एक्सपोज़ करती हो।"

आशी ने सिया को ऊपर से नीचे देखा। एक सजी-संवरी कॉर्पोरेट लड़की, जिसके हाथ में मर्सिडीज की चाबी थी और दिल में असुरक्षा।

"थैंक्स। वैसे तुम कौन हो?"

"सिया, ऋत्विक की पुरानी दोस्त।"

उस पल में जो चुप्पी आयी, वो 10 सेकंड लंबी थी — पर उसने बहुत कुछ कह दिया।

"अच्छा..।"

आशी ने मुस्कुरा कर जवाब दिया।

सिया मुस्कराई नहीं। क्योंकि उसे अहसास हो गया था कि ऋत्विक सिर्फ उसका अतीत नहीं था, बल्कि किसी का वर्तमान था — और शायद भविष्य भी।

पार्टी के शोर में ऋत्विक अकेले खड़ा था। उसके मन में एक द्वंद चल रहा था — क्या वो सचमुच इस भीड़ का हिस्सा है? क्या ये सब अब भी उसका हिस्सा है?

"तुम्हें पता है, कभी-कभी लगता है मैं तुम्हारे चैनल का कैरेक्टर भर हूँ।"

उसने आशी से कहा, जब दोनों पार्टी से बाहर आए।

"क्या मतलब?"

"मतलब, तुम शूट करती हो, मैं रहता हूँ। तुम बोलती हो, मैं महसूस करता हूँ। लेकिन क्या हमने कभी 'हम' के बारे में सोचा?"

आशी ने एक लंबा सिगरेट खींचा और कहा,

"हम" जैसे शब्द मुझे जकड़ते हैं ऋत्विक। मैं एक नाम, एक टैग, एक बंधन नहीं बनना चाहती।"

"तो हम जो जी रहे हैं, वो क्या है?"

"आज का सच। कल का क्या पता।"

ऋत्विक चुप रहा। वो जानता था, आशी को खोने का डर अब भी था, लेकिन उससे जुड़ने की हिम्मत नहीं।

अगले दिन दोनों एक एन जी ओ प्रोजेक्ट पर गए — "रंगसाज़", जिसमें स्लम के बच्चों को चित्रकला और मीडिया एक्सपोज़र दिया जाता था। आशी ने एक छोटी लड़की, जो पहली बार कैमरा पकड़ रही थी, से पूछा —

"क्या बनना चाहती हो?"

"आप जैसा," लड़की ने कहा।

"पर तुम्हारी मम्मी को बुरा नहीं लगेगा?"

"मम्मी कहती हैं — लड़की कुछ भी बन सकती है। सिर्फ बहू मत बनना जल्दी से।"

आशी हँसी, पर फिर अचानक अंदर कुछ चुभा।

उधर ऋत्विक बच्चों के साथ ब्रश चला रहा था। एक लड़के ने पूछा —

"भैया, आप पापा हैं?"

"नहीं,"

ऋत्विक हँसा।

"तो आपके बच्चे क्यों नहीं हैं?"

ऋत्विक ने पल भर को आशी की ओर देखा, फिर कहा —
 "कभी-कभी इंसान खुद ही बच्चा होता है, उसे और किसी को बड़ा नहीं करना होता।"
 बच्चा कुछ नहीं समझा, पर उसने मुस्कुरा दिया।
 रात को घर लौटते हुए, दोनों एक टैक्सी में थे। चुपचाप।
 खिड़की से बाहर भागती लाइट्स, जैसे किसी थियेटर की
 स्लाइड शो हों।
 "ऋत्विक..."
 "हां?"
 "अगर मैं कभी तुम्हारे बिना चली जाऊं तो?"
 "तो शायद तुम पहली नहीं होंगी, लेकिन मैं आखिरी बार
 खुद को रंगहीन मानूंगा।"
 "तुम्हारी बातें मेरी कहानियों की लाश होती हैं,"
 आशी ने कहा।
 "और तुम्हारी कहानियाँ मेरी भावनाओं की कब्रगाह।"
 और फिर टैक्सी चुप रही।

3

नई दिल्ली की वो सर्दी कुछ अलग थी। न बारिश थी, न
 कोहरा, पर हवा में कुछ गीला था — जैसे किसी रिश्ते की
 चुप्पी। आशी ने दो बैग पैक किए। कैमरा, लैपटॉप,
 डायरियां, और कुछ पर्सनल चीजें। पहाड़ों की यात्रा कोई
 ब्रेक नहीं थी, ये एक डॉक्यूमेंट्री असाइनमेंट था —
 "Women Who Lead, But Never Scream."
 "तीन हफ्ते।"
 उसने ऋत्विक से कहा।
 "बस तीन?"
 "तुम्हें मेरा जाना खलता है?"
 "तुम्हारा होना अच्छा लगता है। ना होना खलता नहीं,
 खाली कर देता है।"
 ऋत्विक ने धीरे से कहा।
 "डोट वेट फॉर मी। पार्टी करो, पेंटिंग करो, जीयो।"
 "मैं जीने का हुनर तुम्हारे जाने के बाद सीखूंगा शायद।"
 आशी मुस्कुराई नहीं, बस उसकी आँखों में कुछ चमका,
 और वो टैक्सी में बैठ गई।

पहाड़ों में बर्फ गिर रही थी, और आशी ने पहली
 बार एक महिला प्रधान गांव देखा। वहाँ की महिलाएं ही
 मुखिया थीं, रूलर थीं, और रीढ़ थीं पूरे समाज की।
 "यहाँ मर्द अपने बच्चों को पालते हैं?"
 उसने पूछा।
 "हाँ, क्योंकि महिलाएं जंगल, जल और पंचायत चलाती
 हैं," एक लड़की ने कहा।
 रात को, जब वो कमरे में अकेली थी, उसने पहली बार
 अपने ब्लॉग में कुछ अलग किया — उसने ऋत्विक के
 बिना शूट की गई फुटेज नहीं काटी।
 कैमरा ऑन था, और आशी बोली —
 "प्यार कभी ज़िम्मेदारी से नहीं डरता, डरता है उस
 खालीपन से जो दूरी लाती है।"

उधर दिल्ली में ऋत्विक एक पुरानी दीवार पर म्यूरल बना
 रहा था — "भविष्य के रंग।"
 उस दीवार पर उसने कई बच्चों को उनके सपनों में रंगते हुए
 दिखाया। एक लड़की को कैमरे के साथ, एक लड़के को रंगों
 के बीच।
 एन जी ओ के बच्चों ने उससे पूछा —
 "भैया, दीदी को मिस कर रहे हो?"
 ऋत्विक ने ब्रश नीचे रखा और कहा —
 "प्यार करना आसान होता है, पर उसे चुपचाप निभाना
 सबसे मुश्किल कला है।"
 बच्चों ने ताली बजाई, जैसे कुछ गूढ़ समझ लिया हो।
 उस रात घर लौटकर, ऋत्विक ने पहली बार कैमरा ऑन
 किया और एक डायरी रेकॉर्ड की
 "आज मैंने तुम्हारे जाने के बाद पहली बार सफेद रंग
 इस्तेमाल किया — वो रंग जो सब कुछ छुपा लेता है, और
 सब कुछ कह देता है।"

तीसरे हफ्ते आशी को एक संदेश मिला —

"कल बच्चों का म्यूरल ओपनिंग डे है। नहीं आ सको तो कोई
 बात नहीं। दीवार तुम्हें याद रखेगी।"
 वो नहीं जा पाई, पर रात को उसने गुपचुप दिल्ली लौटने
 की फ्लाइट पकड़ ली। अगले दिन जब वो दीवार के सामने
 पहुँची, तो वहाँ भीड़ थी — बच्चे, एन जी ओ स्टाफ,
 मीडिया। दीवार पर उसका चेहरा नहीं था, पर एक लड़की
 थी — एक कैमरे के साथ, उसके जैसा बाल, उसकी जैसी
 मुस्कान।
 "ये कौन है?"
 उसने एक बच्चे से पूछा।
 "भाभी!"
 बच्चा बोला।
 आशी मुस्कुरा दी। शायद पहली बार किसी टैग ने उसे
 तकलीफ नहीं दी।

ऋत्विक उसे देख कर चौंका, लेकिन कुछ
 कहा नहीं। बस पास आया और बोला —
 "तुम्हें पता है, तुमसे जुड़े बिना जीने की कोशिश बहुत
 थकाऊ है।"
 "और मैं ये जानकर थक गई कि मैं तुम्हारे बिना भी जी
 सकती हूँ — पर जीना और महसूस करना दो अलग चीजें
 हैं।"
 फिर दोनों चुप रहे।
 "मैं वापस नहीं रहूंगी, ऋत्विक,"
 आशी ने कहा।
 "पता है। पर तुम अगर कभी वापस आई, तो ये दीवारें तुम्हें
 पहचान लेंगी।"
 "और अगर मैं लौटकर भी ना पहचानूँ तो?"
 "तब मैं तुम्हारे लिए एक नई दीवार बनाऊंगा — जिसमें
 सिर्फ तुम रहो, और कोई नहीं।"
 कुछ दिन बाद, दोनों फिर से अपने-अपने शेड्यूल में लौट
 आए। अब भी लिव-इन था, अब भी अलग-अलग रूम, अब
 भी कोई भविष्य की योजना नहीं। पर अब एक बदलाव था

— वे अपनी दूरी को प्यार की कमी नहीं मानते थे। अब ऋत्विक् देर रात आशी के कमरे के लेंस पर हाथ रखकर कहता —

“आज रिकॉर्ड मत करो, बस सुनो।”

और आशी कहती —

“आज तुम जो भी बोलोगे, वो अगली फिल्म का हिस्सा नहीं होगा — सिर्फ मेरी यादों में रहेगा।”

4

दिल्ली की शामों में अजीब-सी भीड़ होती है — ट्रैफिक की नहीं, इमोशनस की। आशी एक क्लाइंट कॉल में उलझी थी। उसकी यू-ट्यूब डॉक्यूमेंट्री ने नेशनल अवॉर्ड जीता था और एक इंटरनेशनल कंपनी ने उसे 2 साल के मुंबई-बेस्ड कंटेंट हब का हेड बनने का ऑफर दिया था। उधर ऋत्विक् की एक पेंटिंग फ्रेंच आर्टिस्ट द्वारा खरीदी गई। इनबॉक्स में एक मेल था

— “वी ऑफर यू ए सिक्स मंथ रेजिडेंसी इन पेरिस, आल एक्सपेंसेस कवर्ड।”

दोनों के पास वो था जो कभी उनके सपने हुआ करते थे। अब दोनों छत पर थे — हाथों में अलग-अलग किस्म की चुप्पी।

“मुंबई दो साल का कॉन्ट्रैक्ट है,”

आशी ने कहा।

“और तुम्हारा?”

“छह महीने, शायद ज्यादा भी।”

“क्या तुम चाहते हो कि हम बात करें?”

उसने पूछा।

“बात करने से ज्यादा अच्छा है... समझ लेना।”

दोनों ने एक-दूसरे को देखा — जैसे दो कलाकार अपने ब्रश थामे कैनवास पर खड़े हों, पर कोई रंग ना छुएं।

अगली सुबह आशी ने कमरे में एक लिफाफा रखा। उस पर लिखा था —

“संभाल कर रखना, इसमें मैं हूँ। पूरी की पूरी।”

अंदर एक हार्ड डिस्क थी — उसके सारे अनएडिटेड फुटेज, नोट्स, डायरी रिकॉर्डिंग्स, और सबसे खास — एक डाक्यूमेंट्री जिसका टाइटल था:

“Loving Someone Who May Never Belong”

उसी शाम ऋत्विक् ने अपनी सबसे बड़ी पेंटिंग आशी के कमरे की दीवार पर बनाई —

एक लड़की कैमरे में झाँकती हुई, पीछे अधूरी इमारतें, और उस इमारत पर लिखा —

“मुंबई कभी घर नहीं रही, सिर्फ एड्रेस रही।”

कुछ सप्ताह बाद...

दो अलग शहर। दो अलग ज़िंदगी।

मुंबई में आशी की सुबहें फास्ट ट्रेक्स और शूटिंग लिस्ट से शुरू होती थीं। उसकी बालकनी अब समंदर देखती थी — लेकिन आवाज़ें अनसुनी रह जाती थीं। कभी-कभी वो कैमरा ऑन करती और कहती —

“आज रिकॉर्ड नहीं करूंगी, आज बस सुनूंगी — तुम्हें।”

पेरिस में ऋत्विक् कैफे की खिड़की से बच्चों की ड्राइंग देखता था।

उसने एक इंस्टॉलेशन बनाया — “द अनशेयर्ड रूम” — दो कमरे, एक मेज़, दो कुर्सियाँ, बीच में एक ट्रांसपेरेंट दीवार।

तीन महीने बाद...

एक रात दोनों ने एक ही वक्त पर वीडियो कॉल की रिक्रेस्ट भेजी। ऋत्विक् ने पहले बात शुरू की —

“अगर मैं कहूँ कि वापस आ रहा हूँ, तो क्या तुम मिलोगी?”

“अगर मैं कहूँ कि मेरा कॉन्ट्रैक्ट साइन नहीं हुआ... तो क्या तुम दिल्ली लौटोगे?”

चुप्पी। लंबी। धड़कनों से भरी।

फिर दोनों हँसे — एक थका हुआ, पर ज़िंदा हँसी।

“हम दोनों ने जो चाहा वो मिल गया, पर जिस खुशी की बात करते थे, वो शायद एक भ्रम था,”

आशी ने कहा।

“नहीं,”

ऋत्विक् बोला,

“वो भ्रम नहीं था। वो बस एक साथ रहने की ईमानदार कोशिश थी।”

अगले दिन, आशी ने अपनी बालकनी से कैमरा ऑन किया और पहली बार लाइव गई।

“हाय एवरी वन. ये वीडियो थोड़ा अलग है... आज मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहती हूँ — एक लिव-इन की कहानी, जिसमें दो लोग साथ रहते थे, पर एक-दूसरे की परछाई बनने से डरते थे।”

उसकी आवाज़ काँपी, आँखें नम हुईं — लेकिन मुस्कान वही थी जो ऋत्विक् के सामने खुलती थी।

“हम दोनों आज भी प्यार करते हैं। लेकिन हम में से कोई एक, दूसरे की ज़िंदगी का 'ब्रेक' नहीं बनना चाहता।”

उस दिन वो वीडियो वायरल नहीं हुआ — पर ऋत्विक् के पास लिंक ज़रूर पहुँचा।

उसने कमेंट किया —

“और मैं हमेशा वो इंसान रहूँगा जिसने तुम्हारे कैमरे के पीछे तुम्हारी आँखों को सबसे पहले प्यार किया।”

कुछ महीनों बाद...

दिल्ली। एक आर्ट एग्जिबिशन।

ऋत्विक् की नई पेंटिंग का टाइटल था

— “कभी तुम मेरे रूममेट थी, आज मेरी थॉट प्रोसेस हो।”

और आशी के ब्लॉग चैनल पर एक नया सेगमेंट शुरू हुआ

— “जिन्हें हमने चाहा, लेकिन रोका नहीं।”

वो फिर साथ नहीं थे।

पर अगर कभी एक छत के नीचे दो कप चाय बनती, तो शायद एक कप अब भी उनके लिए होता — बिना शुगर, गर्म, और अधूरी।

5

वो दिसंबर की सुबह थी। दिल्ली की नींद भरी हुई, स्मॉग से ढकी। वो बालकनी जस की तस थी — लोहे की वही ग्रिल, कोनों में मिट्टी के गमले, और दीवार पर वो हल्का सा

धब्बा था।

आशी वापस लौटी थी। पता नहीं क्यों।

कोई औपचारिक क्लोजर नहीं था मुंबई से। ना चैनल बंद हुआ, ना ऑफर रिजेक्ट हुआ। बस एक ईमेल लिखा था — “I ’m on pause. Please allow space.”

उधर पेरिस में ऋत्विक ने भी अपना इंस्टॉलेशन अँधेरे में छोड़ दिया था और फ्लाइट पकड़ ली थी — बिना रिटर्न टिकट के। दिल्ली, दोनों को वापस खींच लाई थी — जैसे अधूरे वाक्य एक ही डॉट पर खत्म होते हैं।

उसी बालकनी में दो कप रखे थे। आशी ने कांपते हाथों से वही ग्रीन टी बनाई, जो ऋत्विक को पसंद थी। दरवाज़े की घंटी बजी। उसने साँस रोक ली। कदम दरवाज़े की तरफ बढ़े — धीमे, संकोच से भरे।

दरवाज़ा खुला — सामने ऋत्विक था, वहीं मुस्कान... लेकिन आँखें थकी हुई।

“हाय,”

उसने कहा।

“तुम आ गए?”

“तुम रुकी हो?”

ये संवाद नहीं थे — ये स्वीकार थे।

कुछ देर बाद दोनों बालकनी में बैठे।

एक लंबे समय बाद ऐसा हुआ था कि दोनों बिना कैमरे, बिना कैनवास — बस इंसान बनकर बैठे थे।

“मैं वहाँ रहते हुए हर दिन खुद से झगड़ती रही,”

आशी बोली।

“और मैं पेंटिंग्स से भागता रहा,”

ऋत्विक ने जवाब दिया।

“हम क्या ढूँढ़ रहे थे?”

“शायद... एक ऐसा अकेलापन, जिसमें दूसरे की याद कम सताए।”

“मिला?” आशी ने पूछा।

“नहीं,”

उसने कहा।

“हर दीवार पर तुम्हारा चेहरा बनता रहा।”

उस शाम, आशी ने अपनी हार्ड ड्राइव प्लग की। वही जो वो जाते वक़्त छोड़ गई थी।

वो फुटेज चलने लगे — आशी का पहला वीडियो जब उसने ऋत्विक के साथ पार्टी में जाने से पहले तैयार होते हुए खुद को रिकॉर्ड किया था।

“ऋत्विक कहता है मैं ज़्यादा बोलती हूँ, पर मैं कहती हूँ — कम सुनता है।”

ऋत्विक हँसा।

“तुम सच में बहुत बोलती थी।”

“अब नहीं,”

आशी बोली।

“अब मेरी आवाज़ से मैं खुद डरती हूँ।”

“क्यों?”

“क्योंकि तुम्हारा नाम सुनते ही काँप जाती है।”

वो रात साथ बीती — उसी फ्लैट में। लेकिन अलग कमरों में। एक दीवार के इस पार आशी सोने की कोशिश कर रही थी,

तो उस पार ऋत्विक पुराने स्केचबुक पलट रहा था। पन्ने दर पन्ने, हर ड्राइंग आशी की याद से भरी थी — कभी बाल खुले, कभी कैमरा थामे, कभी पार्टी के बाद लिपस्टिक ठीक करते हुए। वो सब स्मृतियाँ थीं — पर जिनमें साँसें अब भी थीं।

अगली सुबह, ऋत्विक ने बालकनी में सफेद कैनवास लगाया।

“अब क्या बना रहे हो?”

आशी ने पूछा।

“हम।”

“हम नहीं हैं अब,”

आशी ने कहा।

“फिर भी,”

उसने ब्रश चलाते हुए कहा,

“मैं उस ‘हम’ को बनाना चाहता हूँ जो कभी ठीक से बन नहीं पाया।”

आशी बैठ गई — चुपचाप।

कुछ देर बाद उसने कहा:

“क्या हम फिर कोशिश कर सकते हैं... अलग-अलग कमरों में रहकर... लेकिन एक-दूसरे की परछाईं बने बिना?”

“एक शर्त पर,” ऋत्विक बोला,

“इस बार कोई हार्ड ड्राइव नहीं छोड़ी जाएगी।”

दिन गुज़रते गए।

आशी फिर वीडियो बनाने लगी, लेकिन अब सब्जेक्ट अलग था —

“कैसे लिव-इन सिर्फ शरीर का नहीं, आत्मा का रिश्ता होता है।”

उसने एक सीरीज़ शुरू की —

“Not married, not broken.”

उधर ऋत्विक ने एक पेंटिंग सीरीज़ शुरू की —

“A Room Between Us”

हर चित्र में दो लोग थे — करीब लेकिन जुड़े नहीं। एक भावनात्मक स्वतंत्रता का दृश्य, एक दुस्साहसिक प्रेम।

एक दिन दोनों किसी एन जी ओ वर्क के लिए फील्ड पर थे — छत्तीसगढ़ में। वहाँ एक आदिवासी लड़की थी — सुरमा। उसने पूछा:

“आप दोनों पति-पत्नी हैं?”

दोनों चुप हो गए।

ऋत्विक ने मुस्कराते हुए कहा:

“नहीं, हम एक-दूसरे के दोस्त हैं... और कभी-कभी प्रेमी।”

“कभी-कभी?”

लड़की ने पूछा।

आशी ने मुस्कराकर जवाब दिया:

“हां, जब हमारी आज़ादी हमें एक-दूसरे की बाँहों में लौटने देती है।”

दिल्ली लौटते वक़्त एयरपोर्ट की बुकशॉप से ऋत्विक ने

एक डायरी खरीदी —

उसके पहले पन्ने पर लिखा:

“अगर तुम लौट आओ एक दिन, तो जान लेना, मैं कभी गया ही नहीं था।”

आशी ने किताब देखकर कहा —

“क्या मैं उस पर एक डॉक्यूमेंट्री बना सकती हूँ?”

ऋत्विक ने कहा:

“तुम्हारा कैमरा मेरी कहानी से डरता नहीं अब।”

अब भी वो साथ रहते हैं — पर हर कमरे में एक तख्ती टंगी होती है:

“Emotions Allowed. Ownership Not.”

कभी झगड़ते हैं — तो खाने को लेकर नहीं, सीमाओं को लेकर झगड़ते हैं। कभी साथ सोते हैं — लेकिन बिना वादे किए। कभी पार्टी करते हैं — और अगली सुबह दो अलग दोस्तों को गुड मॉर्निंग कहते हैं। पर जब रात ढलती है, तो ऋत्विक की पेंटिंग में वही चेहरा बनता है, जो आशी के कैमरे में बार-बार झलकता है।

शायद यह कहानी शादी की नहीं है, पर साझेदारी की है। ये उस पीढ़ी की कथा है जो प्रेम को जगह देने में विश्वास करती है — कि कैद करने में।

लघुकथा

राम मूरत 'राही'

इंदौर (म.प्र.)

रील

"मम्मी ! अब हम दोनों स्कूल नहीं जाएँगे?" स्कूल से आते ही पलक और उसके छोटे भाई सौरभ ने अपने-अपने बस्ते टेबल पर जोर से पटकते हुए गुस्से में कहा।

"क्यों नहीं जाओगे?" सुरभि को आश्चर्य हुआ।

"हमने सुना था कि कई बच्चे अपने माता-पिता का नाम डुबोते हैं, लेकिन यहाँ तो आप दोनों ने ही..." पलक का गुस्सा कम नहीं हुआ।

"मम्मी, दीदी सही बोल रही है। आप लोगों की वजह से आज हमें स्कूल में अपमानित होना पड़ा।" सौरभ ने गुस्से से कहा। आशीष अपने कमरे से दोनों की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था। उसने कमरे से बाहर आकर सौरभ और पलक से गुस्से से पूछा - **"तुम दोनों आज क्या ऊल-जुलूल बक रहे हो, और हम दोनों ने ऐसा क्या कर दिया जो तुम्हारा नाम डूब गया?"**

"पापा, स्कूल के बहुत सारे लड़के-लड़कियाँ आज लंच टाइम में हमारा मज़ाक उड़ा रहे थे। कह रहे थे कि पलक और सौरभ के मम्मी-पापा गन्दी-गन्दी रीलें बनाते हैं।" पलक ने बताया।

यह सुनकर सुरभि और आशीष अवाक रह गए।

"हाँ, ये बात स्कूल की सभी टीचर और प्रिंसिपल मैम को भी पता चल गई है। उन लोगों ने भी आप दोनों की रीलें देखीं हैं। इसलिए कल आप दोनों को बुलाया है।" सौरभ ने बताया।

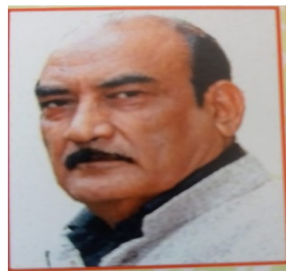
पलक ने सुरभि और आशीष की तरफ हिकारत भरी नजरों से देखते हुए कहा - **"अब समझ में आया कि आप दोनों हमें मोबाइल क्यों नहीं चलाने देते हैं ?"**

"लेकिन बेटा आप दोनों हमारी बात भी तो सुनो ?" सुरभि ने कहा।

"नहीं सुननी है।" पलक गुस्से से बोलकर अपने कमरे की ओर जाने लगी।

तभी आशीष ने उसका रास्ता रोका और कहा - **"तुम दोनों को हमारी बात सुननी ही पड़ेगी। हम दोनों जो भी कर रहे हैं, वो तुम दोनों के लिए ही कर रहे हैं। हम इतने सक्षम नहीं हैं कि तुम्हें अच्छा-अच्छा पहनने, खाने और तुम्हारे अच्छे और मंहगे प्राइवेट स्कूल को अफोर्ड कर सकें।"**

यह सुनकर पलक की आँखों में आँसू आ गए। वह आँसू पोंछते हुए बोली - **"पापा प्लीज, आप हमारा एडमिशन किसी सरकारी स्कूल में करा दीजिए।"**



मेरी जमानत कब होगी ?

मैडम देशमुख बहुत परेशान थी। डामोर सर एक भी काम कायदे से नहीं करते थे स्वयं कभीभी समय पर नहीं आते थे बोलने में कुछ ध्यान नहीं रखते थे और पूरे स्टाफ की जानकारीयाँ भी नहीं रख पाते थे। इसी बीच विभागीय स्थानतारण के दौरान पास के जिले से एक कार्मिक प्रशांत वर्मा का ट्रांसफर यहां हुआ। मैडम को जैसे ही पता चला कि प्रशांत वर्मा आफिस के काम में कुशल और अनुभवी है इनके दिमाग में एक योजना बनी कि प्रशांत वर्मा को आफिस कार्य में ही लगा दिया जाए तो यह व्यक्ति उनके सारे ऑफिस वर्क को बहुत बेहतर ढंग से मैनेज कर सकता है।

बड़ी चतुराई से डामोर सर को बहुत इकट्ठा हो गए आफिस वर्क और आने वाले समय में होने वाले आडिट का हवाला देकर समझा बुझा कर उन्हें नाइंथ टेंथ क्लासओढ़ाने की झूठी लगाते हुए प्रशांत वर्मा को ऑफिस में अकाउंट वर्क के लिये लगा दिया। बहुत तकलीफ हुई थी डामोर सर को ऑफिस झूठी की शानदार आरामी पोस्टिंग से हटकर पढ़ाने वाली हम्माली वाली झूठी पर जाते हुए, लेकिन वे प्रिन्सपल मेदां को मना नहीं कर पाए हाँ प्रशांत वर्मा के प्रति जरूर उनके दिमाग में एक द्वेष भावना घर कर चुकी थी।

वह समझ रहे थे कि यदि यह प्रशांत वर्मा नाम का आदमी नहीं होता तो उनकी आरामदायक दादागिरी वाली ऑफिस इंचार्ज की झूठीबनी रहती। उनके दिमाग में यह धारणा पक्के बन चुकी थी कि साले ये सवर्ण लोग हमारा हक छीनते रहते हैं। और वे सदैव चौकन्ने रहते थे कि कोई भी ऐसा मौका मिले जब प्रशांत वर्मा को नीचा दिखाया जा सके, उसे अपमानित किया जा सके या उनसे वापस ऑफिस इंचार्ज का पद छुड़ाकर स्वयं ले सके। उसी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अनीता डामोर नोवीं कक्षा उसी साल भारती हुई थी। अनीता डामोर पढ़ने में कुशल लेकिन बहुत नाजुक और मासूमथी एक संयोग यह भी बना था कि यह अनीता डामोर डामोर सर की भतीजी भी थी।

प्रशांत वर्मा मिलनसार हंसमुख नौजवान शिक्षक था सहज सरल और अच्छे चरित्र का। उसकी बुरी आदत यदि कोई थी तो सिर्फ एक ही थी उसे सिगरेट पीने का बहुत शौक था। जैसे ही एक पिरिएड पूरा होता वह बाहर कहीं

जाकर सिगरेट पीने की कोशिश करता। एक दो बार प्रशांत वर्मा से यह चूक भी हुई कि स्कूल के पिछवाड़े की दीवार से लगा हुआ वह सिगरेट पी रहा था उसे दीवार के अगले हिस्से में छात्राओं का टॉयलेट था। ऐसे में एक बार डामोर सर ने उसे वहां पर सिगरेट पीते देख लिया तत्काल दूसरे दिन प्रिंसिपल के सामने शिकायत प्रस्तुत कर दी। प्रशांत वर्मा गर्ल्स स्कूल के नियमों का पालन नहीं करता है उसकी गतिविधियां संदिग्ध है उसे निर्देश दिए जाएं।

स्कूल की महिला प्रिंसिपलचौकी। तत्काल प्रशांत वर्मा को जब यह बताया तो वह बहुत शर्मिंदा हुआ उसने कसम खाई कि अब वह कभी स्कूल में सिगरेट नहीं पीएगा। स्कूल से बाहर हटकर कहीं जाकर पीयेगा। डामोर सर अपनी इस हरकत से बहुत खुश थे उन्हें प्रशांत सर को नीचा दिखाने का मौका मिला था। वो हमेशा ऐसे ही मौकों की तलाश में रहते थे।

वर्ष पूरा होने जा रहा था वार्षिक परीक्षाएं आ चुकी थी। स्कूल के सारे स्टाफ को बल्कि ऑफिस वर्क करने वाले स्टाफ को भी परीक्षाओं की झूठी में लगाया जा चुका था। अप्रैल का महीना आसमान से कहर बरसाती गर्मी और परीक्षा का तनाव क्या शिक्षक और क्या छात्राएं सभी परेशान से थे। कक्षा दसवीं की सभी छात्राएं अपना पर्चा देकर बाहर निकाल रही थी उन्ही के बीच कक्षा दसवीं की ही छात्रा अनीता डामोर परेशान सी बाहर निकल रही थी। अपनी सहेली से बातचीत करते हुए उसे एहसास हो रहा था कि उसका पेपर बिगड़ चुका है यही सोच सोच कर वह बैचन सी थी। तभी न जाने क्या हुआ पेपर खराब होने के अवसाद से या पिछले रात के जागरण से अथवा वातावरण में व्याप्त गर्मी से उसे कुछ चक्कर और वह विद्यालय की सीढ़ियां चढ़ती हुई अचानक गिर पड़ी। उसके गिरने की आवाज सुनते ही आफ्रीस में अपनी कुर्सी पर बैठी प्रिन्सपल मेडम दौड़ी, कक्षा दसवीं के परीक्षा कक्ष में तैनात प्रशांत वर्मा दौड़े और अन्य दो चार छात्र भी दौड़े। प्रशांत वर्मा सर ने दूसरे छात्रों की मदद से अनीता को आफ्रीस में लगी बेंच पर लिटा दिया तभी प्रिन्सपल मेडम ने तत्काल प्रशांत वर्मा को किसी नजदीकी डाक्टर को फोन लगाने का बोला वहीं खड़े एक दो अन्य अनुभवी शिक्षकों ने सलाह दी कि अनीता को गर्मी से चक्कर आ गए होंगे उसे तत्काल हवा करना चाहिए। प्रिन्सपल मेडम ने भी सहमती दर्शाते हुए अनीता के जूते मौजे और टाई वगैरह ढीले करने के

लिए प्रशांत दर को बोला और प्रशांत सर ने बिना किसी दुराग्रह या गलत सोच के अनीता के जूते मोजे खोल दिए और उसके गले में बंधी टाई ढीली करने लगे साथी शिक्षक किताबों से हवा कर रहे थे, तभी अनीता के अंकल डामोर सर भी घटना का सुन कर दौड़ते हुए वहाँ आ चुके थे वे चिंतित होकर अनीता को आवाज लगा रहे थे तभी उनकी नजर गई प्रशांत वर्मा द्वारा अनीता डामोर के गले की टाई ढीली करते हुए। नया जाने क्या सोच कर उन्होंने तत्काल प्रशांत वर्मा को डांटा और प्रिंसिपल रूम से बाहर जाने का बोला “ आप बाहर जाइए आपको कुछ नहीं करना है यह मेरी भतीजी है मैं इसका ध्यान रखूंगा। प्रशांत वर्मा को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी वह बाहर चला गया। कुछ ही मिनटों में अनीता को कुछ कुछ होश आ गया था। कोई डॉक्टर तो तब तक नहीं आ पाया लेकिन पानी और ग्लूकोज आदि पिलाने से अनीता सामान्य होने लगी थी लेकिन तब तक डामोर सर के शैतान दिमाग में एक कुत्सित विचार ने जन्म ले लिया था उन्होंने हल्ला मचाना शुरू किया और प्रिंसिपल मैडम के सामने यह प्रश्न खड़ा किया कैसे प्रशांत वर्मा को बच्ची के बटन खोलने के लिए आदेश दिया। और यह भी कहा गया डामोर सर द्वारा कि प्रशांत सर अनीता की टाई ढीली करने के बहाने उसके शर्ट के बटन खोल रहा था और गलत हरकत कर रहा था। डामोर सर के आरोप से स्तब्ध हुई मैडम देशमुख ने तत्काल इस बात से इनकार किया कि मैंने प्रशांत सर को अनीता के शर्ट के बटन खोलने का आदेश दिया था। उनका कहना था कि मैंने सिर्फ यह कहा था कि अनीता को हवा कीजिए और उसके जूते मोजे तथा टाई ढीली कर दो टाकि गर्मी कम हो। और यह होश में आए। और प्रशांत वर्मा ने भी यही तो किया इसमें क्या गलत हुआ। लेकिन डामोर सरका यह कहना था कि प्रशांत वर्मा शिक्षक ने जानबूझकर बिना जरूरत के मेरी भतीजी के शर्ट के बटन खोलें गलत हरकत की। उन्होंने एक अनुसूचित जाति की बच्ची के साथ छेड़छाड़ की है मैं इन्हें बिल्कुल नहीं छोड़ूंगा। मैं पुलिस में रिपोर्ट करूंगा और इनके विरुद्ध कार्रवाई करूंगा।

कुछ ही देर बाद अनीता डामोर जो पूर्णतः होश में आ चुकी थी उसे डामोर सर द्वारा घर ले जाया गया। प्रशांत सर और प्रिंसिपल मैडम डामोर सर की बात सुनकर विस्मित और चिंतित थे। आधे घंटे बाद ही पता चला कि डामोर सर ने अनीता के साथ हुई गलत हरकत की रिपोर्टिंग पुलिस थाने पर कर अनीता बयान लिखवाने के लिए पुलिस थाने पर आवेदन भेजा है। और थाने के एक सहायक अधिकारी द्वारा अनीता का बयान लिया जा रहा है अपने काका के दिए निर्देश अनुसार अनीता ने बयान दिया कि परीक्षा का पर्चा बिगड़ जाने के कारण कुछ घबराहट और मौसम की गर्मी के कारण उसे चक्कर आ गया था वह सीढ़िया चढ़ते हुए अचानक गिर पड़ी तथा मुझे बहसोसही में आफ्रीस में बेंच पर लिटाया गया उसे समय मेरे बेहोशी का फायदा उठाकर प्रशांत वर्मा सर ने

बिना आवश्यकता के बिना मतलब के उसके स्कर्ट टॉप के बटन खोलने चाहे उसके साथ गलत हरकत करने के प्रयास भी किए। पुलिस विभाग के अनुसूचित जाति जनजाति थाने के अधिकारी द्वारा अनीता डामोर की शिकायत के आधार पर प्रशांत वर्मा के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया गया।

कुछ ही समय के बाद स्कूल से परीक्षा निपटाने के पश्चात अपने घर पहुंचे प्रशांत वर्मा अनुसूचित जाति जनजाति पुलिस थाना के अधिकारी के सामने खड़े थे। डामोर सर द्वारा अनीता की तरफ से लिखी गई शिकायत के आधार पर प्रशांत वर्मा के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया गया था और उसे प्रारम्भिक पूछताछ करने के लिए थाने पर बुलवा लिया गया था। यद्यपि उसे गिरफ्तार करना भी तय ही था लेकिन प्रशांत वर्मा को बताया यही गया कि उससे पूछताछ की जाना है। प्रशांत वर्मा और उसके मित्र भी समझ रहे थे कि अब उसका सरलता से बाहर आना संभव नहीं होगा क्योंकि प्रकरण में धारातीन सौ चोपन लगाई गई है पीडिता अनुसूचित जाती की होने से एट्रोसिटी ऐक्ट भी लगाया गया है और यदि पाकसों ऐक्ट भी लगा दिया गया तो मामला बहुत उलझ जाएगा वो गिरफ्तार तो होगा ही लेकिन उसको जमानत मिलना भी कठीन हो जाएगा।

पुलिस अधिकारी द्वारा बहुत सख्ती से प्रशांत से पूछताछ की गई। प्रशांत ने बार बार यह दोहराया कि उसने प्रिंसिपल मैडम के कहने से अनीता के सिर्फ जूते मोजे उतारे थे और टाई ही ढीली कर रहा था डामोर सर झूठा आरोप लगा रहे हैं। लेकिन थाने वालों ने उसकी एक ना सुनी उसे न्यायालय में पेश कर तीन दिन की रिमांड ले ली गई। प्रिंसिपल मैडम से भी पूछताछ की गई उन्होंने साफ साफ यह बयान दिया कि मैंने तो प्रशांत सर को सिर्फ जूते मोजे खोलने और टाई जरा लूज करने का कहा था शर्ट के बटन खोलने का नहीं। जिले की मीडिया और नेता लोग जागृत हो चुके थे कुछ आरक्षित वर्ग के नेता लोग जोर शोर से यह प्रचार कर रहे थे कि सवर्णों द्वारा आदिवासियों का दलितों का शोषण किया जा रहा है स्कूलों में आदिवासियों की बेटियाँ सुरक्षित नहीं है। अनुसूचित जातिजनजाती संगठन द्वारा रैली निकाली जाकर जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया जा रहा था समाचार पत्रों में भी इस खबर को बढ़ा चढ़ा कर छापा जा रहा था और तो और जिले के कई छुटभयै नेता और पत्रकार प्रशांत वर्मा के घर के चक्कर लगा लगाकर घर के सदस्यों से मिल कर उन्हें डरा भी रहे थे और उन्हें इस समस्या से छुटकारा दिलाने की बात भी कह रहे थे बदले में एक अपेक्षित सहयोग राशी के साथ। प्रशांत वर्मा की पत्नी और दोनों बेटियाँ बहुत परेशान थी दुखी थी और बेहद शर्मिंदा होने के साथ स्तब्ध भी थी। वैसे उन्हें अपने पति पर, अपने पिता पर जरा भी संदेह नहीं था कि वे किसी नाबालिग लड़की के साथ ऐसी कोई गलत हरकत करेंगे लेकिन सारे नगर में चल रही अफवाहे, समाचार पत्रों में छपी खबरें और पुलिस कस्टडी में बंद पति, सब

कुछ तो उनके विरोध में था। प्रशांत वर्मा के साले और कुछ मित्रों ने स्थिति सम्हालने और उसकी जमानत के बारे में कुछ प्रयास शुरू करने की सोची लेकिन कुछ राजनैतिक जानकारों का कहना था कि अभी माहौल बहुत खराब हो रहा है कुछ दिन चुप रहो। शिकायत करता चूंकि वर्ग विशेष से सम्बद्ध थे इसलिए शासन का कोई भी अधिकारी इस बारे में बात भी करने को तैयार नहीं था अन्य राजनैतिक दलों के नाता भी मामला आदिवासी लड़की से जुड़ा होने के कारण प्रशांत के पक्ष में बोलने को बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। कुल मिलाकर सारे माहौल में कोई भी प्रशांत वर्मा और उसके परिवार के पक्ष में खड़ा होने को तैयार नहीं था। तीन दिन बाद पुलिस द्वारा प्रशांत की न्यायिक हिरासत और मांग ली गई थी। राजनैतिक होहल्ले के चलते पुलिस विभाग द्वारा तो फिलहाल प्रिन्सपल मेडम से पूछताछ ही की गई थी लेकिन जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा नगर में चल रही राजनैतिक हलचल और वर्ग विशेष के असंतोष को देखते हुए प्रिन्सपल मेडम को सस्पेंड कर जिला कार्यालय अटेच कर दिया गया था।

प्रशांत को सपने में भी अनुमान नहीं था की प्रिंसिपल मैडम के आदेश के अनुसार उसके स्कूल की एक छात्रा जो गर्मी और अपने मानसिक तनाव के कारण चक्कर खाकर बेहोश हो रही है उसे उठाकर एक बेड पर लिटाना उसके जूते मोजे और टाइट स्कूल ड्रेस की टाई को ढीली करना उसे इतना महंगा पड़ जाएगा। इस काम के बदले उसे इस तरह से आरोपित किया जाएगा कि वह उस बेहोश लड़की के साथ उत्पीड़न की हरकतें कर रहा है। उसने कई कई बार स्कूल प्रशासन के सामने, पुलिस थाने के अधिकारियों के सामने और नेताओं के सामने बल्कि जनसामान्य के सामने अनीता डामोर के रोकर अपनी सफाई दी उसने जोर देकर कहा कि अनीता की उम्र के बराबर उसकी दो दो बेटियां उसके घर पर हैं और वह एक शिक्षक है गुरु है पिछले 15 सालों से उच्च शिक्षा कार्य में लगा हुआ है आज तक ऐसी कोई हरकत उसके द्वारा नहीं की गई है फिर उस पर ऐसे लज्जित करने वाले आरोप क्यों लग रहे हैं। अनीता खुद उसे पूरा पूरा सम्मान देती है ऐसे में यह किस तरह से कहा जा सकता है कि मैंने किसी गलत भावना से उसके शर्ट के बटन खोलने के प्रयास किए।

किन्तु उसकी इन सफाईयों का विवरण सुन कर कोई पसीजने वाला उसे नहीं मिला। प्रशांत ने एक और बात पर गौर किया था कि उसकी बातें सुनने वालों को सही लग रही थी वे समझ भी रहे थे कि कुछ छात्र छात्राओं तथा शिक्षकों की उपस्थिति में वो ऐसी हरकत कर भी नहीं सकता था फिर भी वे इस झूठी शिकायत के विरुद्ध या डामोर सर के विरुद्ध कुछ बोलना नहीं चाह रहे थे। थाने के अधिकारी और पुलिस जवान भी गुपचुप यह राय व्यक्त कर रहे थे कि चूंकि आरोप लगाने वाले एक जाती विशेष से हैं इसलिए उनके आरोप ही सही माने जाएंगे प्रशांत वर्मा के विरोध को कोई महत्व नहीं देगा। वे बरपो से

देखते आए थे कि मामला जब एस सी एस टी से जुड़ा हो तो कोई भी अधिकारी इनके विरुद्ध नहीं जाता भले ही सामान्य वर्ग का आरोपित व्यक्ति पूरी तरह से निर्दोष हो। प्रशांत स्वयं और उनकी पत्नी और परिवार के अलावा कोई भी इस घटना को सकारात्मक रूप से सोचने के लिए तैयार नहीं था प्रशांत वर्मा की पत्नी रागिनी जानती थी इस तरह से लड़कियों को छेड़ने के मामले उसके पट्टी बहुत उदासीन हैं उसके पिछले लंबे वैवाहिक जीवनकाल में उसने ऐसी कोई हरकत प्रशांत की नहीं देखी थी। प्रशांत द्वारा पढ़ाए जाने वाले क्लास के छात्र और छात्राएं बल्कि खुद अनीता भी ये समझते थे कि प्रशांत सर अपने पीरियड में पूरा ध्यान अपने विषय की पढ़ाई पर लगाते हैं और छात्रों से अनावश्यक हंसी मजाक नहीं करते। देशमुख मेडम ने भी पिछले अल्प समय में प्रशांत वर्मा में सिवा सिगरेट पीने के अन्य कोई दुर्गुण नहीं पाया था इतने सारे सकारात्मक तथ्यों के बावजूद यह तथ्य ज्यादा भारी था कि एक सामान्य वर्ग के शिक्षक ने एक वर्ग विशेष की छात्रा के साथ कुछ गलत किया। क्या गलत किया कितना गलत किया इसके बारे में स्पष्ट कहने वाले प्रत्यक्षदर्शी कोई नहीं थे सबसे महत्वपूर्ण था लड़की के अंकल जो जाती विशेष के होकर आक्रामक स्वभाव के नेतागिरी करने वाले और प्रशांत के विरुद्ध दुर्भावना पालने वाले एक मुखर व्यक्ति थे। और हमारे देश का अंधा कानून जो वर्ग विशेष के पीड़ितों के हिट में कठोर कानून बनाकर तो अच्छा कार्य करता है लेकिन उनका पक्ष लेने में अपने राजनैतिक हिट साधने के लिए किसी निर्दोष सामान्य वर्ग के व्यक्ति की बाली भी सहर्ष चढ़ा देता है। महिलाओं या लड़कियों से सेक्शुअल हेरासमेंट के कठोर कानूनों के बावजूद रसूख वाले और हैसियत वाले बड़े लोग तो कुछ भी रास्ता निकाल लेते हैं लेकिन इन्हीं कठोर कानून का सहारा लेकर किसी साजिश का शिकार हुए सामान्य निर्दोष व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है उसका मान सम्मान उसके परिवार का सुख चैन और उसका आर्थिक आधार दरकने लगता है और कोई भी उसके समर्थन में आने से बचता है।

आदमी कानूनी कार्रवाई की जाना संभावित था इसलिए एक भी स्टाफ का व्यक्ति मां के पक्ष में बोलने को तैयार नहीं था ओके अब के कुछ लोगों ने 2 दिन 4 दिन तक इस मामले में दिलचस्पी ली और उसे भूल गए याद रहा सिर्फ प्रशांत वर्मा को समय बंद है याद रहस्य प्रशांत वर्मा की पत्नी को जब समझ नहीं पा रही कि क्या उसके पति ने के अनीता डामोर के साथ ऐसी बदतमीजी की थी एक है प्रशांत वर्मा की दोनों बेटियों को उसके पापा डे है यह दुष्ट विचारों के अनीता नाम और को भी याद आते हैं प्रशांत सर उसे समझ भी नहीं आता है उसे याद भी नहीं आता है क्या प्रशांत सर ने उसके साथ कोई बदतमीजी की थी

लेकिन हां स्क्रीन स्कूल की प्रिंसिपल देशमुख मैडम को याद है उस मामले में जरा भी दम नहीं था इसी कारण कुछ दिनों बाद देशमुख मैडम को वापस बाहर कर दिया गया उनका ट्रांसफर कर दिया गया और हां को भी सब

कुछ याद है नेपाली मुस्कुराहट उनकी तनी हुई मूँछों पर अताउल का हाथ पुष्टि करता है इस बात की हम से पंगा लेगा जो भी हमसे टकराएगा हम उसे ध्वस्त कर देंगे क्योंकि भारतीय कानून हमारे साथ है डामोर सर को पुनः अवधेश करके मामलों का जिम्मेदार बना दिया गया है वे अब बच्चों को पढ़ाते नहीं हैं ऑफिस वर्क करते हैं स्टाफ के ऊपर दादागिरी से पेश आते हैं 8 महीने बीत चुके हैं चांद वर्मा की जमानत के कोई आसार अभी भी नजर नहीं आ रहे हैं एक सामान्य सा डिग्री से रहने वाला वाला हसमुख जिंदादिल प्रशांत वर्मा ऐसे अपराध में कारागार के अंतर बंद है किया तो नहीं था भी नहीं था समाज के सारे लोग भूल चुके हैं नहीं आपने तीन श्रेणियां है कारागार में बंद प्रशांत वर्मा उसकी जमानत के लिए भटकती हुई वकीलों को पैसे देती हुई उसकी पत्नी ज्योति वर्मा और अपने स्कूल में अपने से अपमानित होते हुए उसकी दोनों बेटियां यह कानून है भारतीय कानून समिता है और यह कानून के प्रावधान

अनुराग मिश्र गैर

लखनऊ

सतीश कुमार नारनौंद

हिसार हरियाणा

फिर आया ऋतुराज प्रिये

फिर आया ऋतुराज प्रिये,
फिर जागा है प्यार प्रिये ।

फिर मधुवन में कोयल कूँकी,
फिर आयी है याद प्रिये ।

फिर ये विरही मन तड़पा है,
फिर जागी है प्यास प्रिये ।

फिर समीर में मदकता है,
फिर बरसी है आग प्रिये ।

फिर कलियों ने घूँघट खोला,
फिर सुगंध का राज प्रिये ।

फिर ये मन व्याकुल उदास है,
फिर लब पर फ़रियाद प्रिये ।

फिर इन बाहों में आ जाओ,
फिर उमड़ा अनुराग प्रिये ।

अभिलाषा

मेरी उर- आंगन अभिलाष यही,
सब, वतन-धरा पर अर्पण कर दूँ।
नित स्वेद-श्रम से दीप जला कर,
सबके दामन में खुशियां भर दूँ।

ले रश्मि पुरुषार्थ के दिनकर से,
सब गहन अंधेरे रोशन कर दूँ।
कौमुदी शीत -पुंज ले चंद्रमा से,
हृदय गागर में शीतलता भर दूँ।

मैं निरक्षरता का दुर्ग तोड़कर,
शिक्षा की लौ घर- घर भर दूँ।
एकलव्य सा अभ्यास रचाकर,
लक्ष्य पथ में कुशलता भर दूँ।

सब भेदभाव उत्कोच मिटाकर,
घट सत्यनिष्ठा का अमृत भर दूँ।
समता का अधिकार दिला कर,
सबको प्रगति -पथ प्रवृत्त कर दूँ।

अबलाओं में विश्वास जगा कर,
सम्यक-न्याय का संबल भर दूँ।
गरीबों को अधिकार दिला कर,
सबके घट खुशियों से भर दूँ।



खेतिहर

आजकल ऋतु कितनी मनोरम हो रही है। आसमान में बहुधा हल्के-हल्के बादल छाये रहते हैं। कभी-कभी हल्की फुहार, तो कभी संगीत बिखेरती झमाझम बारिश। सब कुछ बहुत अच्छा लग रहा है। विशेषकर एक कृषक की दृष्टि से बुधई को।

सावन माह कुछ दिनों पूर्व अपना हरा-भरा रंग बिखेर कर जा चुका है। सावन माह में बारिश अवश्य कुछ कम हुई किन्तु सावन की छँटा इस ऋतु के नाम के साथ जुड़ी रहती है अतः सावन के रंगत में कोई कमी नहीं आयी थी।

इस वर्ष वास्तविक बारिश तो भादों के साथ प्रारम्भ हुई है। एक-दो दिन छोड़ कर लगभग प्रतिदिन बारिश हो रही है। एक लय, एक धार से छप्पर की ओरी से गिरता पानी किसी पर्दे की भाँति प्रतीत होता था। जिसके कारण बाहर का मनोरम दृश्य कभी दिखाई देता, तो कभी पानी के पर्दे के पीछे छिप-सा जाता।

चारपाई बिछा कर दालान में बैठा बुधई दिनभर यह दृश्य देखा करता है। सावन के अन्तिम हफ्ते जब झमाझम बारिश हुई तो पूरे गाँव-जवार के किसान बारिश के साथ झूम उठे। बुधई के पूरे घर ने मिलजुल कर दोनों खेतों में धान की रोपाई कर पूरी दी है। ये काम पूरा हो जाने से बुधई निश्चिन्त है।

लगभग पूरे गाँव ने अपने खेतों में धान के बेहन बो दिये हैं। सप्ताह-दस दिन पश्चात् सभी खेतिहर खेतों से खर-पतवार निकालने का काम करेंगे।

बुधई के घर में उसकी पत्नी बिमली, दो बेटे हैं। जिसमें बड़े वाले बेटे का विवाह हो गया है। उसके दो बेटे हैं। एक चार बरस का और दूसरा दो बरस का। बुधई का छोटा वाला बेटा भी विवाह लायक हो गया है।

बुधई के डेढ़-डेढ़ बीघे के दो खेत हैं। दोनों खेत पुस्तैनी हैं। यही खेत बुधई के परिवार के भरण-पोषण का साधन है। धान की रोपाई के समय पत्नी और दोनों बेटे तो बुधई के साथ जाते ही हैं। अब तो समय मिलने पर कभी-कभी बहू भी जाने लगी है। बुधई की पत्नी बिमली उसे खेतों में काम करने बहुत कम ले जाती है।

बिमली बहू से कहती है कि घर में ही कुछ कम काम है क्या? भोजन बनाना, बर्तन मँजना, कपड़े-लत्ते,

झाड़ू-बुहारू के साथ दोनों बच्चों की देखभाल करना। इतना काम कुछ कम है क्या? तुम खेत के काम से थक जाओगी। किन्तु बहू यदा-कदा सबके साथ खेतों पर काम करने चली ही जाती है। बुधई की बहू को खेती बारी का काम भी आता है। बड़ी गुणी बहू है।

बुधई प्रतिदिन की भाँति आज भी दालान में चारपाई पर बैठा था। संतुष्टि के भाव के साथ वह मन ही मन खुश था। इस समय बारिश बन्द थी किन्तु असमान में श्वेत बादलों के टुकड़े इस प्रकार उड़ रहे थे मानों किसी रूई धुनिया ने अपने सारे रूईयों को धुनकर आसमान में उड़ा दिया हो। और श्वेत रूई के टुकड़ों से आसमान भर गया हो।

दालान में बैठा बुधई बारिश के पश्चात् निखर आये सृष्टि के इस मनोरम रूप को निहार रहा था। बारिश में भीगे पछुआ हवा के झोंकों से वृक्ष के पत्ते ऐसे लहरा रहे थे मानो वे भी मौसम के प्रभाव में मदमस्त हो रहे हों। और कुछ सप्ताह पूर्व की वो तपती गर्मी विस्मृत कर बैठे हों जब उनके पत्ते पानी के बिना लटके रहते थे। तमाम पत्ते पीले होकर वृक्ष की जड़ों के पास गिर गये थे।

अब नन्हीं-नन्हीं दूबों से पगडंडियाँ हरी-भरी हो गयी थीं। सामने पड़े खाली मैदान में स्वतः उग आये बिरवों पर रंगबिरंगे पुष्प निकल आये थे। उन पुष्पों पर बहुत सारी तितलियाँ न जाने कहाँ से आ गयी थीं। बिना एक क्षण ठहरे प्रत्येक पुष्प के कानों में न जाने क्या कह रही थीं और तुरन्त दूसरे बिरवे की ओर उड़ जा रही थीं। कदाचित् वे भी मौसम के सौन्दर्य की बात कर रही थीं।

बिमली बुधई का भोजन और लोटे में पानी ले कर आयी और दालान में ही चारपाई पर बुधई को देकर जाने लगी।

” अरे, सुनौ, सब बच्चन लोगल को भोजन दे दिया? ” बुधई ने बिमली को हंाक लगा कर पूछा।

” हाँ.....हाँ....सबै लोग भोजन कर रहे हैं। अब तुमहू खा लो। हमहू जात हई भोजन करै। ” बिमली ने कहा।

” तुहू आपन भोजन इहँ लेके आवा। देख केतना नीक लागत बा बाहर। ” बुधई ने बिमली से कहा।

” ठीक बा। ” कह कर बिमली भीतर से अपनी भोजन की थाली लेकर आ गयी। वहीं जमीन पर पीढ़िया रख कर बैठ गयी और भोजन करने लगी।

आज चावल-दाल और तरकारी बनी थी। पूरा भोजन बना था। अन्यथा बहुधा दाल-रोटी या भात-

-तरकारी ही भोजन में बनता है। क्यों कि खेत में जितनी भी दाल, गेहूँ, धान कर पैदावार होती है उसे इस प्रकार प्रयोग किया जाता है कि सभी अनाज पूरे वर्ष चल सकें।

”रोटी नाही बनी थी का?” बुधई ने पूछा। यद्यपि बुधई को चावल पसन्द है। उसके एक तरफ के दाढ़ के दाँत टूट गये हैं। इस कारण उसका रोटी खाने में थोड़ी परेशानी होती है। उसने रोटी की बात बच्चों के लिए पूछी।

”नाही। रोटी साँझ के बनी।” भोजन खाते हुए बिमली ने कहा।

”ठीक बा।” सहमति में सिर हिलाते हुए बुधई ने कहा।

”लग रहा है आज शाम तक बदरा बरसेंगे।” भोजन कर लेने के पश्चात् बुधई दालान के बाहर हाथ धोने निकला तो आसमान की ओर देख कर बोला।

”हूँ, अब भादों में बरखा ने जोर पकड़ी है। एक-एक दिन छोड़ के बरसे त ठीके बा। धान के सिंचाई होत जाई। साग-भाजी भी ठीक बढ़ी। बहुत पानी न बरसै तबै ठीक बा।” बिमली ने बुधई से कहा।

”हूँ, किन्तु दू-चार दिन भी पानी न बरसै त बित्ते-बित्ते भर बढ़ आयी धान की फसल कुम्हला जाएगी।” बुधई ने कहा।

”हाँ, ठीक कहत हौ। आजकल घाम भी बहुत तेज होत है।” बिमली ने बुधई की बात का समर्थन करते हुए कहा।

दोनों ने मौसम और खेती की बात की। बुधई पानी पी कर चारपाई पर बैठ गया।

”तू आराम कर। अब आज रात बरखा होई त बिहाने घास चिखुरे चलब जा। बिहाने सारा दिन खेत में लाग जाई। दूसरे खेत में भी काम बा। अब त ई पूरै पखवारै काम रही खेत में।....चलीं तनी बहुरिया के साथे बर्तन मंजवा ली। बहुतै काम हो जाला उन पर।” कह कर बिमली अपनी व बुधई की थाली लेकर भीतर चली गयी।

बुधई भी सिर के नीचे अपनी अँगोछी की तकिया -सा बना कर लेट गया। एक झपकी ही आयी थी कि पट....पट....पट पानी गिरने की आवाज़ के साथ उसकी नींद खुल गयी। बाहर तो बारिश शुरू हो गयी है। साँझ हो गयी है। श्यामल बादलों के कारण साँझ और गहरी प्रतीत हो रही है।

बुधई ने बिमली को आवाज दी।

”अरे बाप रे। पानी बरसने लगा। चलौ, भीतर चलौ। साँझ हो गयी।” बिमली ने पानी बरसते देख तो बुधई से कहा।

बुधई ने चारपाई दलान में खड़ी कर दी और बिमली के साथ भीतर आ गया।

”बाबू बाहर का दरवाजा बन्द कर देना। अब ई बारिश में कौन आएगा?” बड़े बेटे ने बुधई से कहा। बुधई ने दरवाजा बन्द कर दिया।

घर के भीतर आ कर बुधई आँगन में बैठ गया। आँगन के आधे हिस्से में फूस की मड़ई है। आधा हिस्सा खुला है। खुले हिस्से में बैठ कर घर के कपड़े-बर्तन आदि धुलते हैं। हैण्डपम्प यहीं लगा है तो नहाना-धोना भी यही

होता है।

आँगन की मड़ई में चारपाई बिछा कर बुधई बैठ गया। उसके दोनों पोते उसके पास आ कर बैठ गये।

”तोहार ईया (दादी) का करत बाड़ी।” उसने बड़े पोते से पूछा।

”माई के साथे खायका (भोजन) बनावत बाड़ी।” बड़े से पहले ही छोटे पोते ने झट से उत्तर दिया।

”बाबा, हुआँ देख मड़ई से पानी चुवत बा।” कहते हुए बड़ा पोता दौड़ता हुआ गया और रसोई से एक तसला ला कर चूर रहे पानी के नीचे लगा दिया।

पोते का काम देख कर बुधई हँस पड़ा। ये क्या पानी तो दूसरी जगह से चूने लगा।

”बाबा इहाँ बाल्टी लगा दीं? बाल्टी ये बेरा खाली बा। दूसरे तसला में माई राटी बनावै खतिर आटा रखले बाड़ी।” बड़े पोते ने पूछा।

”हूँ, लिया के लगा द।” बुधई ने कहा।

वह सोच में पड़ गया। ई मड़ई चुवै लगा। अबही बरखा महीना भर त बरसबै करी। गर्मी के अलावा जाड़े में भी बरसे ला। नयी मड़ईया छवावै क पड़ी।

”ल हो भोजन कर ल। अबही इहाँ मड़ईया में बईठ लायक नाही रही। कीचड़ में गोड़वा बिछलाये लगी है। पुरानी मड़ईया छावै दू बरस हो गया। छान सड़ गयी है। नयी मड़ईया छवावै लायक हो गईल बा।” कहते हुए कमली ने थाली का भोजन चारपाई पर रख दिया।

दोनों बच्चे भी वहाँ से उठ कर रसोई में भोजन करने चले गये। बुधई का भोजन खत्म होते-होते छप्पर कई स्थानों से चूने लगा। यहाँ तक कि चारपाई पर भी पानी चूने लगा।

”अरे ये, मलकिन सुनत हऊ। मड़ईया कई जगही से चूवै लगा हो।” बुधई ने अपनी पत्नी बिमली को आवाज दे कर कहा।

”भोजनवा क भईल त कमरे में चली आब। आवत बेरी आपन थरियवो ले के अईह। रात के बेरा अँगनई के बिछलन में के जाई? बदरिया से जबर अन्हार हो गईल बा।” बिमली ने कहा।

बुधई के घर में दो पक्के कमरे हैं। एक में बड़ा बेटा, बहू और दोनों पोते रहते हैं। दूसरे पक्के कमरे में बुधई, बिमली और उसका छोटा बेटा रहते हैं।

बुधई ने तो अपने कमरे में पुआल भर कर बोरियों से बड़ा-सा बिछौना बना लिया है जिस पर तीनों लोग आराम से सो जाते हैं। कभी-कभी दोनों पोते भी बिमली के पास आकर सो जाते हैं।

परेशानी तो बरसात में होती है। अन्य ऋतु में रहने की कमी नहीं है। पक्के कमरे के अतिरिक्त दो मड़ईयाँ भी हैं किन्तु बरसात में मड़ईयाँ कब कहाँ से चूने लगे, पता ही नहीं चलता।

बुधई ने तो अपने कमरे में पुआल भर कर बोरियों से बड़ा-सा बिछौना बना लिया है जिस पर तीनों लोग आराम से सो जाते हैं। कभी-कभी दोनों पोते भी बिमली के पास आकर सो जाते हैं।

परेशानी तो बरसात में होती है। अन्य ऋतु में रहने की कमी नहीं है। पक्के कमरे के अतिरिक्त दो मड़ईयाँ भी हैं किन्तु बरसात में मड़ईयाँ कब कहाँ से चूने लगे, पता ही नहीं चलता।

“ बर्तन बिहान मँजीह दुलहिना। अबही बरखा बन्द नाही भईल बा। अँगने में कीचड़-कानों बहुत है। ” बिमली ने बहू से कहा।

भोजन करने के पश्चात् सारे बर्तन रसोई में एक कोने में रख कर बहू ने रसोई की कुण्डी बाहर से लगा दी। वह जानती है कि थोड़ी देर के लिये भी रसोई खुली रह जाये तो बिलार रसोई में दुक (घुस) जाती है।

सवेरे तक कभी रुक-रुक कर, तो कभी तेज बरखा होती रही। भोर में बिमली की आँख खुल गयी। प्रतिदिन लगभग इसी समय बिमली की आँख स्वतः उठ जाती है। उठ कर बिमली नित्यक्रिया से निवृत्त होने गाँव की तलैया की ओर जाने लगी।

“ तू तलैया से आ गईलू का? ” बाहर दलान में बहुरिया मिल गयी।

“ हाँ माई। मुँह अँधेरे चल जा त ठीक रहेला। कम लोग रहेला अउर अन्हार में केहू देख नहीं पावेला। ” बहू ने कहा। हम अबहीं नहा ली माई? झींसीं पड़ता। हम भींज गईल बानी।

“ ठीक बा। हम अबहीं आवत हई। ” बिमली ने कहा।

धीरे-धीरे घर के सब लोग उठ कर नित्यक्रिया से निवृत्त होकर अपने-अपने काम धन्धे में लग गये।

“ हमन के खेत में हो आईल जा। ” कह कर बुधई अपने दोनों बेटों को लेकर खेत कर ओर चला गया।

“ दूनों खेत देख के आईब जा। आवे में अबेर (देर) हो जाई। ” बुधई ने बिमली से कहा। और तीनों खेत की ओर निकल गये।

“ दुलहिन तू नहा-धो भइल बाड़ू रसोई कई ल। हम अँगनई अउर दुआर, दलान लीप लीं। बरखा से बहुत कादों-कीचड़ हो गईल बा। गईया के गोठ्ठा भी झाड़े-बहारै के पड़ी। ” बिमली ने अपनी बहू से कहा।

“ ठीक बा माई। बर्तन माँज लेने बानी। चाउर बीन-फटक लेने बाड़ी। तरकारी बता द, का बनी? ” बहू ने पूछा।

“ देख, छप्परा पर एक ठो बड़हन कोहड़ा तूड़े लायक हो गईल बा। उहै तुड़ लियाव अउर सरसों के मसाला में तरकारी बना दा.....एक बात अउर सुन दुलहिन, कोहड़ावा में पहिले बेटवा से हँसुआ लगवईह। ” बहू को बता कर बिमली पोतनहरी बाली बाल्टी ले कर दलान की ओर चली गयी।

बिमली ने यह सोचा कि पहले दुआर अउर दलान पोत ले। खेत से जब तक ऊ लोग आई तब तक सूख जाई। दलान-आँगन सब लीप-पोत कर बिमली नहाने की तैयारी करने लगी।

“ माई, खायेका (भोजन) बन गईल बा। ” बहू ने बिमली से कहा।

“ ठीक बा लईकन के दे दा। ऊ सब खा लें। ” कह कर

बिमली नहाने के साथ बाल्टी भर कपड़े भी धो लाई। दलान की अरगनी में कपड़े डालते हुए सोच रही थी कि इतनी बेर हो गयी। दूनु बेटवा और उनके बाबू अबहीं तक नाही आयें।

.....उनके बारे में सोचती हुई बिमली भीतर आ गयी। दोपहर बीतने को हो गयी। वह थोड़ी चिन्तित होने लगी।

आँगन में खटिया पर बैठ कर बिमली अपने बाल सुलझाने लगी। बुधिया को भूख लग रही थी किन्तु वह बेटों और बुधई के आये बिना भोजन नहीं करती है। बहू भी उन सब के आये बिना कुछ नहीं खाएगी।

“ माई लाव हम तोहार चोटी बना देई। ” कह कर बहू ने बुधिया से कंधी ले ली अउर उसके बालों को ठीक कर के चोटी बना दी।

बुधिया अपनी बहू के साथ दालान में बैठ कर बेटों और पति के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

कुछ ही देर में वो आ गये। दालान में बिछी चारपाई पर दोनों बेटे बैठ गये। बुधई नीचे बोरे पर बैठ गया। तीनों के चेहरे थके हुए धूप-छईया से तप रहे थे। कहते हैं कि सावन-भादों की बदली के बीच की धूप जिसे धूप-छईयाँ कहते हैं वो बड़ी तपाती है।

बिमली ने आसमान की ओर देखा दोपहर जा चुकी थी। तिपहरिया लग गयी थी। प्रतीत हो रहा था कि घंटे-आधे घंटे में पानी बरसेगा।

“ घर में रहले पर बुझाला नाही। काल दिन भर आ रात भर में एतना पानी बरसा है कि खेतन का पूरा फसल पानी में बूड़ (डूब) गईल बा। अब दर्ई (भगवान) न बरसैं तबै ठीक बा। ” बिमली को आसमान ताकते देख कर बुधई ने कहा।

बिमली ने देखा की दोनों बेटों के चेहरे मुरझाए हुये हैं।

“ कउनो आपन मेंड त न नाही काट दिया अउर सब पानी हमरे खेत में आ गवा। ” दोनों बेटों को चिन्तित देख कर बिमली ने कहा।

“ भगवान जाने, कउन का किया? कुछ लउकत नाही बा। ये टेम त मेंड, खेत सब पानी में बूड़ गईल बा। दूनों खेत के इहै हाल बा। ” बड़े बेटे ने अपनी माँ के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा।

बेटे की बात सुन कर बिमली भी कुछ देर के लिए सोच में पड़ गयी। तत्काल उसे ध्यान आया कि इन सबने सवेरे से कुछ भी नहीं खाया है।

“ अच्छा बाबू, सब लोग उठ जा। हाथ-मुँह धो के भोजन कर ल जा। बहुरिया भी तुम लोगन के अगोरत-अगोरत भोजन नाही की है। ” बिमली ने कहा।

“ ठीक बा परोस हम लोगन के भोजन। ” बुधई ने कहा।

“ बुझाता फिर से पानी बरसी। ये बेरा के भोजन सँझलौके बना लीह जा। बरखा में परेशानी होई। ” बुधई ने बिमली से कहा।

रात में पानी बरसा। खूब बरसा। अँगना की, अउर दलान की मड़ई चूती रही। जिसके कारण बाहर भीतर कीचड़-कीचड़ हो गया।

” सोचत हई कि आज अँगना के मड़ईया के ऊपर एक नई छान लगा दीं। ” बुधई ने बिमली से कहा।

” आज सारा दिन एके मड़ई के छवाई करै में लाग जाई। ” बिमली ने कहा।

” हाँ, त का करीं? पईसा जोड़ पाई त खपरैल के छत बनवाई। मन त पक्का लिटर डलवावै के बा। पर दू पईसा हाथे में नाहीं बचेला। एक बेर पक्का बन जा त हरदम के झंझट खतम हो जाई। किन्तु खेतिहर के ई भाग (भाग्य) कहाँ? ” बुधई ने निराशा भरे स्वर में कहा।

उस दिन दिनभर बुधई अपने दोनों लड़कों के साथ बाँस का टट्टर बना कर उस पर सरकंडा बिछा कर, ऊपर से दूसरी बाँस की टट्टर बना कर रस्सी से पूरी छप्पर बाँध कर छान बनाया। लड़कों के साथ मिलकर छप्पर ऊपर चढ़ाया।

इस प्रकार सुबह से लेकर शाम तक एक मड़ई का छप्पर बन पाया। रात को भोजन में रोटी दाल बनी। बरसात में गाँव के सब्जी वाले जहाँ सब्जी लेकर बैठते हैं, वहाँ पानी भर गया था। दूसरे बरसात में खेत से सब्जी तोड़ने कोई खेतिहर नहीं गया। खेतों में अभी भी पानी भरा था। जहाँ कुछ पानी निकल गया था, वहाँ खेत की जमीन दलदली थी। उसमें पैर रखने पर सब पौधे टूट जाएंगे। इस कारण सब्जी का जो छोटा बाजार लगता था, वो नहीं लगा।

छप्पर छाने के बाद रोटी-दाल खाकर थका हुआ बुधई बेखबर उसी दलान में चारपाई बिछाकर सो गया। घर के अन्य सदस्य भी भोजन कर के सो गये।

” सुनत हौ, चारपाई पर चादर तो बिछा लेते। निखहरी (बिना चादर बिछी चारपाई) चारपाई पर सो गये। ” बिमली ने कहा।

थके हुये बुधई ने कुछ नहीं सुना। वह सिर के नीचे अँगोछी की तकिया बना कर सोता रहा। बिमली भी कमरे में सोने चली गयी। उस रात बारिश नहीं हुई।

प्रातः की भाँति नित्य समय पर बुधई की आँख खुल गयी। बिमली भी तलैया से लौट आयी थी।

” आज रात में पानी नहीं बरसा है। सोच रहे हैं कि खेत में नम मिट्टी हो गयी होगी। घास चिखुरे (हाथ से घास निकालना) लायक माटी हो गईल होई। ” बुधई ने बिमली से कहा।

” हूँ ”। बिमली ने कहा।

” जियरा बहुत थक गईल बा हो। खेत जाये के हिम्मत नाहीं बा। देहियाँ जईसे की टूटता। ” बुधई ने कमली से कहा।

” काल दिन भर बेटवा के साथ छप्पर छावत रहल। पहिले वाला शरीर त रहा नहीं। शरीर के जांगर (ताकत) उमर के साथ कम होत जात बा। कहाँ ले जी तोड़ मेहनत कर पईब? ” बिमली ने कहा।

” हाँ, तू ठीकै कहत हऊ। पर काम त करिहै के पड़ी। जब तक ये शरीर में जान है, तब तक काम से कहाँ बच सकत है खेतिहर। ” बुधई ने कहा।

” अरे नीके-नीक बोल ई सब का बोलत हवा। अबहीं त

छोटका के बियाह करेके बा। केतना काम बा ये जिनगी में। तू अंट-शंट बोलत हवा। ” बिमली ने मीठी झिड़की देते हुए बुधई से कहा।

” तू ठीक कहत हऊ बाकिर आज हाथ-गोड़ सब पिरात बा। ” बुधई ने कहा।

” ठीक बा। एक-दू दिन बाद भी खरपतवार चिखुरा जाई। तू आराम कई ल। बड़का बेटवा पुआरा सुखावत बाने। बरखा से सगरी ओदा (गीला) हो गईल रहल। छोटका गेहूँ से भूसी छँटले में लागल बाने। बहुरिया बीनत-पछोरत बाड़ी। ”

” ठीक बा। पुआरा सूख जाई त गाय-बछिया के चारा के इन्तजाम घर ही पर हो जाई। पुआरा सड़ जाई त गईया खतिर खरीदे के पड़ जाई। ” बुधई ने कहा।

उस दिन बुधई ने आराम किया। अगले दिन बुधई दोनों लड़कों के साथ खेत की देखभाल और निराई-गुड़ाई करने के लिए निकल पड़ा।

” ई दुपहर के खाना ल। न जाने कब काम काम खतम होई त घरे आ पईब। बहुरिया तीनों जनी के खतिर रोटी-अचार, पियाज बाँध देले बाड़ी। दुपहर में खा लीह सभै। ” कहते हुए बिमली ने कपड़े के टुकड़े में बँधा भोजन बड़े बेटे के हाथ में थमा दिया।

” ठीक बा माई। ” बेटे ने कहा।

तीनों खेत की ओर बढ़ गये। बिमली उन्हें जाते देखती रही और मन ही मन सोच रही थी कि दू-दू कोस पैदल चलिहैं, तब कहीं खेत तक पहुँचिहैं।

बिमली भीतर आ कर घर के पिछवाड़े के हिस्से में बँधी गईया के नाँद में पानी डाल कर गईया को पिला कर वहीं किनारे सूखे स्थान पर बाँध दिया तथा नाँद के पास से गोबर और कीचड़ खरहरे से झाड़ने लगी। पूरा कचरा झाड़ कर एक किनारे जहाँ खाद इकट्ठी होती थी, उठाकर उसी में फेंक दिया।

” माई का करत बाड़ू? अब काम बाद में हो जाई। चल के भोजन कर ल। ” बहुरिया वहाँ आयी और बिमली से बोली।

” चलत हई। गईया जहाँ बँधाइल रहल हम उहाँ सफा कर देहली हई। दुपहर ले सूख जाई। ” कह कर बिमली ने खरहरा वहीं किनारे खड़ा कर दिया।

आँगन में आकर हाथ-मुँह धोकर बिमली ने भोजन किया। दोनों बच्चे भोजन कर चुके थे। बिमली के साथ बहुरिया ने भी भोजन कर लिया।

” जा तनिक आराम कर ल। साँझ के फिर घर गृहस्थी के काम लागी त सब करल जाई। ” बिमली ने बहू कहा।

” ठीक बा माई। बस बर्तन माँज के रसोई में रख दीं। फिर आराम कर लेब। ” बहुरिया ने कहा।

बिमली बाहर की कोठरी में लेटने चली गयी। दोनों पोते भी वहीं खेल रह थे। दोनों कोठरी में पुआल पर बोरियाँ बिछा कर लगभग गद्दे भी भाँति करके बिछावन बना था। जिस पर जाड़े गर्मी बरसात प्रत्येक मौसम में घर के सदस्य सोते हैं।

वैसे अतिथि तो कोई नहीं आते। किन्तु बुधई के बहनोई कभी-कभी आते हैं। बहन को गुजरे पाँच वर्ष हो गये। बहनोई भी बाहर के कमरे में पुआल के बिस्तर पर बुधई व उसके बेटों के साथ वहीं पर सोते हैं। गरीबों के अतिथि कहाँ होते हैं? अतिथि तो पैसे वालों के घर आते-जाते हैं।

बिमली ने सोचा कि अतिथि नहीं आते हैं तो एक तरह से ठीक ही है। अतिथि आने लगें तो जो थोड़ी-सी दाल कातिक, पूस तक के लिए बचकर रखी है वो भी खर्च हो जाएगी। धान अगहन में कटेगा। इसी थोड़ी-सी आधी बोरी दाल पर चार महीने गुजारना है।

घर गृहस्थी के बारे में सोचते-सोचते बिमली की आँख लग गयी। तीसरे पहर साँझ उतरने लगी तक बुधई व बेटों की आवाज सुनकर बिमली हड़बड़ा कर उठ बैठी। पति व बेटों के चेहरे की ओर देखने लगी।

” बड़ा थक गईल बाड़े तोहे सभै। ” बिमली ने बेटों और पति के घाम से लाल, मुरझाये, थके चेहरे को देखकर कहा।

” ई खेती किसानी बड़ा जी के जंजाल बा। थोड़ी बेहन तो बरखा के पानी में गल गईल। बाकी सगरे खेत में मोथा, घास जाम गईल बा। हम तीनों लोग मिलकर घास चिखुरना शुरू किये तो दिन भर में आधा खेत कर पाये हैं। अबही एक खेत वईसे पड़ल बा। ओहि में हाथ नाही लगा पाये हैं। एकै खेत नाही पूरा हुआ।....

.....काल हमन के साथ मजूर लगावावै के पड़ी। तब दूनों खेत जल्दी होई। घास, मोथा हाली (शीघ्र) नाही निकली त फसल कमजोर हो जाई। काल एक आदमी साथ में ले के जाये के पड़ी। काल ही दूनों खेत के घास, मोथा साफ करे के सोचत हई। ” बुधई ने बिमली से कहा।

” मजूरी के पर्ईसा देबे के पड़ी। ” बिमली ने एक नई समस्या सामने रखी जो आवश्यक थी।

” हाँ, खाद, बीया (बीया-बीज) के पर्ईसा रखले बाड़ी ओहि में से दे देब। का करीं। इहौ काम जरूरी बा। ” बुधई ने निराशा भरे स्वर में कहा।

” ठीक बा बाबू। इहै कई ल। हम अउर छोटका मिल के महीना, आधा महीना कहीं मजूरी कई लेहल जाई। हो सकेला कि खाद बीज के पर्ईसा हो जाई ” पिता की बात सुनकर बड़े बेटे ने कहा।

” अरे बेटवा, खेती किसानी करे वाला मजूरी....। ” कह कर बुधई चुप हो गया। वह बेटों का हौसला कम नहीं करना चाहता था।

दूसरे दिन खेत जाना था। गाँव के एक व्यक्ति से अगले दिन की मजूरी के लिए बात पक्की कर आया। भोजन कर के पूरा घर बेखबर सो गया। सभी तो थके रहते हैं। नींद के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता है।

राते में चुपके से न जाने कब से कब तक पानी बरसा किसी को पता नहीं चला। बुधई सुबह बाहर निकला तो दलान के छप्पर से पानी चू-चू कर चारों ओर कीचड़ भरा था।

” अरे, सुनत हउ। रतिया के बरखा है। भगवन जाने अब खेतव का हाल का हो रहा होई। ” बुधई भीतर आया और

बिमली से बोला।

” चल काका खेतवा की ओर चला जाये। ” थोड़ी देर में गाँव का मजूर आ गया।

” रोटी बन गईलबा हो? ” बुधई ने बिमली से पूछा।

” अबही रोटी बनवले में तनिक टेम लागी। तू लोग आगे बढ़। हम अबही रोटी छोटका के हाथे भेजवावत हई। ” बिमली ने कहा।

.....खेतिहर के जिनगी में कब का होई केहू नाही जानत। दूसरे दिन के भोजन नसीब होई कि नाही इहौ खेतिहर नाही जानत बाड़े। बड़ी कठिन जिनगी बा खतिहर-किसान के।....मन ही सोचता हुआ बुधई अपने बड़े बेटे व मजूर के साथ खेत की ओर बढ़ा चला जा रहा था।

लघुकथा

डॉ० दलजीत कौर

हाशिए पर

शहर में बहुत बड़ा साहित्यिक कार्यक्रम हो रहा था। बड़ी संस्था ने देश-विदेश से लेखक-कवि बुलाए। बड़े-बड़े लोग उनका रू-ब-रू देखने-सुनने आए। बहुत सी तस्वीरें ली जा रही थीं। अखबारों में चर्चा हो रही थी। ऐसे कार्यक्रम में भाग लेना स्टेटस सिम्बल बन गया था। कहीं मेरा रुतबा गिर न जाए इसलिए मैंने भी भाग लिया।

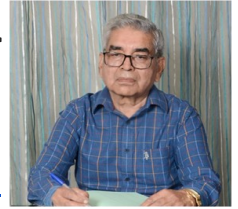
आखिर की कुर्सी पर बैठे गंभीर, मामूली से व्यक्ति ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। बड़े-बड़े औधेदारों से बात न कर मैंने उसी से बात करने की सोची और प्रश्न रूपी स्वर में पूछा-आप?

उत्तर मिला-मैं साहित्य हूँ।

उसने बहुत निराशा के स्वर में कहा-यहाँ सब कुछ है पर मैं नहीं हूँ।

मैंने कहा-फिर आप कहाँ हैं?

उसने गंभीर स्वर में कहा-हाशिए पर।



दुल्हन बेगम

नवाबों की गली नवाबों के लिए जानी जाती थी। वक्त की तरह लगातार बनते- बिगड़ते नवाबों की यहां भरमार थी। इन नवाबों में एक मशहूर नवाब थे, नाम था खलील खां। ज़मींदारी निकल जाने के बाद इनके वंशजों के पास एक इंच भी ज़मीन नहीं बची पर इनके अजीबोगरीब किस्से बचे हैं, ज़्यादातर उदास कर देने वाले, डरावने और हंसाने वाले...।

आज भी यहां एक कहावत मशहूर है, 'वह ज़माने गए जब खलील खां फाख्ता मारते थे।' -नरगिस पहली लड़की थी जो खलील खां की ज़िंदगी में आई थी। उस समय वह सोलह बरस के थे और नरगिस उनसे कुछ- एक साल बड़ी थी। वह हैदराबाद की रहने वाली थी और दिल्ली के मिरांडा हाउस में उनकी बड़ी बहन के साथ पढ़ती थी। किसी छुट्टी वाले दिन उनकी बहन ने उसे घर पर बुला लिया। नरगिस आई तो बुर्का पहने हुए थी लेकिन उनकी बहन की ज़िद पर उसने बुर्का उतार दिया। उसका परिवार के सदस्यों से परिचय कराया गया। खलील खान के लिए तो यह बेहद लुभावना मंजर था। बुर्का उठाने की कला भी वैसा ही शानदार नज़ारा पेश करती है, जैसा की रंगीन बत्तियों से जगमगाते स्टेज से पर्दा उठने पर दिखता है। खलील खान पर उसकी पहले छाप ऐसी पड़ी कि लगा उससे सुंदर लड़की कोई दूसरी हो ही नहीं सकती। उसका रंग गोरा और बाल घुंघराले भूरे थे। वह अंग्रेजी इतनी अच्छी बोलती कि उसमें कोई स्थानीय लहजा नहीं झलकता था। लेकिन उसकी उर्दू में साउथ इंडियन हिंदी का बड़ा मोहक पुट होता था। सबसे ज्यादा प्रभावित तो वह उसके चुलबुले स्वभाव से हुए थे। वह यह सोच- सोच कर हैरान होते कि यह लड़की इतनी शोख और चटपटे स्वभाव की कैसे हैं?

उनके घर पहली बार आने के कुछ ही दिनों बाद वह और उनकी बड़ी बहन उसे फिल्म दिखाने ले गए। नरगिस उनके बराबर बैठी हुई थी। जैसे ही बत्तियां बुझी, नरगिस ने उनके हाथ पर अपना हाथ रख दिया। वह खुशी से पागल हुए जा रहे थे। उसके बाद तो उन्हें अपनी बहन की परवाह नहीं रह गई थी। एक बार नरगिस को उनके घर शाम बिताने की परमिशन मिल गई। वह उसे लेने गए लेकिन घर लाने की बजाय कार से उसे कुतुब मीनार दिखाने ले गए। उन दिनों नई दिल्ली की आबादी बहुत

कम थी और महरोली का इलाका तो एकदम वीरान था फिर वह दोनों एक दूसरे का हाथ थामें रहने और प्यार भरे चार शब्दों के अदल-बदल से आगे नहीं बढ़ सके। वह इस बात को लेकर चौकस थी कि शादी से पहले मर्द को रिझाने के लिए नज़दीकियों की क्या सीमा होनी चाहिए।

फिर एक दिन खलील खां को पता चला कि नरगिस ने पढ़ाई छोड़ दी और वह हैदराबाद वापस चली गई। वह उदास रहने लगे थे और उनका मन किसी काम में नहीं लगता था। उनकी दिलचस्पी लाल आंखों वाले लकखा कबूतरों में भी नहीं रही थी जो उन्हें कबूतर बाज़ी प्रतियोगिता में शील्ड दिलाते थे।

जुम्मे के दिन खलील खां का डेली रूटीन बदल जाता था। जमील उनके बदन की मालिश करता फिर वह नहाने के लिए हमाम जाते थे। मालिश करते समय वह जमील से हंसी मज़क करते रहते थे।

एक दिन जमील ने उन्हें गमगीन देखकर मज़ाकिया लहजे में पूछा, 'छोटे नवाब, फाख्ता उड़ गई?'

जमील ने उनकी दुखती रग पर हाथ रख दिया था, 'अबे तू उसे कैसे जानता है?' खलील खां ने हैरानी से पूछा।

जिस दिन आप उसे फिल्म दिखाने नटराज टॉकीज ले गए थे, मैं वहां पोस्टर देख रहा था। मैंने बुर्के में से उसकी एक झलक देखी थी। खुदा क़सम जन्नत की हूर थी। फिर कहा, 'छोटे नवाब, ग़म क्यों करते हैं, दूसरी फाख्ता मार लीजिए।'

'उन्होंने उदास लहजे में कहा, 'यही तो ग़म है, नवाबों की लड़कियां फाख्ता नहीं होती।'

खलील खान की उदासी उनकी अम्मी से बर्दाश्त नहीं हुई।

'वह शादी को हर मर्ज़ की दवा समझती थी। लिहाजा उन्होंने उनकी शादी सकीना से कर दी। वह एक नवाब की इकलौती बेटी थी और नाज़-नखरो से पली हुई थी।

उनकी शादी धूमधाम से हुई फिर वह रात भी आ गई जिसका उन्हें शिद्दत से इंतज़ार था। फूलों की सेज पर सजी दुल्हन उनका इंतज़ार कर रही थी। उन्हें कमरे में दाखिल करते समय अम्मी ने सोचा, 'यह बेवकूफ न जाने क्या क्रहर ढाएगा?' अतः उन्होंने चेताया, 'खलील, दुल्हन बेगम मैदा की लोई है, एहतियात से छूना, मैली न हो जाए।'

'अम्मी जान आपने हमें नातजुर्वेकार समझ रखा है ?' खलील खां ने कहा तो कभी ना हंसने वाले उनके अब्बू भी

हसीं न रोक सके थे। उन्होंने सच ही कहा था, सिनेमा हॉल में नरगिस ने उनका हाथ अपने हाथ में लिया था और कुतुब मीनार पर उनके नजदीक आने की सारी हदें पार कर दी थी। वह सोचने लगे थे कि उनकी बीवी भी नरगिस की तरह पहल करेगी पर वह गठरी बनी बैठी रही। उसने उनकी तरफ नज़र उठाकर देखा भी नहीं। 'कितनी बेतहज़ीब है?' यह सोचकर उनके माथे पर बल पड़ गए। 'मुझे ही पहल करना चाहिए।'

'दुल्हन बेगम घूँघट उठाओ।' उन्होंने गुस्से में कहा। दुल्हन बेगम ने घूँघट नहीं उठाया। वह और सिमट गई। खलील खां सोचने लगे, 'ज़िंदी भी है, मेरा कहा नहीं मान रही है। उन्होंने बीवी को चेताया, 'घूँघट उठाओ, नहीं तो मैं हेकड़ी निकाल दूंगा।'

सकीना ने धीरे से कहा, 'दुल्हन का घूँघट शोहर उठाता है।'

खलील खां ने कहा, 'तुम मिट्टी के थुए की तरह जमी बैठी रहो, मैं तुम्हारा घूँघट उठाऊँ।' फिर तुम कहना, 'दुल्हन की जूतियां शोहर उठाता है। सकीना सोचने लगी, 'फूटी किस्मत मेरी, बौडम पल्ले पड़ गया।' वह नवाब्जादी थी, सहनशीलता को दब्बूपन मानती थी और मुंहजोरी को शान समझती थी। वह घूँघट में से ही बहस करती रही। बात बढ़ गई और वह उसे रोता छोड़ कमरे से बाहर निकल आए।

उन्होंने अपनी अम्मी से कहा, 'आपकी दुल्हन बेगम घमंडी और ज़िंदी है। मेरे बार-बार कहने से भी उसने घूँघट नहीं उठाया। मैं भी नवाब हूँ, उसके सामने घुटने नहीं टेके।' और बड़बड़ाते हुए दूसरे कमरे में सोने चले गए।

धीरे-धीरे यह बात बीवी के मायके वालों को पता चल गई। सकीना के अब्बू ने खलील खां के अब्बू से कहा, 'आपका बेटा नामर्द है, बीवी की कद्र नहीं जानता है, हमें अपनी बेटी की तलाक़ चाहिए।' नवाब साहब ने उन्हें जल्दबाजी में फैसला नहीं करने की सलाह दी जिसे उन्होंने मान लिया।

खलील खां जिधर भी जाते, लोग उन्हें घूरते थे। ससुर के कहे शब्द 'आपका बेटा नामर्द है, बीवी की कद्र नहीं जानता' उनके कानों में घंटियों की तरह बजते रहते थे। इस सब ने उन्हें झकझोर दिया था, लिहाज़ा उन्होंने अपने को एक कमरे तक सीमित कर लिया था।

अगले जुम्मे को मालिश के लिए, जमील उनके घर आया। उन्हें व्यथित देखकर उसे बहुत दुख हुआ। उसने उनसे कहा, 'छोटे नवाब, मैं आपको एक मशवरा दूँ तो छोटा मुंह बड़ी बात होगी।'

'तू भी कह दे जो तेरे दिल में है।'

आप उस लड़की से निकाह कर लीजिए जिससे आप मोहब्बत करते थे। आपको अपनी मोहब्बत भी मिल जाएगी और लोगों के मूंह भी बंद हो जाएंगे।'

'बात तो पते की कर रहा है।' उन्होंने चांदी का सिक्का उसकी ओर सरकाते हुए कहा।

नरगिस का पता ठिकाना याद करने लगे। उन्हें याद आया,

एक दिन बातों- बातों में नरगिस ने कहा था वह जहांगीराबाद में नवाब साहब की हवेली में रहती है।

फिर एक दिन वह हैदराबाद पहुंच गए। रेलवे स्टेशन से बाहर निकलकर उन्होंने तांगे वाले से जहांगीराबाद में नवाब साहब की हवेली चलने को कहा। तांगे वाले ने हवेली के सामने अपना तांगा रोक रखा था और जो कोई भी दिखता उससे नरगिस का पता पूछता पर निराशा ही हाथ लगती। उन्हें परेशान देखकर एक बुजुर्ग सामने के घर से बाहर आए। उन्होंने अपनी याददाश्त पर ज़ोर डालते हुए उनसे कहा, 'कहीं आप उसे नरगिस की बात तो नहीं कर रहे हैं जो दिल्ली के किसी कॉलेज में पढ़ती है। उसकी मां रंडी थी और खूबसूरती में जन्नत की हूरों को मात देती थी। उसने किसी नवाब को अपने जाल में फंसा लिया था और उनकी रखैल बन गई थी। उन्हें ज़हर देकर मार दिया था और उनकी यह हवेली और जायदाद कब्ज़िया ली थी। सुना है आजकल उसकी बेटी किसी नवाब की तलाश में घूम रही है।'

तभी किसी राहगीर ने हवेली के गेट पर लगी कॉल बेल बजा दी जिसे सुनकर नरगिस गेट पर आई। उसने बड़ी अदा से उन्हें आदाब पेश किया और अंदर तशरीफ़ लाने को कहा। खलील खां ने उसे घिनौनी चीज़ समझ कर अपना मुंह फेर लिया और तांगे वाले से वापस चलने को कहा। उन्होंने चलते-चलते उस बुजुर्ग से कहा, 'शुक्रिया आपने मुझे गटर में गिरने से बचा लिया।'

रात गहरा गई थी, हताश खलील खां अपने घर वापस पहुंचे। उनकी आहट सुनकर दुल्हन बेगम जाग गई थीं। वह उनके कमरे में गए। उन्हें देखकर बेगम ने अपना चेहरा घूँघट से ढक लिया। उन्होंने बेगम से कहा, 'मैंने तुम्हें ज़हनी तकलीफ़ पहुंचाई है, मैं तुम्हारा मुलज़िम हूँ, जो चाहो सज़ा दे दो। बेगम ने मुस्कुरा कर कहा, 'आपको मेरी तकलीफ़ का एहसास है, मेरे लिए इससे बढ़कर खुशी नहीं हो सकती।' उन्होंने उसका घूँघट उठाया फिर कहा, 'मुझे तुम पर नाज़ है तुम जितनी खूबसूरत हो उतनी ही समझदार हो, तुम बहके हुए शोहर को सही रास्ते पर लाने की कला जानती हो।'

तब यह दुनिया वाकई पूरी तरह से बर्बाद हो गई, जब आदमी प्रथम श्रेणी में यात्रा करने लगा और साहित्य मालगाड़ी से ढोया जाने लगा।

गाब्रिएल गार्सीया मार्केस



आखरी दम

बैंक मोड़ पर घटी वो घटना ऐसी नहीं थी, जो लोगों को याद रहती। उसमें न तो किसी की जान गयी थी, न किसी के साथ सामूहिक बलात्कार ही हुआ था। सो समझा जा रहा था कि एक मामूली घटना समझ लोग बाग उसे भूल गए होंगे। वैसे भी हर दिन घटने वाली घटनाओं को लोग किस- किस को याद रखेंगे! देश में जिस तेजी से घटनाएं घट रही हैं, उसे देख बच्चों का जन्म- दर का गणित भी गड़बड़ा गया है लगता।

यह भी एक आम घटना थी जो दस दिन पूर्व में घटी थी। वो साप्ताहिक बाजार का दिन था। दीनानाथ बाजार से खरीदारी कर बेटी के साथ घर लौट रहे थे। बीना सामान के साथ पीछे बैठी थी। उन दिनों बैंक मोड़ बदमाश एवं आवारा लड़कों का अड्डा हुआ करता था। दीनानाथ की स्कूटर अभी उस मोड़ से गुजर ही रही थी कि किसी लड़के ने कीचड़ जैसी फव्वी कसी, -" स्साला बुढ़वा, क्या माल लिये जा रहा है..!" यह उन लड़कों का रोज का काम था। किसी को कुछ भी बक देना।

" बिल्कुल- एच. एम.टी. है- यार ! " दूसरा बका था। तीसरा रंजीत नाम का लड़का दूसरी ओर मुंह फेर कर खड़ा था। दीनानाथ उसके नस्ल से भलीभाँति वाकिफ थे। रंजीत उन आवारा लड़कों का सरदार था। मुहल्ले में यह प्रचारित था। उन्होंने गुस्से में आकर स्कूटर सड़क किनारे खड़ी की। बीना बाप को रोकती रही, पर दीनानाथ कभी दब कर जिये नहीं थे। लपक कर लड़के के पास पहुंचे और एक झन्नाटेदार थप्पड़ उसकी गाल पर दे मारे और जोर से चीख पड़े-" गंदी नाली के कीड़े, दूसरों की मां- बहन तुम्हें माल नज़र आती है और अपने घर की मां-बहनें क्या कुतिया हैं..?"

समझा ये जा रहा था कि इसके बाद लड़के वहां से फूट लेंगे। लेकिन कुछ और ही हुआ। मार खाये उसी लड़के ने दीनानाथ की गर्दन पकड़ ली। कहा, " स्साले बूढ़े, माल को माल न कहें तो तुम्हारी तरह मैं भी इसे बेटी कहूंगा..?" और उसने दीनानाथ को एक जोर की धक्का दे दिया। वह संभल न सके और बीच सड़क पर गिर पड़े। दर्जनों आंखें फकत देखती रहीं, पर किसी के कदम आगे नहीं बढ़े। अन्ततः बीना ही आगे बढ़ी थी, उन्हें सहारा देने।

दीनानाथ क्रुद्ध मन घर लौटे। तब से एक पल भी चैन से नहीं बैठे थे। कभी बैठते, फिर उठ जाते। उनका अपमानित शरीर और बैचेन मन किसी नतीजे पर पहुंचने के लिए छटपटा रहा था। वो तय नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें करना क्या है? थाने में जाए या एक हादसा समझ पूरी घटना को ही भूल जाए। उन्हें पक्का यकीन था। इस धक्का काण्ड का सूत्रधार पड़ोसी रास बिहारी सिंह का जारद पुत्र रंजीत का हाथ-पैर था। वह बहुत दिनों से बीना के पीछे हाथ धोकर पड़ा हुआ था। रंजीत पर हाथ डालने का मतलब था। उस सिस्टम से लड़ना, जिस सिस्टम से लड़ने का हौसला अब बहुत कम लोगों में बचा है। और उस घटना को भूलने का मतलब अपने आप को मारना। जमीर को दफन कर देना था। घंटों कशमकश में पड़े रहे दीनानाथ।

बीना का तो होशोहवास गुम था। आज की घटना ने उसे बेहद डरा दिया था। आने वाले खतरों की आशंका से उसका मन बैचेन था। आज बाप के सामने यह हो गया। कल कहीं अकेला पाकर..और उसकी समूची देह में कंपकंपी दौड़ गयी थी।

" उन दोनों बाप बेटे की वजह से पूरा मुहल्ला बदनाम है, दोनों की मौत की क्यों नहीं आती..?" बीना की मां आरती देवी उन दोनों को कोसने लगी थी। रासबिहारी सिंह के बेटे ने कालोनी और आसपास के मुहल्ले वालों का जीना दूधर कर रखा था। बाप ठीकेदार था और बेटा रंगदारा। रंजीत के खिलाफ समय-समय पर नजदीक के थाने में शिकायत दर्ज होते रहे हैं। लेकिन उस पर आज तक कोई कारवाई नहीं हुई थी। उल्टे शिकायत कर्ता ही मुसीबत में पड़ जाते रहे हैं। अब लोग रंजीत का शिकायत थाने में ले जाने से कतराने लगे थे। थानेदार अभय सिंह फिल्मी दारोगा की तरह काम कर रहा था। रासबिहारी सिंह जैसे तथाकथित लोग उनका घनिष्ठ मित्र हुआ करते थे। इधर कुछ दिनों से रंजीत बीना के पीछे पड़ा हुआ था। कॉलेज के रास्ते में उसने कई मर्तबा बीना को अपना मनहूस चेहरा दिखा चुका था। बीना खौफ में थी !

दीनानाथ का परिवार बड़ा नहीं था। पत्नी आरती देवी, बड़ी बेटी सावित्री और छोटी बेटी बीना- बस! सो उनकी

जिन्दगी के सपने भी छोटे थे। पर उन सपनों में छटाक भर की भी हेकड़ी नहीं थी। सावित्री पहले ही ब्याही जा चुकी थी। बीना बीए फाइनल में थी। परीक्षा के बाद शादी के लिए लड़का ढूंढ लिया गया था। दीनानाथ को बीना से काफ़ी स्नेह था। उन्होंने बीना को बेटी की नहीं, बेटे की परवरिश दी थी। वंश वृद्धि के लिए बेटा चाहिए ही चाहिए, ऐसा कहने वालों में दीनानाथ नहीं थे। जनसंख्या वृद्धि का वह कट्टर विरोधी थे। यही कारण था कि दो बेटियों के बाद उसने परिवार नियोजन अपना लिये थे। अब तक के जीवन काल को दीनानाथ ने बहुत शान से जिये और भोगे थे। किसी तरह की कोई गफलत कोई झंझट नहीं। एक अच्छे विचारक, एक सम्मानित बुद्धिजीवी और ट्रेड यूनियन के कार्यकर्ता थे। धन- दौलत से कहीं ज्यादा उनको नीतियां प्यारी थीं। यूनियन कार्यकर्ता के साथ साथ एक नौकरी पेशा आदमी थे। वह अपने काम और विचारों में जान लड़ा देने वाले कामरेड थे। जीवन भर मानव मूल्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहने वाले, दीनानाथ पिछले साल जब नौकरी से सेवा मुक्त हुए तो चेहरे पर न थकान थी और न गम की परछाईं। जब तक सरकारी पद पर रहे, नियम के विरुद्ध कभी कोई काम नहीं किये। न किसी से एक पैसा नाजायज लेना न किसी को देना। हमेशा उसूलों के साथ जिते रहे। आदमी को हमेशा अपने उसूलों के साथ चलना चाहिए। दुनिया बदल सको या न सको, लेकिन अपने मूल्य सिद्धांतों के प्रति हमेशा तत्पर रहना चाहिए। अपनी यह बात ही दीनानाथ को हौसला दे रहा था-" नहीं, मैं उन्हें छोड़ूंगा नहीं। आज बीना के साथ हुआ, कल किसी और के साथ भी होगा। इसके विरुद्ध किसी को तो आगे आना होगा..!"

और कालोनी-मुहल्ले में फैल रहे गुण्डाराज के विरुद्ध आवाज उठाने का उसने फैसला कर लिया। कमरे से बाहर निकले तो उनका चेहरा सख्त था। तभी सामने पत्नी आ गयी, -" कहां जा रहे हो..?" " ऐसे अपमानित होकर क्या चुप बैठा जा सकता है..?" " पर आप करेंगे क्या..?" पत्नी के मुंह से भयातुर स्वर फूट निकले "मेरा कहा मानिये, खतरा मोल मत लीजिये, बीना के लिए खतरा और बढ़ जायेगा..।" " देखो, मैं थाने जाऊंगा। छेड़खानी, मार- पीट का मामला दर्ज कराऊंगा..।" दीनानाथ ने जोर देकर कहा। " इससे क्या होगा? क्या उन्हें सज़ा मिल जायेगी ? उल्टे बीना का कॉलेज जाना बंद हो जायेगा ।" " क्यों नहीं मिलेगी सज़ा उन्हें ? कानून किसलिए बना है ?"

" आप गलतफहमी में है..।" आरती देवी ने बीच में टोका-" कानून तो रासबिहारी सिंह जैसों के लिए बना है, न कि हम जैसे लोगों के लिए है..!" " मतलब कि उन्हें सज़ा नहीं मिलेगी..?" " हां, उन्हें कुछ नहीं होगा..!" पत्नी ने फिर बीच में टोकी-" उल्टे हमारा जीवन दूभर हो जायेगा- समझो..!" " तो क्या डर के लोग घर से निकलना छोड़ दें ? शिकायत

लेकर थाने जाना छोड़ दें ? " दीनानाथ उत्तेजना में चीख पड़े, -" फिर तो गुण्डों का राज हो जायेगा..!"

" ऐसा होना अब भी बाकी बचा है..?" पत्नी भी तकरार कर बैठी।

" हां, अभी भी कानून है, अभी भी समाज में सब चोर नहीं हो गये हैं। सब रासबिहारी सिंह नहीं हो गये हैं। " दीनानाथ की आवाज देर तक घर में गूंजती रही।

वे थाने पहुंचे। छेड़खानी के साथ मार-पीट की रिपोर्ट लिखवाई। थानेदार अभय सिंह काफ़ी चोटा और छंटा हुआ आदमी था। उसने पहले दीनानाथ को अपने तरीके से धमकाया,- डराया और कहा भी कि चुपचाप लौट जाओ। इज्जतदार लोग अपनी फटी चादरें और नहीं फाड़ा करते, चुपचाप उसे खटिया के नीचे छिपा देते हैं। परन्तु दीनानाथ तो दृढ़ संकल्प के साथ घर से निकले थे, सो अपनी जिद्द पर अड़े रहे। चादर फटते हैं तो फटे। विवश होकर उनकी शिकायत दारोगा को लिखनी ही पड़ी, -" लिख तो लिया, पर हम कुछ कर नहीं सकते है।"

" क्यों, क्यों नहीं कुछ कर सकते है?"

" क्योंकि रंजीत चुडीदार सिंह का आदमी है..।" दारोगा ने खीज कर कहा था।

" पर आप तो सरकार के आदमी है, और सरकार ने आपको इसीलिए यहां बैठाया है कि आप आम- आदमी की शिकायतें सुने और उसे दूर करें। लेकिन आप तो विधायक का टोपी पहने लगते है।" और दनदनाते दीनानाथ थाने से बाहर निकल आये थे।

" लगता है, ये ससाला बूढ़व, जरूर कुछ काण्ड करेगा..?" अभय सिंह एक सिपाही से कह रहा था। थाने में रिपोर्ट लिखा कर दीनानाथ ने जैसे कोई बड़ा गुनाह कर लिये थे। इस बात का प्रमाण वे दो बड़े पत्थर थे जो उस रात उनके घर की छत पर " धम!" " धम!" आ गिरे थे। इतना ही नहीं रंजीत और उनके साथियों ने उनके घर के बाहर खूब धम्मा- चौकड़ी मचाई " बूढ़व! तेरी धोती खोल बाज़ार के चौराहे पर फहराऊंगा " कह चलते बने थे।

सुबह दीनानाथ फिर थाने गये। दारोगा ने देखते ही भगा दिये-" मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। किस-किस के घर में पहरेदारी लगाता फिरूं? मैंने तुमसे कहा था न कि रंजीत चुडीदार सिंह का आदमी है, - उससे दूर रहो, पर तुमने नहीं माना। अब खुद लड़ो उससे..।"

उसके बाद का हाल- हालात यह थे कि पके कटहल की भांति हर दूसरे-तीसरे दिन दीनानाथ के छत पर पत्थर गिरने लगे। आरती देवी का डर चरम पर पहुँच गया " अब क्या होगा..?" उसके मुख से निकलने लगा। दीनानाथ के सामने यह एक कठिन घड़ी थी। उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसे करना क्या है। उसे यह बात तो समझ में आ गयी थी कि रंजीत के खिलाफ पुलिस के पास कोई पनीशमेंट नहीं है। उस पर कोई कार्रवाई नहीं करेगी। अब सवाल था कि किससे मदद मांगी जाए। दिमाग में सवाल ही सवाल थे, उत्तर नहीं।

उस दिन उनकी स्कूटर की गति उनकी सोच की गति से भी कम थी। हांलाकि दीनानाथ ने विधायक चूडीदार सिंह से मिलने का निर्णय ले तो लिया, मगर वे अभी आधी दूरी तय किये थे कि तभी उनकी आंखों के आगे विधायक चूडीदार सिंह का नाराज़ चेहरा आ गया। अचानक ही उनका पांव ब्रेक पर चला गया। पिछले साल हुए चुनाव में उन्होंने चूडीदार सिंह को वोट नहीं दिये थे। वोट नहीं देने से चूडीदार सिंह काफ़ी नाराज़ भी थे। ऐसा बहुतों से सुन रखा था। इसी के साथ वह दृश्य भी आंखों के सामने घूम गया। वोट के दिन अपने साथियों के साथ पहुँच कर रंजीत ने कहा था- "चाचा, आप घर जाइए, आपका वोट हम डाल देंगे, लाइन पर कब तक खड़े रहोगे..?"

दीनानाथ सनक गया। कहा, - "नहीं, मैं अपना वोट खुद डालूंगा.. तुम हमें रोकने वाला कौन होता है..?" "अब यहां लाइन से कोई वोट नहीं पड़ेगा..!" लड़कों ने बूथ पर कब्ज़ा करना चाहा था। बस दीनानाथ भड़क गये। ट्रेड यूनियन का कोट पहन रखे थे उन्होंने। कहा, - "देखता हूं, वोट देने से हमें कौन रोकता है..!" इस तरह न चाहते हुए भी दीनानाथ को चूडीदार सिंह के विरुद्ध जाना पड़ा था। उधर दौलत और हेराफेरी के बलबूते चूडीदार सिंह ने चुनाव जीत लिया था। जीत के बाद ही रंजीत उनके घर के बाहर आकर धमकी दे गया था, "हमें मालूम है,, आपने नेता जी को वोट नहीं दिये हैं, अब देखना मजा।" और एक वोट की वजह से दीनानाथ अलग

- थलग पड़ गये थे। घर के लोग भी डरे हुए थे। परन्तु दीनानाथ में डर लेशमात्र भी नहीं था। उन्हें जो सही लगा, वही किये उसने। पता नहीं कितनी देर बाद उन्हें होश आया। पर इसके साथ ही यह अहसास भी हो गया कि वह चूडीदार सिंह के आवास तक पहुँच गये हैं।

पहले से ही वहां पत्रकार पाण्डेय, दारोगा अभय सिंह और ठीकेदार रासबिहारी सिंह बैठे हुए थे और विधायक के साथ चाय- बिस्कुट कुतर रहे थे। उन्होंने उन लोगों की तरफ देखना चाहा, अगल- बगल देखना चाहा, पर नज़रें साथ नहीं दे रही थीं। उनकी व्याकुल आत्मा, बैचेन मन एक कोने में कुछ देर के लिए दुबक सा गये थे। जब आदमी अकेला पड़ जाता है तो शिकारी कुत्ते उसे दौड़ाना शुरू कर देते हैं। लगभग पस्त हालत में दीनानाथ ने विधायक चूडीदार सिंह से गुहार लगाई, फरियाद किये। लेकिन विधायक का जवाब भी उतना ही सपाट मिला, - "नहीं इस मामले में हम तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकते हैं। जिस रंजीत के खिलाफ़ तुम शिकायत लेकर आये हो, वो मेरा वोट बैंक है। उनके ही दम पर उस मुहल्ला से मुझे हज़ार वोट मिले। फिर, तुमने तो मुझे अपना ही वोट नहीं दिया था। क्यों करूँ तुम्हारी मदद.. चल जा, देख कोई दूसरा दरवाज़ा..।"

उस दरबार में दीनानाथ की एक नहीं सुनी गयी। उल्टे बांह पकड़ सुरक्षा गार्ड ने उन्हें गेट से बाहर कर दिया था। इसके साथ ही दीनानाथ की तंद्रा टूटी। एक जाना पहचाना चेहरा सामने था। उसी ने उन्हें जगाते हुए कहा, "

दीनानाथ बाबू, आप इस सुनसान सी जगह में खड़े क्या कर रहे हैं..?"

वह एक मजदूर था और यूनियन कार्यकर्ता भी।

"वैसे ही खड़ा हो गया था, बात कुछ नहीं है शंभु." उन्होंने कहा और स्कूटर घर की ओर मोड़ लिये थे।

क्षोभ और आक्रोश का मिला- जुला भाव उनके चेहरे पर साफ़ झलक रहा था।

घर लौट कर दीनानाथ अभी ठीक से बैठे भी नहीं थे कि बीनाभागती हुई घर में दाखिल हुई। उसके बदन से दुपट्टा गायब था। आंतकित चेहरा उसका सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था।

"कॉलेज में रंजीत ने मेरा दुपट्टा..!" बाकी शब्द उसके गले में ही अटक गये थे और वह फूट फूट कर रोने लगी।

उस दिन दोपहर का खाना किसी ने नहीं खाये। दीनानाथ को छोड़ दोनों मां- बेटी के मन में रंजीत का डर मलेरिया बुखार की तरह चढ़ गया था। इधर बीना को लेकर दीनानाथ सीधे कॉलेज प्राचार्य से मिल कर एक शिकायत पत्र दिये। लेकिन प्राचार्य पहले से पस्त थे। रंजीत का डर कॉलेज परिसर के कोने- कोने में मौजूद था। उसके खिलाफ़ कोई मुंह खोलने को तैयार नहीं थे। प्राचार्य खुद डरा हुआ था - "हां, रंजीत से हम सभी डरे हुए हैं। बात - बात में वह विधायक चूडीदार सिंह का नाम लेता है- "दिखा देंगे कहता है " दीनानाथ को लगा प्राचार्य सच कह रहा है।

वहीं, दीनानाथ बीना की सहेलियों से भी मिले। कहा कि तुम लोग सब मिल कर रंजीत के खिलाफ़ आवाज उठाओ। ललकारते हुए कहा, - "आज बीना के साथ हुआ, कल को तुम में से किसी के साथ होगा, क्या तब भी चुप रहोगे..?" लेकिन अधिकांश लड़कियाँ तब भी चुप ही रही। निराश दोनों बाप- बेटी घर लौट आये।

तब से कई दिन बीत गये। उस परिवार में रात को किसी को नींद नहीं आती। डर ने उस घर में एक स्थायी जगह बना लिया था। पता नहीं कब दरवाज़े पर लात प्रहार हो। और दरवाज़ा टूट कर गिर पड़े, फिर..?

बीना का कॉलेज जाना बंद हो गया था। आरती देवी आसमान की ओर ताकती रहती। अलबत्ता दीनानाथ का दिल कमज़ोर नहीं हुआ था। शरीर भी लकवाग्रस्त नहीं हुआ था। दिन भर में कई बार हाथ- पैर हिला- डुला के देख लेते थे- सब ठीक- ठाक है न यह जान लेते थे। वह इन दिनों बीना का साया बने हुए थे। जहां जाती, साथ जाते। अब बाज़ार खुद जाते और सामान लेकर सीधे घर आते। लोगों से मिलना- जुलना उन्हें निरर्थक लगने लगा था। इस खातिर समय और समाज दोनों से मुंह मोड़ लिये थे।

उस रात खाना खाकर दीनानाथ देह सीधा करने के ख्याल से लेटे हुए थे। अंदर कमरे में दोनों मां- बेटी सोई हुई थीं। दीनानाथ की आंखों में आज दिन भर का रेला-पेला घूम रहा था। बड़ी मुश्किल से आज एस. पी. बेसरा साहब से मिलने में वह सफल हुए थे।

" जाइए, मैं थानेदार को फोन कर देता हूँ। वह आपकी मदद करेगा..!" कहा था।

पर बेसरा साहब का फोन आना, थानेदार अभय सिंह को बड़ा नागवार गुजरा था, " तुम्हारी ऐ हिम्मत, मेरी शिकायत करने एस. पी. साहब तक पहुँच गये..?" थाने में दीनानाथ को देखते ही अभय सिंह चीखा था, "- तुम क्या समझते हो, इसके बाद भी हम तुम्हारी मदद करेंगे? मैं कहता हूँ भाग जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम ही को अंदर कर दूँ..। "

दीनानाथ को भी लगा, इस देश में कानून नाम का कोई चीज़ नहीं है। अगर है, तो वह है, प्रभाव- पहुँच ! देश का कानून गरीबों को निगल जाता है और अमीर बादशाह बना फिरता है। उनका आत्म- सम्मान चूर- चूर हो गया था। एक झटके में कानून- न्याय से उनका विश्वास उठ गया था। और विश्वास- भरोसा जब किसी का किसी से उठता है तो आदमी दूर गगन को खड़ा देखता रह जाता है, जहाँ परिंदों को भी उड़ने की खुली आजादी मिला हुआ है। दीनानाथ ने सोचा, अब कहीं से न्याय की आश लगाना बेकार है। जो होने का है, सो होगा।

एक बार क्षेत्र के विधायक से मिल लेने में क्या हर्ज है, - यह उनका आखरी निर्णय था।

उन्हें पता था कि विधायक चूडीदार सिंह अपने बंगले के बाहर फरियादियों की सुन रहे हैं। न चाहते हुए भी उनका स्कूटर विधायक बंगले की ओर बढ़ गया था। कई रोक-टोक के बाद ही वह विधायक के साथ करीब पहुँच पाये थे। लेकिन सिर पर सवार उन्हें देख विधायक चूडीदार सिंह चीख पड़ा, " इस आदमी को किसने अंदर आने दिया, - बाहर निकालो इसे। इसकी कोई बात नहीं सुननी है मुझे। बड़ा लाल झण्डा वाला, नीतिकार बनता फिरता है- निकालो- निकालो..!"

दीनानाथ का मन क्षोभ और घृणा से भर उठा, "- ऐसा अहंकार मत पालो विधायक जी, पांच साल के लिए विधायक बने हैं- परमानेंट नहीं। आज आपकी बारी है, कल कोई और होगा। तब ऐ रूआब का क्या होगा..?"

" अरे, निकालो इसे, इसे देखता हूँ तो टेंशन बढ़ जाता है..। "

विधायक के सुरक्षा गार्डों ने उन्हें घसीट कर बाहर कर दिया। हाथ छुड़ा कर दीनानाथ ने चीखना शुरू किये, "- देख लो भाइयों, इन्हें अपना वोट नहीं दिये तो मेरी मदद करना तो दूर, उल्टे अपने पालतू कुत्तों को हमारे छोड़ रखा है, मेरी बेटी को दो बार किडनैप कराने की कोशिश की इन्होंने। लेकिन यह याद रखे, मेरे जीते- जी, मेरे परिवार तक इनके कुत्ते नहीं पहुँच पायेंगे। आखिरी दम तक लड़ूंगा मैं। इनकी कोई भी मंशा पूरी होने नहीं दूंगा- नहीं होने दूंगा..!"

" अरे, इस पागल को बाहर निकालो..!" चूडीदार सिंह पुनः चीखा था।

दो सुरक्षा गार्डों ने उन्हें धकियाते- डंडा करते हुए बाहर कर दिया था।

तभी दूर खड़ा रंजीत पर उनकी नज़र पड़ी। लड़कों के बीच उसे खड़ा देख, दीनानाथ सुलग उठे थे। विधायक द्वारा दुत्कारे जाने और उनके अंगरक्षकों द्वारा पीटे जाने से वह पहले से ही क्रोध की अग्नि में जल रहे थे। सामने रंजीत को देखकर उनकी आंखों में खून उत्तर आया। पता नहीं उनकी बूढ़ी हड्डियों में इतनी ताकत कहां से आ गयी कि वे रंजीत पर झपट पड़े। जब तक रंजीत संभलता अपनी लात- मुक्कों से उन्होंने उसकी हालत बिगाड़ दी। रंजीत को इसकी जरा भी उम्मीद न थी। अपने दो टूटे दांत और मुंह से रिसते खून देख वह एक दम से बौखला गया। उसने दीनानाथ को जमीन पर पटक दिया और छाती पर चढ़ बैठा। गुस्साये उसके साथी, दीनानाथ पर ऐड़ी प्रहार करने लगे। दीनानाथ बेहाल हो गये। जब प्रतिरोध की क्षमता उनमें नहीं बची तो वह चीखने- चिल्लाने लगे थे।

शोरगुल सुन लोगों की भीड़ जमा हो गयी। विधायक घबराये हुए अंगरक्षकों के साथ बाहर आ गया। सबसे पहले उनकी नज़र रंजीत पर पड़ी। उसकी फटी हुई कमीज, सूजा हुआ गाल और मुंह से रिसते खून ! अपने आदमी की ऐसी हालत देख विधायक चूडीदार सिंह सकते में आ गया था। आज तक किसी में इतनी हिम्मत नहीं हुई थी कि उनके किसी आदमी पर कोई हाथ उठा दे। दीनानाथ के मुंह से अब भी गाली और कराह बाहर निकल रही थी। और आंखों से अंगारे बरस रही थीं। अपने सामने विधायक चूडीदार सिंह को खड़े देख अति घृणा से " पच्च " से जमीन पर थूक दिये थे। विधायक को लगा वह थूक जमीन पर नहीं, उनके चेहरे पर पड़ा हो। वह अपने आप को रोक नहीं सके, जमीन पर लहलुहान पड़े दीनानाथ की देह पर एक लात जमा दी उसने।

लेकिन लात जमाने के दूसरे ही क्षण वे स्वयं भी गिर पड़े। रंजीत की पिटाई और लहलुहान उसके चेहरे से जैसे विधायक जी भी डर गये थे। इसी के साथ एक अपमान बोध भी उनके मन में घर कर गया था। जब तक उनके शुभचिंतक उन तक पहुंचते, वे दीनानाथ के बगल में ही चारो खाने चित हो चुके थे।

किसी दूसरे देश की आत्मा को जानने का सबसे अच्छा तरीका उसका साहित्य पढ़ना है।

अमोस ओज़



मुंहबोली बिटिया

फेसबुक का क्या भरोसा, किससे, किस तरह से मिला दे! बहुत से दुष्ट, दुष्कर्म करने वाले, ठग जो लड़का होकर लड़की बनते हैं, बहुतेरे उसके चक्कर में आकर जेब खाली कर दिया करते हैं। उसमें अकेले फेसबुक को दोषी करार देना उचित नहीं है। हम जो ढूँढ़ेंगे हमें वही तो मिलेगा।

एक फेसबुक मित्र से बात होती थी। मैं उसका विस्वास नहीं करता था। क्या पता वह लड़की है या लड़का!

एक दिन किसी बात को लेकर मैसेंजर पर चैट हो रही थी। किसी बात को लेकर हम गंभीर थे कि, उस मित्र रोशनी ने कहा, "मन कभी छोटा नहीं करना, मैं आपकी बेटी ही हूँ!"

अंतरात्मा को कुछ विस्वास सा होने लगा था। मैं मानने के लिए तैयार नहीं था। यह भी कोई ठगी की नई चाल तो नहीं है। रोशनी ने अपने बाप से बताया कि, "मुझे उन्होंने बेटी मान लिया है!"

हमारी कोई जान - पहचान नहीं थी। उसके पिता ने कहा, "पाल - पोसकर बड़ा करके शादी भी कर दिया है, अब बहुत बाप मिल जाएंगे तुम्हें!"

उसने कहा, "बहुत नहीं पिताजी, बस एक पिता की मैं मुंहबोली बिटिया हूँ!"

मैं उससे बात करना नहीं भूलता था। मेरे बेटे थे, बेटी नहीं थी। मुझे कोई अनुभव नहीं था, बेटी के बारे में। मैं अपनी मुंहबोली बिटिया को कभी बिट्टू, कभी बिटिया रानी कहता था। उसने मुझे बाप का दर्जा दिया था।

दामाद जी से भी बात हुई थी। एक दिन रोशनी से बहुत देर तक बातें हुई थीं। बहुत अपनापन महसूस किया था मैंने! उसके पिता ने श्रीमद्भागवत पुराण कथा सुनने का फैसला लिया था। मुझे भी निमंत्रण दिया गया था। श्रीमद्भागवत पुराण कथा प्रारम्भ से अंतिम दिन तक मैं रोशनी के घर में रहा, जिस प्रकार से अपने घर में रहते हैं लोग, जरा भी परायापन नहीं लगा था।

रोशनी के बच्चे नाना - नाना कहकर ऐसे गले लगाया था, वहां मुझे पता ही नहीं चला कि, सप्ताह कैसे बीत गया। रोशनी के पिता ने यह एहसास होने ही नहीं दिया कि, रोशनी मेरी नहीं उनकी बेटी है। रोशनी की मम्मी तो सबसे यही कहती थी किसी भी निर्णय के समय

कि, 'रोशनी के उस पिता से भी पूछ लीजिए!'

रोशनी के पति ने भी मुझे ससुर का दर्जा दिया था। मैं हैरान था कि, इस गांव के लोग, सभी रिश्तेदार मुझे इतना जल्दी कैसे अपना लिया। इतना भरोसा मुझपर कैसे करते हैं यह लोग! हां उनके समाज, उनके जाति का था मैं! फिर भी फेसबुकिया मिलन था, इतना व्यापक रूप से विश्वास करेंगे मैं खुद कल्पना नहीं किया था। एक अनजानी डोरी से बंधा हुआ मैं चला आया था यहां।

जब वहां से मैं चला, वहां के लोगों के आंसू इस बात के गवाह थे कि, मैं उनके लिए बिल्कुल पराया नहीं था। रोशनी लिपट गई थी मुझसे, फफक-फफक कर रो पड़ी थी; तब ऐसा लगता था कि मेरा कलेजा निकल रहा है। मैं भी सबकुछ भूलकर रो पड़ा था।

मिलना बिछड़ना यह जीवन का हिस्सा है। हम अलग-अलग देखने को हुए थे। अपनी मुंहबोली बिटिया से मेरा मन, मेरा दिल अलग नहीं हुआ था। बिटिया मेरी रोशनी मेरे जीवन में रोशनी बनकर आई थी। ऐसा खयाल और कोई नहीं रख सकता है। जबसे मेरी पत्नी भारती स्मृति शेष हुई थी तबसे मैं जीवन के अंधेरे में भटक रहा था। मुझे रोशनी बिटिया मेरे जीवन के अंधेरे में सचमुच रोशनी की एक लौ बनकर दिखाई दी थी।

दामाद जी पश्चिम बंगाल में कोलकाता शहर के एक कंपनी में काम करते थे। मेरी रोशनी दामाद जी के साथ कोलकाता चली गई थी। वह अपने पति के साथ बहुत खुश थी। बच्चे मुझसे बात करते हैं, बिटिया भी बात करके हालचाल लेती रहती है।

हर समय, सभी ऋतुओं में एक समान मौसम नहीं रहता है; उसी प्रकार यह जीवन सदा सुखी नहीं रहता है। अचानक तबियत मेरी बिगड़ी की मुझे अस्पताल पहुंचाया गया था। मेरी बिटिया रानी रोशनी ने फोन किया था लड़के - बहुओं ने बताया कि, 'पिताजी की हालत ठीक नहीं है!'

रोशनी ने सारी जानकारी ली थी। रोशनी अकेले कोलकाता से सीधे अस्पताल आई थी। मुझे होश नहीं था, था भी तो मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा था।

रोशनी पढ़ी लिखी थी, फिर कोलकाता में रहकर, दामाद जी के साथ बहुत सुलझ चुकी थी। मुझे याद है जब

एक आदमी ने फेसबुक पर बिटिया के विवाह के लिए पैसे मांगे थे तब, मेरी मुंहबोली बिटिया ने उसे पैसे भेज दिए थे। मैंने उसे डांटते हुए कहा था कि, "सही - गलत का पता लगाया नहीं, पैसे भेज दिये। जानती हो कि, आजकल कितनी ठगी चल रही है!"

मेरी बिटिया ने गलती मानी थी। भविष्य में पता करके ही किसी की मदद करने को कहा था।

रोशनी ने अस्पताल में डॉक्टरों से बात किया था। डॉक्टरों ने कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया था। तब मेरी मुंहबोली बिटिया रोशनी ने कहा, "डॉक्टर पैसों को एंठने के लिए जवाब नहीं दे रहे हैं, मैं अपने बाप को अपने साथ ले जाऊंगी!"

सभी चुप थे। लड़कों - बहुओं को भी यही लगता था क्योंकि, किसी डॉक्टर ने नहीं कहा था कि, यह ठीक हो जाएंगे, इनको कौन सा मर्ज है; जबकि बहुत सी जांचें हो चुकी थीं! लड़कों - बहुओं के रोने पर उसने कहा, "मुझ पर यकीन करें, मैं इनकी बिटिया हूं, यह मेरे बाप हैं!"

सबने सोचा हो सकता है पापा वहां ठीक हो जाएं। सभी ने हामी भर दी थी, साथ में एक लड़का भी जाने को तैयार हो गया था। रोशनी ने कहा, "एक से दो रास्ते में अच्छे रहेंगे हम भाई-बहन!"

मुझे जब होश आया तो बाटल चढ़ी हुई थी मेरे बांह में, रोशनी मेरे पास बैठी थी, छोटा लड़का कुछ लेकर बाहर से आ रहा था। यह जगह मेरे लिए अनजानी थी। यह कोई बड़ा, साफ-सुथरा अस्पताल था। मेरा कमरा शायद प्राइवेट वार्ड था। नर्स बाटल बदल रही थी।

मेरे मुंह से निकला, "मैं कहां हूं, बिट्टू!"

रोशनी ने मेरे सिर पर हाथ रखकर फेरा, मुझे अपार खुशियां हुईं, मैंने जाना मां, बहन, पत्नी से भी ज्यादा प्यार करने वाला कोई है तो वह है बिटिया! उसके हाथ में ऐसा अपनापन महसूस किया मैंने, जिसको लिख पाना मेरे लिए संभव नहीं है। मेरी बिटिया का हाथ तो जादुई है; उसके हाथ फेरने से ही मेरी बीमारी कम होती नजर आ रही थी।

रोशनी ने कहा, "पिताजी, अब कैसा लग रहा है? आप मुझे पहचान लिया है या नहीं!"

मैंने कहा, "हां बिट्टू, मेरा कलेजा, मेरी बिटिया! कहां ले आई है मुझे!"

तभी मेरे बेटे ने कहा, "पापा, दीदी न होती तो, हम क्या करते, हमारे तो समझ में ही नहीं आ रहा था। दीदी आपको कोलकाता ले आई है!"

मुझे बहुत शुकून मिल रहा था। मैंने कहा, "मैं बिटिया के खर्च से ठीक हुआ हूं!"

रोशनी ने मेरे मुंह पर हाथ रख दिया। रोशनी ने मुझे डांटते हुए कहा, "दो ही पैदा होते हैं, बिटिया या बेटवा फिर उनको छोटे से बड़े करते हैं आप, हमारे उधर बिटिया के पैर छूते हैं, बिटिया के यहां नहीं खाते हैं! यहां बिहार - बंगाल में बिटिया पैर छूती है बाप के, बिटिया का फर्ज है जिसे मैं निभा रही हूं! अभी बच्चे, आपके दामाद जी

आएंगे उनके सामने ऐसे मत बोलना वरना आपको बहुत तकलीफ होगी!"

मेरी मुंहबोली बिटिया रानी ने कहा, "हम भाई-बहन मिलकर अपने बाप को ठीक किया है!"

मुझे ऐसा लग रहा था कि, यह मेरी बेटा भी है, मां भी है। मैं उससे डर भी रहा था, प्रेम का भाव मुझे डरा रहा था कि, यह नाराज न हो जाए, यह कहीं मुझसे रूठ न जाए, मुझे वह छोटी सी बच्ची, गुड़िया सी लग रही थी। मैं उसे अपनी कल्पना से गोद में बैठा लिया था। मेरी आंखों से प्रेमाश्रु बहने लगे थे।

मुझपर ही नजर रखती थी मेरी नन्ही सी बच्ची, गुड़िया रानी! उसने मेरी आंखों से आंसू निकलते हुए देखा तो कहा, "यह क्या बापू, आप रो रहे हैं!"

मैंने कहा, "नहीं बिट्टू, यह तो खुशी के आंसू हैं, ठंडे होंगे!"

यह मैंने रोशनी को मेरी आंखों से बहते आंसूओं को पोंछते समय कहा था। रोशनी भावुक हो गई थी। उसके आंखों में आंसू भर आए थे, जिन्हें वह चुरा लेना चाहती थी। मैंने जानबूझ कर माहौल को बदलने के लिए कहा, "रोशनी, यह तुम्हारा भाई तुम्हें चिल्लाता तो नहीं था!"

उसने झट कहा, "मैं चिल्लाऊंगी क्यों, गलती करेंगे तो एक लपाड़ा दूंगी खींचकर!"

उसने मेरे बेटे को गले से लगा लिया, फिर कहा, "इसने मुझे कभी भी गुस्साने ही नहीं दिया, जो बोला वही करता है, मेरी इज्जत करता है, बड़ी बहन जो हूं!"

तभी लड़के - बच्चों को साथ लेकर दामाद जी आ गए थे। दामाद जी ने मुझे हाथ जोड़कर प्रणाम किया। कहने लगे, "मुझे पता था कि, आपको होश आ गया होगा। अब आप फिर से लिखना शुरू कर देंगे!"

बच्चे नाना जी, नाना जी कहते थे। मम्मी उनकी लिपटने से मना कर दिया था, बाटल जो चढ़ रही थी। फिर भी बच्चों को मैं एक हाथ से प्यार करने लगा था।

बच्चे कह रहे थे, "नाना जी हमारे घर कब चलेंगे, हम नाना जी को खीर खिलाएंगे!"

रोशनी ने कहा, "डॉक्टर से बात करते हैं, फिर नाना जी को घर ले चलते हैं!"

दामाद जी ने रोशनी को घर भेज दिया था, मेरे बेटे उसके भाई के साथ। फिर वो डॉक्टरों से बातचीत करते रहे थे। अस्पताल के सभी काम निबटाने में लगते थे, मेरे पास मुझे भी देख जाते थे; एक नर्स को मेरे पास बैठाकर रखे थे।

मुझे नींद आ गई थी। रात दस बजे मेरी नींद खुली, रोशनी भाई के साथ आ चुकी थी। दामाद जी मुझसे कहा, "आपके जागने का इंतजार था, अब मैं जाऊंगा!"

मुझे बाथरूम जाना था। झट रोशनी ने उठायी, एक तरफ लड़के ने पकड़ना चाहा तो रोशनी ने कहा, "तब दो जन लगते थे। अब तो मैं अकेले संभाल लूंगी!"

फिर भी दोनों भाई - बहन मुझे ले गए, बाथरूम करवाकर फिर पलंग पर पौड़ा दिया था। बाटल चढ़ने बंद

हो गए थे। बच्चों को लेकर दामाद जी जा चुके थे।

मेरी पलंग के एक बाजू बेटी, एक बाजू बेटा पड़ गए थे। कुछ फलों के रस मुझे मेरी मुंहबोली बिटिया ने पिलाया था। मैं बिटिया को अब अच्छी तरह से समझ लिया था कि, बिटिया तो बहुत जरूरी है!

समय गतिमान है, समय का पहिया चलता रहता है, वह तो रुकने का नाम नहीं लेता है।

मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी। एक हफ्ते हम अपनी बिटिया रानी के पास रहने के बाद वापस गांव लौट रहे थे। बिटिया रोशनी ने अपने भाई को बहुत सी चीजें खरीद कर दिया था। मैं उसे मना करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया था।

हम बाप - बिटिया हावड़ा स्टेशन में लिपटकर रोने लगे थे; तब दामाद जी ने कहा था कि, "मत रोओ तबियत बिगड़ जाएगी। फिर एक महीने बाद स्कूल खुलने से पहले इसे मैं आपके पास भेज दूंगा। एक हफ्ते रुककर आ जाएगी!"

अपने आंचल से मेरे आंसुओं को रोशनी ने पोंछकर कहा था कि, "अपना खयाल रखना बापू!"

मैं उसके आंसू पोंछकर उसे अपने अंक में भर लिया था। माथा चूम कर कहा था रोना नहीं, मैं खुद रो पड़ा था। गाड़ी हारन बजाकर धीरे धीरे स्टेशन छोड़ने लगी थी। मेरे बेटे ने बहन - बहनोई के पैर छूकर गाड़ी में मेरे सामने की सीट पर बैठ गया था।

दामाद जी ने ए सी में सीट आरक्षित करवा दिया था। मेरा बेटा अभी भी रो रहा था।

मेरी बिटिया आएगी तो उसे मैं यह दूंगा, वह दूंगा; ऐसे सजाऊंगा उसे! उसपर यह अच्छा लगेगा मैं सपने देखने लगा था। जाने कब नींद आ गई थी मुझे पता ही नहीं चला था।

लघुकथा

डा. मीना बैस रघुवंशी

ई- 7/20, चित्रगुप्त सोसायटी,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)
पिन- 462016

छोटी डील

मिस्टर धाकड़े ने ऑफिस फर्नीचर का बिजनेस शुरू किया था। वह कई दिनों से इस प्रयास में थे कि उन्हें सरकारी विभाग से बड़ा वर्क ऑर्डर मिल जाए तो उन्हें कुछ आमदनी हो जाए और बहन की शादी में मदद मिल जाए।

किसी ने उन्हें एक विभाग के संचालक का नाम बतलाया कि अमुक विभाग के संचालक एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं व बेहद भ्रष्ट हैं उस विभाग का एकाउंट ऑफिसर उनका दलाल है उसके माध्यम से वह कमीशन लेते हैं।

मिस्टर धाकड़े ने उस विभाग के एकाउंट ऑफिसर से मुलाकात की व दो तीन मुलाकातों के बाद दो लाख के वर्क ऑर्डर के लिए उसे बीस हजार कमीशन एडवांस में दे दिया। कमीशन एडवांस देने के बावजूद जब तीन महीने तक उन्हें वर्क ऑर्डर नहीं मिला तो मिस्टर धाकड़े ने एकाउंट ऑफिसर से वर्कऑर्डर दिलवाने का अनुरोध किया।

एकाउंट ऑफिसर बड़ी कुटिलता से मुस्कराया और मिस्टर धाकड़े से बोला "मिस्टर धाकड़े हमारे संचालक एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं व छोटी-मोटी डील के पैसे नहीं लेते। बीस हजार कमीशन तो मैं आपको वर्क ऑर्डर देने के लूंगा। हमारे संचालक को नित नई-नई किस्म की औरतों से शारीरिक संबंध बनाने में बेहद मजा आता है बेहतर होगा तुम अपनी युवा बीवी या अपनी युवा बहन को उनके साथ दौरे पर दिल्ली भेज दो।"

मिस्टर धाकड़े ने आश्चर्य से कहा "यह आप क्या कह रहे हैं संचालक महोदय कॉलेज में अध्ययनरत दो युवा बेटियों के पिता हैं। संचालक महोदय को अपनी कामवासना की पूर्ति प्रोफेशनल जैसे कॉल गर्ल वगैरह से करनी चाहिए।" एकाउंट ऑफिसर ने कहा "प्रोफेशनल औरतों के साथ शारीरिक संबंध बनाने में एड्स व यौन संक्रमित रोगों का खतरा होता है इसलिए वे पेशेवर औरतों से शारीरिक संबंध बनाना पसंद नहीं करते। आपको अगर वर्क ऑर्डर चाहिए तो अपनी युवा बीवी या युवा बहन को अगले हफ्ते साहब के साथ दौरे पर भेज दें और हों अपनी बीवी व बहन को बता दीजिए कि शारीरिक संबंध के दौरान उन्हें इस बात की सावधानी रखनी होगी कि वे प्रैग्नेंट न हो जाएं क्योंकि सर किसी प्रोटेक्शन का इस्तेमाल नहीं करेंगे उन्हें तो फुल मस्ती चाहिए।"

मिस्टर धाकड़े ने गुस्से से एकाउंट ऑफिसर से कहा कि "तुम अपना वर्क ऑर्डर अपने पास रखो ऐसे घटिया प्रशासनिक अधिकारी से मैं कोई डील नहीं करना चाहता जो छोटी डील में दूसरों के घरों की औरतों की इज्जत का सौदा करता हो। जहाँ तक एडवांस में दिए पैसे की बात है तो मैं वह तो तुम से वसूल ही लूंगा।" इतना कहकर गुस्से में धाकड़े जी एकाउंट ऑफिसर के केबिन से बाहर निकल गये।



प्रवीण पारीक 'अंशु'

सिरसा(हरियाणा)

गज़ल

1

दिलो जां किसी पर लुटाने की बातें
हैं क्रिस्से, कहानी, फ़साने की बातें

बची अब भला किसमें ईमानदारी
फ़क़त ये हैं सुनने - सुनाने की बातें

मुकर्रर किया है जिन्हें अपना मांझी
वही कर रहे हैं डुबाने की बातें

कोई ये कहेगा, कोई वो कहेगा
अजी छोट्टिये भी ज़माने की बातें

जिन्हें ऊँचा उठना सिखाया था हमने
वही कर रहे हैं गिराने की बातें

अभी तो सफ़र का मज़ा ले रहे हैं
अभी हम करें क्यूँ ठिकाने की बातें

2

देख पाते अपने जो भीतर नहीं
वो ही कहते हैं यहाँ, ईश्वर नहीं

है गुरुर आख़िर तुम्हें किस बात का
कोई भी भगवान से ऊपर नहीं

रख भरोसा अपनी खुदारी पे तू
कोई भी तुमसे कहीं बेहतर नहीं

ज़िन्दगी के इस सफ़र में कौन है
जिसने खाई है यहाँ ठोकर नहीं

ज़िन्दगी जीना नहीं चाहेगा कौन
मौत से किस आदमी को डर नहीं

3

मुहब्बत में ये क्या तमाशा हुआ है
जले दिल है फिर भी अंधेरा हुआ है

गज़ल में जहाँ ज़िक्र तेरा हुआ है
वहाँ फिर हर इक शेर अच्छा हुआ है

हुआ धोखा अक्सर उसी शख्स के साथ
ज़माने में जो जितना सच्चा हुआ है

चले वो गए इस तरह ज़िन्दगी से
विदा डाल से जैसे पत्ता हुआ है

वफ़ा ए मुहब्बत अभी भी है ज़िंदा
तुम्हें देखकर ये भरोसा हुआ है

4.

हमें तो ग़म ही मिले हैं अक्सर, हमारा क्या है
सहे हैं दुनिया के दर्द हँसकर, हमारा क्या है

बिता ही लेंगे ये ज़िन्दगी हम तेरे बिना भी
तुझे मुबारक हो तेरा दिलबर, हमारा क्या है

किया भरोसा भी जिस किसी पर तो खाया धोखा
मिली है दुनिया की हमको ठोकर, हमारा क्या है

ये चाँद, सूरज, ज़मीं, फलक, ये जहान सारा
ये ज़िन्दगी है तुम्हारी ईश्वर, हमारा क्या है

यहाँ हैं जब तक, तभी तलक है ये दुनिया अपनी
चले गए जब यहाँ से मरकर, हमारा क्या है

हमारी मानो तो घूस मत लेना, ख़ैर छोड़ो
तुम्हारा मज़ी, तुम्हारा दफ़्तर, हमारा क्या है



नवीन माथुर पंचोली

अमझेरा धार मप्र

गज़ल

1

बोल के मोल में झूठा निकला।
कौन इस हाल में सच्चा निकला।

क्रायदा किस तरह निभाएगा ,
फलसफ़ा इश्क़ का क्रिस्सा निकला।

जो थकानों की नींद देखा था,
वो खुली आँख का सपना निकला।

घूँट भर तिश्नीगी बुझा देगा ,
रेत के बीच जो दरिया निकला।

होशियारी बहुत जताई पर,
मुश्किलों में वही टूटा निकला।

है ज़रूरत मगर नहीं लेंगे,
हाट-बाजार सब महंगा निकला।

2

रोज़ आसाँ सफ़र नहीं लगता।
हर दुआ में असर नहीं लगता।

मुश्किलों से निज़ात पालें पर,
रास्ता मुश्किलों से नहीं लगता।

हम बता दें उसे सब राज़ मगर ,
शख़्स वो मोतबर नहीं लगता।

हैं हर इक हाथ में ख़बर सारी,
कोई अब बेख़बर नहीं लगता।

पेट भरना है जिसमें मजबूरी,
काम ऐसा बसर नहीं लगता।

रात के बीतने में दिन जैसा,
कोई ठहरा पहर नहीं लगता।

भीड़ के साथ लाख में कोई,
एक जैसा मगर नहीं लगता।

3

हटाकर फिर ठिकाने पर रखा जाता है।
मुझे ही क्यों निशाने पर रखा जाता है।

गली से दूर इतना जब मकाँ है अपना,
इशारा क्यों मुहाने पर रखा जाता है।

तुम्हें मेरी ज़रूरत ही नहीं है जब तो,
मुझे फिर क्यों सिरहाने पर रखा जाता है।

घुमाना -घूमना ही जब तुम्हारी आदत है,
पता क्यों आशियाने पर रखा जाता है।

अगर उतने तुम्हारे हाथ में खर्चे नहीं हैं,
तकाज़ा क्यों ख़ज़ाने पर रखा जाता है।

4

जब लफ़्ज़ों के भाव सफल हो जाते हैं।
लोगों के जज़्बात सजल हो जाते हैं।

जिनके सिर पर हाथ हो ऊपर वालों का,
उनके सारे काम अमल हो जाते हैं।

साथ निभाते हैं आपस में जब सच्चा,
चलकर रिश्ते और सबल हो जाते हैं।

अक्सर जिनसे दिल बहलाया है हमने,
काम वही इक रोज़ शगल हो जाते हैं।

कुदरत ने इक सीख जताई कीचड़ से,
खिलकर इसमें फूल कैवल हो जाते हैं।

ऊँचे - नीचे , सच्चे - झूठे मसलों पर,
लिखते-लिखते शेर गज़ल हो जाते हैं।

आदमी से आदमी अब डरने लगे

आदमी से आदमी अब डरने लगे,
बेगुनाहों के दिल भी दहलने लगे।

किसे अपना कहें या पराया कहें,
मुखौटे हर चेहरे पर सजने लगे।

इंसानियत न जाने कहां खो गई,
हैवानियत के साये संग रहने लगे।

मुंह में राम औ बगल में छुरी रखते,
द्वेष औ ईर्ष्या के भाव पनपने लगे।

अपने घर में ही सहमा इंसान यहां,
हर रिश्ते अब बेगाने से लगने लगे।

नहीं चैन औ अमन वतन में यहा
आतंकों के साये संग रहने लगे।

आदमी से आदमी अब डरने लगे,
बेगुनाहों के दिल भी दहलने लगे।

पंछी फिर से गीत सुनाओ।

छत पर मेरे एक सकोरा ।
नीर लबालब भरा कटोरा॥
तन-मन को ये ठंडक देगा॥
गर्मी से आराम मिलेगा ॥

ची-ची कर दाना चुग जाओ।
पंछी फिर से गीत सुनाओ॥

बिन कलरव के सूनी बगियाँ ।
नीरस मन से बहती नदियाँ॥
तरुवर की बाँहे है खाली ।
राहें ताक रहा है माली॥

मन का खालीपन भर जाओ।
पंछी फिर से गीत सुनाओ॥

रात अभी तक सोयी-सोयी।
रश्मि मरीची खोयी-खोयी॥
अंबर पल-पल राह निहारे ।
सूने है मन के गलियारे॥

रिक्त हृदय की प्यास बुझाओ।
पंछी फिर से गीत सुनाओ॥

बिन कूजन कलियाँ मुरझाई ।
रूठ गयी शीतल पुरवाई ॥
बरखा ने अपना मुँह फेरा ।
छोड़ गये क्यों अपना डेरा॥

इतना सबकों मत तरसाओ।
पंछी फिर से गीत सुनाओ॥

प्रॉ.विनीत मोहन औदिच्य

सॉनेटियर व ग़ज़लकार
सागर, मध्यप्रदेश

माँ (सॉनेट)

एक शब्द..एक उच्चारण..एक ध्वनि
शैशव से वृद्धावस्था पर्यंत रहता साथ
वह आशीष.. वह मनोबल.. वह हाथ
नहीं होती पृथक्... उससे मेरी अवनि

अटल अचल मेरु सा..वह शब्द मुझे
कभी देता आश्वासन कभी सांत्वना
अश्रु-लहू से धोकर मेरी पीड़ा -वेदना
निर्द्वन्द आजीवन रखता सुरक्षित मुझे

न रखता कोई आशा..न अपेक्षा कभी
दया -करुणा का सागर सा तरल हृदय
दिया है सदा जो शब्द ईश्वर का आलय
पक्षी सा शावक का हरता जो दुःख सभी

वह शब्द,वह ध्वनि,वह उच्चारण है 'माँ'
जिसके चरणों में रहती मेरी पूरी दुनिया।

पिता (सॉनेट)

जब मुझे होता था यह प्रतीत मेरा स्वप्न जाएगा बिखर
एक मृदुल स्पर्श से मिलता हृदय को असीम बल
वटवृक्ष की छाया में यह जीवन कैसे गया था निखर
मौन आशीष से..नेत्र में भरता रहा मैं अश्रुजल।

वह छवि मनगुहा में रहती सदा,बंद नयनों में है उभरती
एक उष्ण निर्झर होता प्रवाहित शीतल होता तन
कहता मैं कुछ नहीं पर मेरी आत्मा प्रतिक्षण मिलती
रात्रि के गवाक्ष से सूक्ष्म प्रकाश से भर जाता मेरा मन।

नहीं मैं देख पाता जीवित शरीर उनका.. न उन्हें सुन पाता
किंतु नीरव गगन में..वह होते सदा मंदिर की सुगंध में
संस्कार व नैतिक मूल्य से यह गृह मेरा स्वर्ग बन जाता
यही तो था उनका विश्वास है आज जो मेरे प्राण-छंद में।

अमिय वृष्टि से जिसकी, मेरा संसार हुआ है सदा पुलकित
उस पितृ शक्ति की करता रहूँ अर्चना मैं दिवा-निशि नित।

अनिल कुमार मिश्र

राँची,झारखंड।

बसंत

हँसते,गाते
थोड़ा मुस्काते
तुम फिर आना
जीवन में बसंत!
लेकर आना
खुशियाँ सारी
जो लुप्त हो गयीं
ऋतु-चक्र में
करके
आकुल-व्याकुल
उन सबको संजोकर
फिर से तुम लाना
मेरे घर
ऐ बसंत!
तुम फिर आना
जीवन में
बसंत!

बृज राज किशोर 'राहगीर'

ईशा अपार्टमेंट, रुड़की रोड, मेरठ (उ.प्र.)-250001

ग़ज़ल

कुछ सवालों की बात रहने दे।
बंद तालों की बात रहने दे।

ज़िन्न छेड़ा है गर वफ़ाओं का,
चंद छालों की बात रहने दे।

रहतुमा से तू माँग ले कुछ भी,
बस निवालों की बात रहने दे।

जो न पहुँचे मेरी निगाहों तक,
उन उजालों की बात रहने दे।

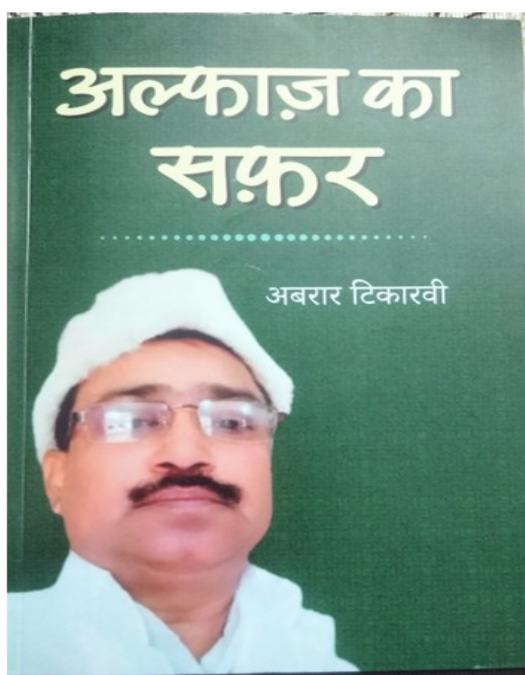
मोमबत्ती तो ठीक है बागी,
पर मशालों की बात रहने दे।

बात मुगलों की रास आती है,
छत्रसालों की बात रहने दे।

अब जुबानें ही बींध देती हैं,
छोड़, भालों की बात रहने दे।

अल्फाज़ का सफ़र :संबंध, सियासत और समाज से उपजी ग़ज़लें

अबराar टिकारवी अपनी ग़ज़लों के साथ सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहे हैं.उनकी ग़ज़लों का कथ्य, शिल्प और सौंदर्य ने पाठकों को बहुत प्रभावित किया है.पाठक बार-बार पुस्तक को प्रिंट रूप में लाने का आग्रह करते रहे हैं.यही कारण है कि उन्हें यह पुस्तक प्रकाशित करनी पड़ी. कुछ दिनों पूर्व ही केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने इस पुस्तक का लोकार्पण किया है. इस पुस्तक में अबराar टिकारवी की सौ से अधिक ग़ज़लें हैं. जिसमें टूटते सामाजिक संबंध, बदलती राजनीतिक व्यवस्था के साथ स्त्री, मां, प्रकृति, अलगाव, मिलन और और प्रेम आदि पर कई शेर हैं.ऐसे कुछ शेर देखे जा सकते हैं -



दौड़ता ही रहा ज़िंदगी के लिए
उम्र भर की यही हसरते रह गईं

मैं नींद में था ना ख्वाब में था
न जाने कैसे हिसाब में था

ये तो दुनिया है मालदारों की
हम गरीबों पे ऐतबार न कर

अपनी भूमिका में संजय अर्थव ने उन्हें प्रेम और सद्भाव का रचनाकार माना है. अबराar साहब की तमाम ग़ज़लें अच्छी हैं, यह अलग बात है कि प्रकाशक ने कई स्थान पर शब्दों की शुद्धता का ध्यान नहीं रखा है. उम्मीद की जानी चाहिए कि पाठकों के द्वारा ये पुस्तक पसंद की जाएगी.

अल्फाज़ का सफ़र
(ग़ज़लें)

-अबराar टिकारवी

वर्ष -2025,मूल्य -250,पृष्ठ -101

प्रकाशक -एच एस आर ए पब्लिकेशन, बंगलुरु

वैयक्तिक अनुभव का संसार एवं सामूहिक हित की पुकार : कांटक की 'आईना हूँ'

क्रोध, आँसू, करुणा, तरलता
आदर्शवादी सपनों और लाचारियों के
भंगुर तत्वों से निर्मित
एक औजार लेकर मैं एक क्रूर तानाशाह को
परास्त करने चल दिया हूँ।

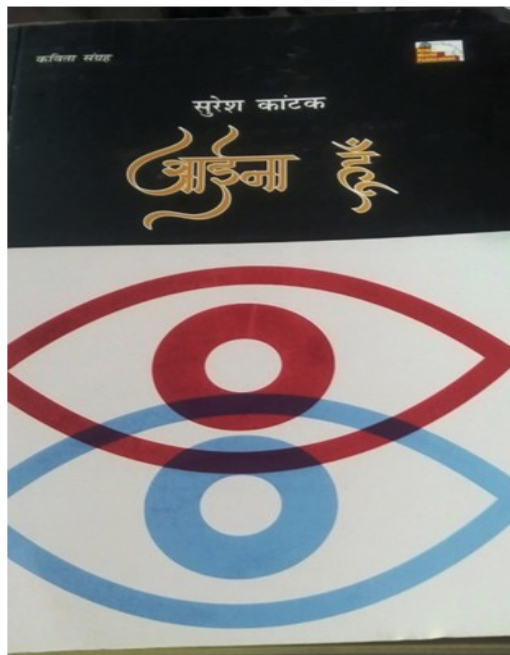
ऋतुराज की यह कविता हर उस कवि के चरित्र को सामने लाती है जो आज के समय और समाज में फैले झूठ, नफरत, हिंसा, हत्या, बलात्कार के नंगे खेल को देख, लोकतंत्र के लबादे ओढ़ाकर आम जन के अधिकारों की कटौती, धर्म का ढोल बजा, आँखों में सपनों को बो बोट के क्रय, बुलडोजरी आतंक कायम कर कानून को अंगूठा दिखाता देख चुप नहीं बैठता और अपनी कविता को आईना बना सामने रखता है जिसमें खुद को भी देखता और समाज एवं व्यवस्था को भी दिखाता है उसका सच्चा छवि। कवि सुरेश कांटक एक जगह खुद कहते हैं 'आईना हूँ'। देखें इस संकलन के माध्यम से कि उसमें कितनी सच्चाई है। सुरेश कांटक हिन्दी कथा साहित्य जगत का एक सुपरिचित नाम है जिनके हिन्दी - भोजपुरी के गद्य पुस्तकों के शीर्षक ही यथा - खंडित सपनों का नायक, सूरज उगने से पहले, अनावरण, किसान क्या करे, जननायक, नरमेध, रक्तिमतारा, हाथी के दाँत, अँजोरिया के पीछे, का ए बकुला आदि गवाह हैं कांटक के आईना होने का। हिन्दी हो या भोजपुरी जिसकी भाषा माटी के सुवास अपने में समेटे होता है, जो जमीन, खेत, किसान, बनिहार की बात करता है, जो लोक के वेदना को पढ़ना जानता है, जिसके अंदर एक छटपटाहट है सत्ता की व्यवस्था और बाजार का खेल को देख, जो जिया है ज़िंदगी को माटी से जुड़ और उसे ही पिरोया है शब्दों में - गद्य एवं पद्य के रूप में आईना बन बिना रंग - पोलिश के

शख्सियत का नाम है सुरेश कांटक। कांटक सरनेम उनके गाँव के नाम 'कांट' से जुड़ा भले हो पर लोक में बिखरे कांटों को पहचानने का इल्म है उनमें यह उनका साहित्य कहता है। उनकी पैनी नजर समाज में पल - बढ़ रहे नागफणी पर रहता है भले अपना रूप बदल आज वह सत्ता के ओट में या किसी बेताज बादशाह सेठ के वातानुकूलित घर या सुंदर बगीचे में छिपा हो। कांटक की कुटकी की पहुंच और पकड़ से बच पाना किसी भी समाज में पसरे कांट के लिए असंभव है जो उनके कांटक सरनेम को सार्थक करता है।

कथाकार कांटक की सद्य प्रकाशित प्रथम काव्य संकलन 'आईना हूँ' है। इस संकलन में कुल साठ कविताएं शामिल हैं, सभी कविताएं समय से कदमताल करते दिख रहे हैं। जिसे 'दास्तां - ए- आज' कहें तो गलत नहीं होगा।

कांटक खुद कहते हैं कि 'मैं जिस समाज या देश में रहता हूँ उससे प्राप्त क्रियाओं से प्रभावित होकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता हूँ। वे प्रतिक्रियाएं ही मेरी कविताएं हैं।' कवि एवं आलोचक कौशल किशोर ने कांटक के कविताओं के भाव और तेवर देख कहते हैं कि 'दुनिया के बदलने का भाव सुरेश कांटक की कविता के केंद्र में है। बदलना क्यों जरूरी है कविता में वस्तुपरक और तार्किक तरीके से

सामने आता है। इनकी कविताएं जागरण गीत की तरह हैं। इसलिए यह हमारे समय की जरूरी कविताएं हैं'। मैं उनके गद्य का प्रशंसक रहा हूँ। कुछ हद तक उनके व्यक्तिगत जीवन से भी परिचित रहा हूँ। इस संकलन से गुजरने पर महसूस किया कि उनके गद्य और जीवन उन्हें एक संभावना का साहित्यकार के रूप में सामने लाती है। कह सकता हूँ कविताओं को देख वे एक संभावना के कवि भी नजर आते हैं। उनके इस प्रथम काव्य संकलन के आधार पर उनकी वैचारिकी पर खूब बातें होनी चाहिए। मुझे इन कविताओं को पढ़ते हुए बहुत से इन्सानी, सामाजिक, लौकिक एवं



सामयिक बिन्दुओं पर एक मानवतावादी विचारक के रूप में प्रतीत हुए। वाम विचारधारा के कांटक वाम धारा में बहकर नहीं लोक और समय संताप को देख मानवीय दृष्टिकोण अपना अपनी कविता को रचा है। विचारधारा से अधिक महत्त्व मनुष्य जीवन का है, जो विचार का कारण और प्रयोजन है। विचार का जन्म भी मनुष्य जीवन में ही होता है और मनुष्य जीवन के लिए ही होता है। कांटक की कविताओं के केंद्र में मनुष्य है। जिसके - जिसके जीवन में दुख देखा, अनुभव किया नजदीक रहकर उसके - उसके दुख में सहभागिता के लिए, उन दुखियों को जगाने के लिए, उनके भीतर आस किरण को जगाये रखने के लिए दौड़ कर पहुंच जाते हैं। कांटक का संविधान और लोकतंत्र दूसरे के दुख के प्रति संवेदनशीलता ही है जिसका गवाह इस संकलन की कविताएं हैं। कवि स्त्री के बारे में- दुर्गावती, बसमतिया, मणिपुर घटना की वरसी पर, किसान के बारे में- खेती किसानी, मजदूर के बारे में- मई दिवस की पूर्व संध्या पर, बनिहारों मजूरों से, वर्ग संघर्ष पर - होलिका दहन ही में नहीं जहाँ दुख - अन्याय देखता है दौड़कर पहुंच जाता है। कांटक की यह संवेदनशीलता, उसके अंदर की बेचैनी का कारण है जो उन्हें चुप नहीं रहने देता, निश्चित रूप से यह एक अच्छे कवि का लक्षण है।

सुरेश कांटक की कविता की भाषा को देख यह बताया जा सकता है कि वे भोजपुरिया क्षेत्र से हैं। वे जिस परिवेश में जी रहे हैं उसकी सुवास भाषा और रचना में स्पष्ट नजर आ रही है। कुंवर की धरती अन्याय के खिलाफ चुप रहना नहीं जानती है। जनपदीय अभिव्यक्तियां और शब्द उनके कविता में इस तरह आई हैं, जैसे कविता में गंवई गंध गुलाब बन सुवासित हो रहा हो। भोजपुरी के शब्द या अभिव्यक्तियां हिन्दी के आटे में बेसन या गुड़ की तरह हैं जो कांटक के कविता की रोटी के लिए गूंथी हुई आटा हैं। दरअसल कांटक की कविताएं तो अंदर की अकुलाहट है, खिन्न है, प्रतीति है, अनुभूति है जो अंदर रह ही नहीं सकती। कवि ने संकलन में सामाजिक विद्रूपता, अंदर टीसता घाव, चुनौती लेने की उफनती मुद्रा जो सिर झुकाने के खिलाफ अपने हर कविता को जयघोष की तरह रखा है। जैसे कविता नहीं जागरण का एक सार्थक तरीका हो। रामविलास शर्मा ने जिस तरह निराला को अपनी जनता का कवि कहा था, जिस तरह आंचलिक संस्कृति के प्रतीक रेणु हम सबके हैं, संकलन के कविताएं विश्वास दिला रही हैं कि सुरेश कांटक आम जन के जमीनी कवि हैं जिनकी कविताओं में उनका परिवेश विद्यमान रहता है।

कवि के लोक में व्यष्टि का स्थान नहीं होता है। कहीं व्यैक्तिक दिखता भी है तो कविता की दरवाजा समष्टि की ओर खुलता है। कांटक का व्यक्ति उनके लोक से जुड़ा है जिसमें उपस्थित वंचित - पीड़ित जन को उनसे अलग नहीं किया जा सकता। दलितों की पीड़ा कवि कैसे महसूस करता है ' होलिका दहन ' में देखा जा सकता है -

नहीं कोई होलिका है/ लपटों के बीच/ काले कलूटे छटपटाते नंग धड़ंग बच्चे/ माल मवेशी धूँ धूँ कर जलते हैं/ मेरे गाँव में।

गाँव का दर्द कवि का दर्द है। कांटक का दुख उनके ' मेरा दुख ' कविता में देखा जा सकता है - झपटता है जब बाज/ भूखी अँतड़ियों पर/ तपता हूँ तवे की तरह/ तड़पते हैं जब/ गाजापट्टी के बच्चे, महिलाएं/ लथपथ लहू से/ मैं तड़पता हूँ/ बुलडोजरों से जब/ रौंदे जाते हैं जीवन भर/ के आशियाने/ मैं होता हूँ धाराशायी।

कवि ' सावधान ' कविता में सामूहिक हित में चेतावनी देते कह रहा है - सावधान/तोड़ फोड़ जारी है/ थैलियां/ ले निकला है/ बहुत बड़ा बैपारी है।

बाजारवाद की राजनीतिक पैठ में कुर्सी की खरीद फरोख्त तो आज आम है पर अंततः राजनीति के चाक में पीस रहा है आम आदमी। आम आदमी जो आज हर ओर पीस रहा उसे अपने हित में जगाने के लिए कवि आवाज देता है कविता ' बनिहारों मजूरों से ' में -

आओ! बिरादरी से मिलकर एक हो जाओ/ संकल्प लो अपनी फौलादी भुजाओं/ मेहनती जिस्म का/ सौगंध लेकर/ दिन दिन बढ़ते इस गहरे अंधेरे के बीज विनाश के लिए/ काटने को अपने चतुर्दिक बढ़ते जाल को/ ओ श्रमजीवी/ मनुजपुत्र साथी!

सामूहिक हित में कवि खेतों में, खलिहानों में, कारखानों में, खादानों में, कार्यालयों में बैठे शेषनागों को केंचुल बदलने, उठाने, खुद को पहचानने के लिए आवाज देता खड़ा है ' उठो शेषनाग ' में -

शेषनाग/ उठो शेषनाग/ कुलबुलाओ/ फन की दिशा बदलो शेषनाग/ तमाम छद्म साजिशों को समझो/मत रहो भुलावे में जन्म जन्मांतर के।

इसलिए कांटक की कविताएं उनके वैयक्तिक अनुभव का संसार होते हुए भी सामूहिक हित की आवाज है। इस संकलन के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि के लेखन का दायरा आम जन विशेषकर समाज के निचले और मध्य वर्ग के समस्याओं के चहुँओर केंद्रित रहता है पर वह समाज की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति पर विस्तार से बातें करता है। ' दुर्गावती ' में खेतिहर स्त्री के जीवन की सामाजिक क्रियाशीलता देखा जा सकता है-

दुर्गावती नाम है मेरा/ खेती किसानी काम है मेरा/ चूल्हा चाकी, बरतन बासन/से निबटी तो खेत पे आई/यह जीवन ही धाम है मेरा।

पाँच बीघे की/ खेती करती/रोपनी, सोहनी, कटनी करती/ अगल बगल वाले/किसान को चाचा, भइया, बाबू कहती।

कवि ' बसमतिया ' में पलायन के पारिवारिक पीड़ा से जोड़ उसके जीवन की व्यापक अनुभूति की तरफ ले जाता है-

बोली भइया/कुछ ना पूछो/सोच सोचकर समय बिताऊँ/कटैन रतिया/बालम रूठ गये कलकतिया। समय निगोड़ा ऐसा आया/ दूना दुख है/ सभी निरेखें मेरी छातियां/समझे ना कोई मेरी इजतिया।

तो ' मणिपुर घटना के वरसी पर ' उस शर्मशार करती घटना, जो लोकतंत्र में कलंक के रूप में अंकित हो गया पर कवि चुप नहीं रह पाता है -

शर्मशार थी दुनिया/तेरा रूप देखकर/कथनी करनी का अंतर/ तेरा निरेखकर/जिस तन से पैदा होते/उसको दिखलाते/छेड़छाड़ कर सरेआम/ नंगी दौड़ाते/बिलख रही रोती बेटी/ वह चांदपुर की/ माँ बहने वे भीख माँगती/ चांदपुर की।

कांटक की मनुष्यता, मानवीय दृष्टिकोण एवं संवेदनशीलता के मर्म को देखनी हो तो इस संकलन के कविता ' बाबूजी ' और ' माँ ने कहा था ' में देखी जा सकती है जो पारिवारिक ताना बुना में साम्प्रदायिक सौहार्द एवं आदमीयत का पाठ पढ़ाती है-

मगर मस्जिद की सीढ़ियों पर/ बैठे बाबूजी का/ दिखता एक अनोखा रूप/ मिलाद हो या तकरीर/ झुंका हुआ माथ/ देखा गाँव ने अहर्निश/नये नये टिफिन कैरियर में/ बनवा ताजा ताजा सुस्वाद रसोई/मौलवी साहब को कैरियर सहित देते उपहार/देखा सबने। (बाबूजी)
सींचना बेटे/ सूखे पौधों को सींचना/दिना प्यार मुरझाये फूलों को/ बनना आदमी/ बनाना आदमी। (माँ ने कहा था - १)

कहा था माँ ने/ सयाने हो रहे हो बेटे/ बहुत सयाने मत बनना/ मत चले जाना दूर/मुझसे दूर आदमीयत से। (माँ ने कहा था - 2)

गाँव में जन्मा कवि जो आज भी गाँव में ही रहता है जिसमें गाँव के प्रति एक ललक स्वाभाविक ढंग से समाई हुई है तब तो गाँव, खेत, खेती, किसान और किसानों उसकी कविताओं में रचता - बसता है, वह बनिहारों मजूरों के दर्द को लिखता है और उसकी रचनाओं की खूबसूरती वही है, वहीं उसे अन्य से अलग करती है और वही उन्हें एक विशेष पहचान देती है रचनाकारों के बीच। जिसे देख कहा जा सकता है कि कांटक की चिंतन की धरातल जमीन पर टिकी हुई है, वैचारिकी आम जन से जुड़ी हुई है। लेखन की जो प्रक्रिया है वो व्यष्टि से समष्टि की ओर जाती है। कहा जाता है कि साहित्य की सबसे बड़ी ताकत मरते हुए को बचाना है। डूबते हुए को किनारे पहुंचाना है। कांटक ने अपने कविताओं के माध्यम इसे ही अंजाम देने का प्रयास किया है। कांटक एक अनुभवी साहित्यकार हैं, उनके सामने एक त्रस्त दुनिया है जिसे देख कर जिस्म काँप जाता है। वह जानते हैं कि देश दुनिया को बदलने, ठीक कर पाने की कूबत नहीं है कलम में ना उनमें लेकिन जानते हैं कि कलम के माध्यम से परिवेश को उर्जास्वित किया जा सकता है और इसे ही किया है इस संकलन में।

कांटक के कवि व्यक्तित्व की उठान में ओजस्विता और स्वाभिमान की कवि का दर्शन होता है जो हमारे समाज में हो रहे अन्याय पर सवाल उठाता है। उससे संघर्ष का आवाज उठाता है अपने कृतित्व के माध्यम से, कविता के माध्यम से। इन कविताओं में इसे देखा जा सकता है -

कवि कांटक तुझे पुकार रहा/ आ वक्त तुझे ललकार रहा/ बढ़ रहीं बेड़ियां तेरी ओर/ तू काट, एकता बढ़ा जोर/ रण छोड़ न अब तू नहीं भाग/ गा नये सृजन के नये राग। (मई दिवस की पूर्व संध्या पर)

समय और समाज की धड़कनों को व्यक्त करने को अपने को आईना बना सामने रखते हुए खुद कहते हैं -

जो करोगे/ सामने दिखलाऊंगा/ ये मेरी गुस्ताखियां हैं माफ कर

कद बढ़ा लोगे/ करूंगा अर्चना/सोच फिर, न हकीकत के खिलाफ कर। (आईना हूँ)

कांटक के व्यंग्य उनके आईना स्वरूप का ही नमूना है जिसकी गहराई और विस्तार बतलाती है कवि के भीतर की छटपटाहट को, देश समाज के हालात को, सच्चाई बयां करने की ताकत को। देश और समाज के बेहाल हाल को देख कवि बोलता है -

आँखों में सँजोया विशाल भवन/ दिखने लगा भेड़ियों की माँद सा/ या यों कहूँ/मेरे ही गाँव के बैजूबाबू की चौपाल सा/ जहाँ निरीह भेड़ों की/चमड़ी, मांस और लहू के प्यासे/ खूंखार जीव/बहुमत के टीले पर गेंडूर मार/ करते हैं गुसगूं मंत्रणायें/इन्हें छलने को/ कोई टबदलकर बरसाने को कोड़े/ चवाने को मांस और अस्थियां। (भेड़ियों की माँद)

कवि ' मेरा हक ' में झूठ स्थापन और जुमले से चल रही व्यवस्था को आईना दिखाता है। पर देश समाज के तेजी से बदलते तस्वीर, झूठ - फरेब और बाजार पर टिकी लोकतंत्र कवि को हतोत्साहित नहीं कर पाता है। कवि विश्वास करता है लिसिडस के आशाभरी पंक्ति " Tomorrow to fresh woods and pastures new." में, शैली के कथन ' ओड टु वेस्ट विन्ड ' में शिशिर आया है तो क्या बसंत नहीं आयेगा, तब तो कहता है -

पर है मुमकिन यह भी कि जंगल जाग उठे/ साहब के सेहरे में गुँथे हर दाग दिखे/ छुपा आस्तिनी विषधर उन्हें ही डस जाये/भस्मासुर सिर पर हाथ रखे खुद जल जाये/तम की छाती को चीर नये कोंपल निकले/ हर हाथ में हो जलती मशाल पत्थर पिघले/ मुमकिन है यह भी मुमकिन है। (मुमकिन है)

कवि कांटक का मन आशाएं भरी आईना सा चमकता है अपने कविताओं में। तब तो कहता है ' आईना हूँ ' । कविता के अनेकों प्रतिमान में एक यह भी है कि क्या वह हमारी जिजीविषा को उद्दीप्त करता है? हम पाते हैं निराश भरे वातावरण में फंसी जिंदगी के समृद्धि के लिए चहुँओर घिरते तम में रोशनी का तलाश करते कवि को खड़ा पाते हैं। यही जिजीविषा है जो खुद से और व्यवस्था से भी प्रश्न करती है। निजी नहीं कवि सामूहिक मुक्ति का सपना देखता है अपनी कविताओं में जो असली सुराज का उद्देश्य होता है। कवि केवल सपना दिखाना नहीं उसे पूरा करने के लिए जगाने का भरपूर प्रयास करता है लोक के जिजीविषा को नहीं मरने देने के लिए। वेदना कविता को जन्म देती है लेकिन आज तक आदमी जितने स्वप्न देखे हैं,

उन सब स्वप्नों को कोई समेट रखा है तो वह कविता है। कविता जिंदगी को बयां करती हैं तो जिंदगी के सपनों को जिंदा रखने, पाने की और उसके टूट जाने पर जीने की ताकत देता है। कांटक की कविताएं कविता के इस धर्म को अपने भीतर जिंदा रखी हैं।

सुरेश कांटक अपने साहित्यिक अवदान और गुणधर्म के आधार साहित्य के मैदान के वैसे मजबूत रचनाकार हैं जिसके विषय में कुछ कहने - लिखने से पहले हजार बार सोचना पड़ता है। वे वैसे रचनाकार हैं जिन्होंने खेतों में अपनी साहित्य के बीज से गुलाब उगाया, माटी में 'गीता' के सार को पाया और साहित्य को ही कुरुक्षेत्र बना महाभारत का आह्वान किया। अंत में कविताओं से गुजरने के बाद कहूंगा कि कांटक की लेखनी सामाजिक पंगुता से जन्मी दुष्कृतियों पर भीषण प्रहार करती हैं। सामाजिक परिवेश के विकृत होते चरित्र को साहित्यिक धर्म के धूरी पर साधकर वे अपने लेखकीय दायित्व का बोध कराते हैं। निर्भीक हो सत्य का वकालत करते हैं। संकलन के रचनाओं को देख कांटक के संबंध में कहा जा सकता है जो किसी कवि ने कहा था अपने रचनाओं के बारे में -

शब्द में भरते समूची त्रासदी युग की/ व्यास का संत्रास बन कर जी रहे हैं हम।

सहज, सुघर भाषा में एक पठनीय काव्य संग्रह जो समकालीन समाज की आईना है। अंत में कांटक की कविता के संबंध में उनके शब्दों में -
धूप में अब मैं चलूंगा/रौशनी हर तम को दूंगा/ फिर कहूंगा धुंध जाले साफ कर
सोच मत कांटक/ हवायें क्या कहें/ आदमीयत को जगा अल्टाफ कर।

समीक्ष्य पुस्तक - आईना हूँ

विधा - काव्य

कवि - सुरेश कांटक

प्रकाशक - न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

पृष्ठ संख्या - 144

मूल्य - 250/ पेपर बैक में

डॉ मीरा सिंह "मीरा"

डुमराँव, जिला-बक्सर, बिहार



छिपे कहाँ हो प्रेम

झुलस रहा देखो जग उपवन
छिपे कहाँ हो प्रेम बताओ।
हाहाकार मचा है जग में
सुनो प्रेम वापस आ जाओ॥

धधक रही है नफरत ज्वाला
लोग पी रहे गम का हाला।
अमन चैन नजर नहीं आता
मुद्दा कोई रोज उछाला॥
राह देखती सारी दुनिया
प्रेम छिपे किस लोक बताओ---

क्यों मानव है मानव दुश्मन
अपनों से अपनों का अनबन।
रखें आस्तीन में क्यों खंजर
बिना बात ही पल-पल ठनगन॥
प्रेम बिना घर आँगन सूना
भटके जन को राह दिखाओ॥

बहन बेटियाँ विवश लाचार
अस्मत् होती नित तार-तार।
देख मनुज की यह नादानी
मानवता है अब शर्मशार॥
मानवता की लाज बचाओ
सुनो प्रेम वापस आ जाओ

रहीम



सावन आवन कहिगे, स्याम सुजान।
अजहुँ न आये सजनी, तरफत प्रान॥

मानवी सेवा संस्था : राष्ट्र और राष्ट्र जन की सेवा में समर्पित

274/x ,शक्तिनगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

<http://www.manvipatrika.co.in>

(पत्रिका यहाँ से भी पढ़ सकते है)